कुल देवी-देवताओं तथा भैरव के पवित्र स्थल

भारतीय हिंदू समाज में पूर्वजों की पूजा-अर्चना एक निरंतर परम्परा रही है। दशोरा ब्राह्मण समाज भी परंपराओं का अनुसरण करते हुए किसी भी धार्मिक व शुभ कार्य का शुभारंभ अपने पूर्वजों तथा देवी-देवताओं का आशीर्वाद लेकर करते हैं। कुल देवता, कुलमाता, कुल देवी, सती माता तथा भैरव अलौकिक शक्ति के पूंज माने जाते हैं और इनके आशीर्वाद से जीवन सफल होता है, ऐसी रीत मानी जाती है। मध्यप्रदेश व राजस्थान के शहरों में दशोरा समाज के अनेक पवित्र स्थल हैं, जहां दशोरा परिवार पूजा-अर्चना करने से कभी नहीं चूकते हैं।

दशोरा ब्राह्मण, नागर तथा प्रशनोरा ब्राह्मण जाति से भिन्न हैं, यह विषय उन रूढ़िवादी व कर्मकांडी वर्ग के लिए वाद-विवाद का हो सकता है, जो जाति भेद, कुविचारों से ग्रसित होकर समाज में स्वयं को श्रेष्ठतम साबित करना चाहते हैं। आज केइस आधुनिक युग में जहां सर्वब्राह्मण संगठनों की रचना तथा मुख्य जाति के स्रोत में उपजातियों के संगम की बयार बह रही है, ऐसे में दशोरा ब्राह्मण नागर नहीं विषयक बेमानी नहीं हो जाता? अंगुलियां जब बंधती हैं तब मुट्ठी बनती है अर्थात सभी नागर जब एक सूत्र में बंधेंगे तब शक्ति व ऊर्जा का संचार नागरों में स्वचलित होगा। नागर ब्राह्मण जाति की सभी उपजातियां जैसे मेवाड़ नागर, बड़नगरा, विशनगरा, प्रश्नोत्तरा, कृष्णोरा, सांचोरा, प्रश्नोरा, दशोरा आदि को गर्व होना चाहिए कि वे एक ही वटवृक्ष की शाखाएं हैं जो शताब्दियों से नहीं स्कंद पुराण की रचना (नागर खण्ड) के वक्त से विराट बना हुआ है।

जातियों के विभाजन की प्रक्रिया आदिकाल से चली आ रही है तथा अनगिनत कारणों से हुए स्थानांतरणों के चलते कई उपजातियां मूल जाति से अलग होकर नए परिवेश की आबो-हवा, संस्कृति, वेशभूषा, भाषा, आचार-विचार, इत्यादि को अपनाती रही हैं और निसंदेह कालांतर में उन उपजातियों का उदय एक नए नाम से जाना जाने लगा है। इसका अर्थ यह नहीं कि वह उपजाति अपने मूल जाति से भिन्न हो गई हैं। उदाहरण के लिए आज प्रत्येक समाज की संतानें विदेश जाकर बस रही हैं। जिनमें से कुछ प्रतिशत वहीं विवाह कर बस जाते हैं उनकी आने वाली पीढ़ी वहीं की होकर रह जाती हैं। आने वाले समय में पीढ़ी दर पीढ़ी यदि वहीं पर स्थापित होती हैं तो भी उनकी मूल जाति वही कहलाएगी जहां से उनका विदेश गमन हुआ है।

कहना उचित होगा कि नागरों को अपनी जाति के विषय में जो भी जानकारी मिली है, वह स्कंद पुराण के नागर खण्ड पर ही आधारित हैं। इसके लिए युगांतर में हुए परिवर्तनों व जाति विभाजनों के कई आधार रहे होंगे।

दशोरा ब्राह्मणों का सामाजिक संगठन तकरीबन 12वीं-13वीं शताब्दी के दौरान अस्तित्व में आया ऐसा माना जाता है। दशोरा हिन्दू दर्शन शास्त्र, धार्मिक, सांस्कृतिक, संस्कार के प्रकाण्ड ज्ञाता रहे हैं। सर्वमान्य तथ्य है कि दशोरा के पूर्वज नागर ब्राह्मण ही थे। नागर ब्राह्मण गुजरात प्रांत के जूनागढ़, समीप विशनगर में 10वीं शताब्दी में रहते-बसते थे और राज दरबार में सलाहकार के रूप में पदस्थ रहते थे। 532 ई में मध्यप्रदेश के मंदसौर के राजा यशोवर्मन ने प्रश्नोरा ब्राह्मणों को यज्ञ कराने के लिए आमंत्रित किया। राजा ने कुछ विद्वान पंडितों को मंदसौर में ही बस जाने की सलाह दी। प्रश्नोरा ब्राह्मण मंदसौर में बस गये व आगामी 800 वर्षों तक वहां के राजाओं के सलाहकार बने रहे। मंदसौर में सन् 1305 ई तक दशोरा ब्राह्मणों की पहचान प्रश्नोरा नागर जाति के रूप में थी।

दशोरा ब्राह्मण मध्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों-मंदसौर, धार, इंदौर, उज्जैन, खंडवा व खरगोन में बसे हैं तथा भगवान हाटकेश्वर के उपासक हैं। हाटकेश्वर महादेव का मंदिर बड़नगर, गुजरात में बना हुआ है तथा वर्तमान में उदयपुर में भी हाटकेश्वर मंदिर का निर्माण किया गया है।

तर्क शास्त्रियों तथा इतिहास शोधकर्ता भले ही जाति निर्माण व विच्छेद आदि पर तर्कसंगत तथ्य पेश करते हैं, परंतु कहना उचित होगा कि सभी नागर ब्राह्मण एक हैं। उपजातियां भले ही एक-दूसरों पर आक्षेप लगाती रहें, परंतु सच तो यह है कि वे सभी एक ही नागर की बूंदें हैं। दशोरा, प्रश्नोरा की जननी एक ही है वह है नागर जाति। आइए, जातिगत मानसिकता को परे कर नागर सूत्र के मोती बनने का संकल्प करें। हमें गर्व है कि हम नागर हैं।

▸ अखिलेश सू. जोशी

दशोरा ब्राह्मण समाज

प्रस्तुत है दशोरा ब्राह्मण समाज के पवित्र स्थलों की चित्रावली

महासती माता की पवित्र-मूर्तियां
(मंदसौर)
माना जाता है कि मंदसौर स्थित महासती माता की पवित्र मूर्तियां-1305 ईसवीं (1362 वि.सं.) में इसी स्थानपर हुई सती का स्मरण कराती हैं।

सती माता की पवित्र मूर्तियां

(रामपुरा)
रामपुरा में मिश्रा परिवार की कुल देवी स्थापित हैं।
कौशल्या, उपाध्याय, भट्ट परिवार की कुल देवी व भैरव
(नवाली तथा भानपुरा)
नवाली व भानपुरा में कौशल्या, उपाध्याय, भट्ट परिवारों की कुलदेवी तथा भैरव विराजमान हैं।
(भैरव, राजस्थान)
मिश्रा परिवार के भैरव चेचट, राजस्थान में पूजे जाते हैं।

हाटकेश्वर जयंती पर पूजन-अभिषेक

सेवानिवृत्त एवं विशिष्टजनों का सम्मान

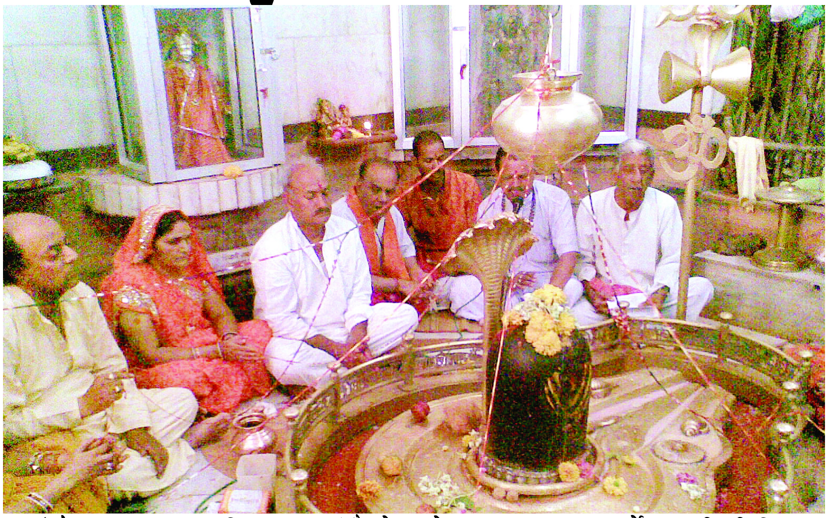

इंदौर। अ.भा. नागर परिषद शाखा इंदौर के तत्वावधान में खजराना स्थित समाज के प्राचीन हाटकेश्वर मंदिरपर हाटकेश्वर जयंती मनाई गई, जिसके अंतर्गत अभिषेक, पूजन, साधारण सभा एंव सेवानिवृत्त और विशिष्ट उपलब्धी प्राप्त करने वाले समाजजनों का सम्मान किया गया।

परिषद अध्यक्ष श्री प्रवीण त्रिवेदी, सचिव केदार रावल ने यह जानकारी देते हुए बताया कि प्रातःकाल में जहां सूरज नगर स्थित श्रीराम मंदिर में भगवान हाटकेश्वर का शृंगार, पूजन, अभिषेक किया गया, वहीं अपरान्ह 4 बजे से खजराना में प्राचीन हाटकेश्वर मंदिर में शृंगार, पूजन, अभिषेक एवं महाआरती में बड़ी मात्रा में समाजजन एकत्र होकर आनंदित हुए।

तत्पश्चात पाटीदार धर्मशाला खजराना में शाम 7 बजे समाज की साधारण सभा हुई, जिसमें मंचासीन थे सर्वश्री प्रवीण त्रिवेदी, केदार रावल एवं मुख्य अतिथि वंदन मेहता (न्यायाधीश) थीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता आशीष त्रिवेदी, महिला मंडल सचिव श्रीमती मीना त्रिवेदी, श्रीमती निरुपमा नागर, श्रीमती संगीता नागर। अतिथियों का स्वागत सर्वश्री ब्रजेन्द्र नागर, नीलेश नागर, हर्ष मेहता, विश्वनाथ व्यास ने किया तथा समारोह में सर्वश्री विनोद नागर (विशिष्ट उपलब्धि), दिलीप मेहता (सेवानिवृत्ति), प्रदीप मेहता (सेवानिवृत्ति), संतोष नागर (सेवानिवृत्ति), धर्मेन्द्र भट्ट (समाजसेवा) का सम्मान किया गया। इस अवसर पर शिवांजलि पारमार्थिक ट्रस्ट के लिए दान की घोषणा सर्वश्री कैलाश गुरुजी 11000, श्री देवेन्द्र मेहता 10000, श्री समीर मेहता 500रु., दस वर्षों तक श्रीमती निरुपमा नागर 1100, श्रीमती अरुणा ब्रज गोपाल मेहता 11000, उमाशंकरजी नागर 2500, हरेकृष्ण व्यास 5001 रु. की। सचिव केदार रावल ने इस अवसर पर बताया कि समाज के सदस्यों से सन् 2000 में दस वर्षो के लिए सदस्यता शुल्क प्राप्त किया था।उसकी अवधि अब पूर्ण हो चुकी है। अतः पुनः दस वर्ष की सदस्यता के लिए प्रति व्यक्ति 251 रु. तथा प्रति दम्पति से 502 रुपए प्राप्त किए जाना हैं, अतः सभी समाजबंधु उपरोक्त राशि जमा कर आगामी दस वर्ष के लिए समाज की सदस्यता का नवीनीकरण करवा लें। समारोह की अध्यक्षता राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री आशीष त्रिवेदी ने की। संचालन श्री विकास दवे ने किया तथा आभार कैलाश नागर गुरुजी ने व्यक्त किया।

रतलाम में ऐतिहासिक चल समारोह

रतलाम। हाटकेश्वर जयंती के अवसर पर म.प्र. ब्राह्मण परिषद की रतलाम शाखा के तत्वावधान में नगर में एक विशाल चल समारोह निकाला गया, जिसमें भगवान हाटकेश्वर को एक सजी-धजी बग्घी में विराजित किया गया था। शोभायात्रा में नगर समाज के पुरुषों ने सफेद वस्त्र एवं महिलाओं ने केसरिया साड़ी पहनकर समारोह को नया आयाम प्रदान किया।

उत्साह एवं धार्मिक आयोजनों के साथ मनाई गई भगवान हाटकेश्वर की जयंती में प्रातः मठ मंदिर में अभिषेक पूजन किया गया तथा यहां सम्मिलित हुए समस्त नागर जन बैंडबाजों एवं बग्घी में विराजित भगवान हाटकेश्वर की मूर्ति के साथ-साथ समारोह के रूप में निकले जो कालेज रोड, नाहरपुरा, डालू मोदी बाजार, दौलतगंज जैसे प्रमुख मार्गों से होता हुआ नागरवास स्थित नागर धर्मशाला पहुंचा। मार्ग में महिलाओं ने गरबा कर कुलाधिदेवी की आराधना की। नागर धर्मशाला स्थित हाटकेश्वर मंदिर पर अभिषेक पूजन एवं महाआरती का आयोजन हुआ। उत्सवी माहौल में सम्पन्न समस्त धार्मिक आयोजन में रतलाम नागर समाज के सदस्यों ने बड़ी संख्या में सम्मिलित होकर एकता एवं उत्साह का परिचय दिया।

उल्लेखनीय है कि हाटकेश्वर जयंती पर्व पर रतलाम में पहली बार चल समारोह निकालकर नवनिर्वाचित नागर परिषद रतलाम ने इतिहास बना दिया। आयोजन में परिषद अध्यक्ष संजय मेहता सहित सर्वश्री रविशंकर दवे, हेमकांत दवे, रामचंद्र रावल, ओम त्रिवेदी, रविशंकर नागर, विभाष मेहता, नवनीत मेहता, धर्मेन्द्र नागर, संजय दवे, आर.सी. भट्ट, सुशील नागर, सतीश नागर, विष्णुदत्त नागर, रामेश्वर मेहता, सुश्री मंगलादवे, श्रीमती अमिता मेहता, श्रीमती पुष्पा मेहता, श्रीमती प्रमिला त्रिवेदी, श्रीमती सुशीला मेहता, अलका मेहता, अनिता मेहता, ज्योति मेहता, रानी दवे, भावना दवे, कल्पना मेहता प्रज्ञा दीक्षित,कुमुद भट्ट, सुमन नागर, भगवती भट्ट, हर्षा भट्ट, शार्मिला भट्ट, ऋतु नागर, स्नेहलता नागर, मिनाश्री नागर, रेखा नागर सहित बड़ी संख्या में नागर जन सम्मिलित हुए। इस अवसर पर नागर महिला मंडल के धर्मशाला में चुनाव हुए, जिसमें सुश्री मंगला दवे को सर्वानुमति से अध्यक्ष चुना गया। कार्यक्रम के अंत में आभार श्री नवनीत मेहता ने व्यक्त किया।

सारंगपुर में भी मनी हाटकेश्वर जयंती

सारंगपुर। हाटकेश्वर जयंती पर भगवान हाटकेश्वर का अभिषेक पूजन कर महाआरती श्री राजेन्द्रजी नागर के निवास पर की गई, जिसमें समाज के बंधुजन उपस्थित हुए। महाप्रसादी में स्वजनों ने सर्वश्री मोहन नागर, भंडावद से पं. यदुनंदन नागर, राजेन्द्र नागर, संजय नागर, ओम नागर, रमेशचंद्र जोशी, पं. दुर्गाशंकर जोशी आदि उपस्थित थे।

भव्य चल समारोह, साधारण सभा सम्मान समारोह का आयोजन

उज्जैन। म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद, नागर युवक परिषद, नागर महिला मंडल एवं हाटकेश्वर देवालय न्यास बम्बाखाना व हरसिद्धि उज्जैन के संयुक्त तत्वावधान में नागर ब्राह्मण समाज उज्जैन द्वारा अपने ईष्टदेव भगवान हाटकेश्वर महादेव की जयंती दिनांक 29 मार्च 2010 को सम्पूर्ण उत्साह एवं श्रद्धा के साथ मनाई गई।

विस्तृत जानकारी देते हुए नागर परिषद उज्जैन के अध्यक्ष श्री योगेन्द्र त्रिवेदी, महासचिव लव मेहता, युवक परिषद के प्रादेशिक अध्यक्ष श्री हेमंत व्यास, उज्जैन, युवक परिषद के अध्यक्ष श्री मनीष मेहता व महिला मंडल की अध्यक्ष डॉ.अरुणा व्यास, न्यास के अध्यक्ष द्वय डॉ. जी.के. नागर एवं पं. रामप्रसाद रावल ने संयुक्त रूप से बताया कि उज्जैन स्थित तीनों धर्मशाला के देवालयों पर क्रमशः हरसिद्धी पर श्री सुरेन्द्र मेहता सुमन बम्बाखाना पर डॉ. जी.के. नागर व उर्दुपुरा में श्री योगेन्द्र त्रिवेदी व श्रीमती उषा मेहता ने सपत्निक ईष्ट देव हाटकेश्वर महादेव का विधि-विधान से अभिषेक पूजन आचार्य पं. कैलाश शुक्ल के आचार्यत्व में किया।

चल समारोह

संध्या 5.30 बजे उर्दुपुरा स्थित धर्मशाला से एक विशाल चल समारोह प्रारंभ हुआ, जिसमें बैंड-बाजों, घोड़े, ऊंट, बग्घी के साथ भगवान हाटकेश्वर पालकी में विराजित होकर शहर भ्रमण पर निकले इस दौरान समाज के वरिष्ठ व युवाजन सफेद कुर्ता पजामा व लाल दुपट्टा डाले व महिलाएं केशरिया साड़ी पहने हजारों की संख्या में भजन करते चल रहे थे।

साधारण सभा

तत्पश्चात संध्या 7 बजे समाज की वार्षिक साधारण सभा में उज्जैन परिषद अध्यक्ष श्री योगेन्द्र त्रिवेदी, न्यास अध्यक्ष डॉ. जी.के. नागर, युवक मंडल अध्यक्ष मनीष मेहता, महिला मंडल अध्यक्ष डॉ. अरुणा व्यास द्वारा विगत वर्ष किए गए कार्यक्रमों की जानकारी के साथ आगामी वर्षों के कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर समाज के श्री महेन्द्र नागर, सुश्री आस्था राजेन्द्र नागर, श्री कृष्णकांत शुक्ला के साथ-साथ उर्दुपुरा धर्मशाला के समस्त न्यासियों द्वारा अपने व्यय से समाजके कार्यक्रमों हेतु लगभग 50 कुर्सियां दान में देने की घोषणा की।

सम्मान समारोह

साधारण सभा के पश्चात रात्रि 8 बजे से समाज में अपना उल्लेखनीय योगदान देने वाले वरिष्ठजनों व विशेष उपलब्धी के साथ-साथ आदर्श कार्यों के लिए तीन श्रेणियों में सम्मान समारोह का गरिमामय एवं भावभीना आयोजन उज्जैन नगर पालिक निगम के आयुक्त माननीय श्री चंद्रमौली शुक्ला के मुख्य आतिथ्य में श्री महाकालेश्वर मंदिर समिति के प्रशासक पं. शुभकरण शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात अतिथियों का पुष्पहारों से स्वागत श्री योगेन्द्र त्रिवेदी, डॉ जी.के. नागर, डॉ. अरुणा व्यास, श्री हेमंत त्रिवेदी, श्री हेमंत व्यास, श्री मनीष मेहता, श्री महेश नागर आदि ने किया।

वरिष्ठ सम्माननीय व्यक्ति

स्वागत पश्चात अतिथियों द्वारा समाज के वरिष्ठ सर्वश्री शिवनारायण नागर, देन्दलावाला, डॉ. रमाकांत नागर, श्री अभिमन्यु त्रिवेदी, श्री विजय पोराणिक, श्रीमती बिरजुबाई शर्मा (102 वर्ष) श्रीमती कांताबाई व्यास एवं सुश्री शीलाबेन व्यास का समाज में दिये गये उल्लेखनीय योगदान पर शाल-श्रीफल व सम्मान-पत्र भेंटकर अभिनंदन किया गया।

विशेष उपलब्धी पर सम्मानित व्यक्ति

विशेष उपलब्धी पर म.प्र. के राज्यपाल से रुपए 21000 व सम्मान पत्र पाने वाले प्रसिद्ध अर्थशास्त्री व शिक्षाविद डॉ. रामरतन शर्मा एवं नागदा सर्व ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष वरिष्ठ समाजसेवी जिन्होंने अपने युवा पुत्र श्री कपील मेहता के आकस्मिक निधन पर अपनी बहु का जीवनसंवारने के लिए अन्यत्र विवाह कर स्वयं कन्यादान कर समाज में जो आदर्श स्थापित किया इस हेतु पं. विजय प्रकाश मेहता को सम्मानित किया गया।

उल्लेखनीय कार्यों पर स्व. कपील मेहता स्मृति सम्मान

सम्मान पाने के लिए उम्र की कोई सीमा नहीं होती। आवश्यकता इस बात की है कि हम वर्तमान के इस व्यस्ततम दौर में समाज, शहर, प्रदेश व राष्ट्र के लिए क्या सकारात्मक योगदान दे रहे हैं। इसी क्रम में अपनी पुज्य माताजी स्व. श्रीमती प्रभादेवी शर्मा के कुशल मार्गदर्शन व संस्कारों को निरंतर जारी रखने में प्रयासरत इंदौर नागर समाज के युवा व मासिक पत्रिका जय हाटकेश वाणी के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाने वाले प्रतिभावान श्री दीपक शर्मा एवं उनकी पत्नी श्रीमती संगीता शर्मा को सम्मानित किया गया।

साथ ही इंदौर के युवा समाजसेवी खजराना गणपति के आराधक पं. अशोक भट्ट व नागर ब्राह्मण समाज का राजनीति क्षेत्र में प्रतिनिधित्व दिलवाने वाले बेरछा निवासी जो शाजापुर जनपद पंचायत के उपाध्यक्ष पद पर भारी मतों से विजयी हुए हैं, श्री शलभ शर्मा को भी स्वर्गीय कपिल मेहता स्मृति सम्मान प्रदान किया जाकर शाल-श्रीफल व मंगल तिलकलगाकर सम्मानित किया।

यादगार क्षण

सम्मान समारोह का यह गरिमामयी क्षण कब और यादगार बन गया जब कार्यक्रम संचालन करते हुए लव मेहता ने बताया कि आज हम वरिष्ठजनों में जहां मातृशक्ति के रूप में 102 वर्षीय श्रीमती बिरजुबाई शर्मा का सम्मान कर रहे हैं, वहीं विशेष उपलब्धी पर उनके पुत्र डॉ. रामरतनजी शर्मा का भी सम्मान कर रहे हैं।

आदर्शदान व मंगल कलश का वितरण

इस अवसर पर सम्मानित जय हाटकेशवाणी के युवा संचालक श्री दीपक शर्मा इंदौर ने अपनी पुज्यमाताजी स्व. श्रीमती प्रभादेवी शर्मा की स्मृति को अक्षुणय बनाये रखने की दृष्टि से समाजकी उर्दुपुरा धर्मशाला हेतु रुपये 11000 भेंटकरने की घोषणा कर आदर्श सहयोग प्रदान किया। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन लव मेहता ने किया एवं आभार समाज के वरिष्ठ सदस्य डॉ. दिलीप नागर ने माना। कार्यक्रम का गरिमामय समापन भोजन प्रसादी रूप सहभोज के साथ साआनंद सम्पन्न हुआ।

मुंबई में हाटकेश्वर पाटोत्सव

रविवार 28-3-2010 को अंधेरी (प.) स्थित लाराम सेंटर के परिसर में नागर सांस्कृतिक संस्था मुंबई के सदस्यों ने हाटकेश्वर पाटोत्सव का आयोजन किया। हाटकेश्वर बाबा की पूजा, अर्चना व स्तुति के बाद 4 वर्ष के बालकों से 15 वर्ष के किशोरों तक ने, श्लोक पाठ किए। इसके उपरांत वाद-विवाद प्रतियोगिता हुई, जिसका विषय था - सजातीय विवाह या अंतर्जातीय विवाह।

हाटकेश्वर जयंती पर दिल्ली की नागर निर्देशिका का विमोचन

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के नागरजनों ने हाटकेश्वर जयंती के नागरजनों ने हाटकेश्वर जयंती के अवसर पर ईष्टदेव भगवान हाटकेश्वर के पूजन अभिषेक के साथ ही नागर निर्देशिका का विमोचन किया, सांस्कृतिक आयोजन हुए तथा प्रतिभाशाली बच्चों को सम्मानित किया गया। श्री वीर विनोद नागर ने उपरोक्त जानकारी देते हुए बताया कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के नागरजनों के नाम-पते, फोन, मोबाइल नंबर की नई डायरेक्टरी का विमोचन किया। समाजके प्रतिभाशाली विद्यार्थी सुमेद प्रशांत व्यास 80प्रतिशत, कु. रशिका संजय नागर को 94.4 प्रतिशत नंबर तथा सभी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त करने के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सांस्कृतिक आयोजन हुए तथा भोजन-प्रसादी के पश्चात आयोजन का समापन हुआ।

माकडोन में हाटकेश्वर जयन्ती का आयोजन

माकडोन । नागर ब्राह्मण समाज ने आराध्य देव भगवान हाटकेश्वर की जयंती श्रीराम मन्दिर में हर्ष एवं उल्लास से मनाई। प्रारम्भ में भगवान हाटकेश्वर का अभिशेक जगदीश रावल द्वारा किया गया.पश्चात सामूहिक आरती की गई । नागर युवा समिति के तत्वावधान में माकडोन, डेलची, कडोदिया, सरली के नागर समाज ने संयुक्त रुप से भगवान हाटकेश्वर जयंती का प्रथम आयोजन माकडोन में किया। श्री रामप्रसादजी शर्मा की अध्यक्षता में समाज के वरिष्ठ श्री श्रीवल्लभ शर्मा का सम्मान श्रीफल एवं धार्मिक पुस्तक भेंट से किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में डा. सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने जय महाकाल के भजन साथ भगवान हाटकेश्वर का नागर समाज के लिए महत्व पर व्याख्यान दिया. श्री रमेशचन्द्र रावल ने गुरूदेव की महिमा का गान किया. श्रीवल्लभ शर्मा ने नरसिंह मेहता व नागर समाज पर विचार व्यक्त किये; कार्यक्रम को डॉ. मनोहर शर्मा, मांगीलालजी शर्मा ने भी सम्बोधित किया । इस अवसर पर स्नेहभोज का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन महेन्द्र कुमार शर्मा एवं आभार राकेश रावल ने किया ।

इंदौर के समाचार

चैत्र नवरात्रि पर भजनों का आनंद लिया

इंदौर। नवरात्रि के दिनों में अतिरिक्त कामकाज घरों में बढ़ जाता है। व्यस्तता के कारण भजन-स्मरण का समय भी नहीं मिल पाता। साफ-सफाई, विधि-विधान, फलाहार, सजावट, नवमी पूजन की तैयारी की व्यस्तताओं के बीच महिलाएं घंटा-दो घंटा बैठकर अपनी भक्ति को संगीत के माध्यम से व्यक्त करें, इसी उद्देश्य को लेकर 20 मार्च शनिवार को भजन का कार्यक्रम श्रीमती शारदा मंडलोई के निवास पर रखा गया। जो बहुत संतोषदायक एवं आनंदप्रद रहा। निमाड़ी, मालवी, लोकगीतों, गणगौर गीत, नृत्य व शास्त्रीय संगीत, सांई भजन, चेटीचंड भजनों का इसमें समावेश किया गया।

श्रीमती शारदा मंडलोई, इंदौर ☎ 2556266

नेत्र शिविर में अन्य राज्यों से भी रोगी आए

इंदौर। राऊ में डॉ. प्रतापसिंह हार्डिया एडवांस्ड आई सर्जरी एवं रिसर्च सेंटर में 17 मार्च को श्री शिवप्रसाद शर्मा एवं श्रीमती प्रभादेवी शर्मा की स्मृति में आयोजित निःशुल्क नेत्र शिविर में राऊ की ही श्रीमती शांताबाई नागर का परीक्षण एवं आपरेशन हुआ। श्रीमती सीमा नागर भोपाल, श्री प्रेमशंकर झा मूंदी एवं श्रीमती ज्योति नागर का भी परीक्षण एवं उपचार किया गया। डॉ. हार्डिया के चिकित्सालय में वर्ष में दो बार निःशुल्क शिविर 10 अगस्त एवं 17 मई को आयोजित किए जाते हैं। इच्छुक समाजजन निःशुल्क चिकित्सा हेतु सम्पर्क कर सकते हैं।

नागर समाज भी सम्मिलित हुआ महापाठ में

इंदौर। अ.भा. नागर परिषद के आह्वान पर अनेकानेक नागरजन स्थानीय गीताभवन में एकत्रित हुए तथा पं. विजयशंकर मेहता के श्री हनुमान चारित पर आधारित महापाठ का आनंद लिया। सचिव श्री केदार रावल ने सभी समाजबंधुओं को मोबाइल पर मैसेज देकर इस महाकार्य के लिए निमंत्रित किया। अध्यक्ष श्री प्रवीण त्रिवेदी सहित बड़ी संख्या में सदस्यों ने रामनवमी के दिन यादगार पल को अपने जेहन में कैद किया। श्रीमती शारदा मंडलोई ने बताया कि उन्होंने परिवार सहित घरपर ही 7 से 8 बजे तक महापाठ व प्रवचन का आनंद अनुभूति के क्षण 80 से 8 वर्ष तक के सभी सदस्यों ने तल्लीनता बनाए रखी। अपनी श्वांस में रामदूत को समाकर रखना है, शक्ति का स्त्रोत साथ रखना है। यह प्रेरणा प्राप्त की। जीवन में ऐसा अवसर सौभाग्यशाली है। हमारे हनुमान हमारे हनुमान. हमारे हनुमान।

लघुकथाओं का संग्रह 'ऋचाएं'

इंदौर। पिछले सप्ताह इंदौर लेखिका संघ के तत्वावधान में सदस्य लेखिकाओं की लघुकथा संग्रह 'ऋचाएं' का प्रकाशन एवं विमोचन हुआ। इंदौर लेखिका संघ की मानद सलाहकार एवं पूर्व उपाध्यक्ष श्रीमती शारदा मंडलोई ने सभी के सहयोग के प्रति एवं लगभग 40 लेखिकाओं की लघुकथा के प्रकाशन के लिए उन्हें बधाई दी। लघुकथा विशेषज्ञ डॉ. सतीश दुबे ने प्रकाशन के माध्यम से आशीर्वचन कहे तथा अधिक सुदृढ़ लेखन के लिए शुभकामनाएं व्यक्त की। लघु कथा संकलन ऋचाएं में श्रीमती शारदा मंडलोई एवं श्रीमती उर्मिला मेहता की दो-दो लघुकथाएं सम्मिलित की गई हैं। ऋचाएं पढ़ने के इच्छुकजन सम्पर्क करें तथा इस प्रयास पर अपनी प्रतिक्रिया अवश्य व्यक्त करें।

श्रीमती मंगला रामचंद्रन
☎ 0731-2558643
श्रीमती प्रियबाला मेहता
☎ 0731-4004791

उर्दू धर्मशाला में भगवान गणेश और रिद्धि-सिद्धि की प्राण प्रतिष्ठा

उज्जैन। विगतदिवस नागर ब्राह्मण धर्मशाला उर्दपुरा स्थित हाटकेश्वर मंदिर पर भगवान श्रीगणेशजी एवं रिद्धि -सिद्धि की एक गरिमामय विधिवत प्राण प्रतिष्ठा एवं मूर्ति की स्थापना सम्पन्न हुई। प्राण प्रतिष्ठा पं. कैलाश शुक्ल द्वारा की गई। इस गरिमामय समारोह में श्री मनुभाई मेहता द्वारा अपने काका स्व. गेंदालालजी मेहता एवं धर्मपत्नी की स्मृति में प्रतिमाएं प्रदान की गई । इस शुभ अवसर पर समाज की तीन धर्म प्राण महिलाओं में श्रीमती चंद्रकांता शुक्ला, श्रीमती वस्तला नागर, श्रीमती वसुंधरा व्यास द्वारा प्रति एकादशी पर रामायण पाठ में एकत्रित धनराशि एक हजार छह सौ रुपए प्रदान की। श्री योगेन्द्र त्रिवेदी एवं श्रीमती अरुणा व्यास, श्री हेमंत त्रिवेदी द्वारा सहयोग राशि प्रदान की गई। उक्त समारोह के अंत में ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. जी.के. नागर द्वारा भगवान हाटकेश्वर का पूजन अभिषेक एवं ब्रह्मभोज किया गया। इस शुभ अवसर पर समाज के ट्रस्टी पदाधिकारी उपस्थित थे।

नागर परिवार का अनुकरणीय कदम

उज्जैन पिछले दिनों श्री किशोरीलालजी मेहता की धर्मपत्नी श्रीमती चंद्रकांताबाई के देहावसान के पश्चात उनके तीनों पुत्रों ने मृत्युभोज नहीं करते हुए उर्दूपुरा स्थित नागर धर्मशाला में एक वाटर कूलर लगाने की घोषणा की है। साथही 1100 रु. राशि प्रदान की गई। परिवार के इस कदम का समाज बंधुओं ने स्वागत किया है।

वुमन्स कार रैली में नागर प्रतिभागियों ने भी हिस्सा लिया

इंदौर। संकल्प, आत्मविश्वास, दृढ़ता हो तो कुछ नया साहसिक कर गुजरने की इच्छा प्रबल हो जातीहै, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अंतर्गत भास्कर एवं सिल्वर स्प्रींग द्वारा इंदौर की महिलाओं के लिए आयोजित जे.के. वुमन्स कार रैली 14 मार्च 2010 प्रातः 8.30 बजे महिलाओं के लिए एक यह एक आकर्षक अजीब एडव्हेंचर स्पोट्र्स, पारिवारिक भावना लिए हुए आयोजित हुआ। महिलाएं भी स्पर्धात्मक माहौल में किसी से भी कम नहीं आंकी जा सकती।

हिमालयन स्पोट्र्स की तरह महिला कार रैली में 170 महिलाओं ने अपनी-अपनी कारों के साथ लगभग 100 किमी का खजाना खोज की तरह छह ट्रैक वेल्यू, साथ में माथापच्ची, आगे बढ़ने की दौड़, उबड़-खाबड़ रास्तों की मुश्किल के साथ स्टेयरिंग संभाला, ऊंची पहाड़ियों को भी पार करना था। प्रत्येक कार को प्रतिभागियों ने वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप कुछ न कुछ सार्थक संदेशों से फूलों भरी सजावट इको- मित्र, भ्रूण हत्या विरोध, हरियाली स्थापना हेतु वृक्ष लगाने। महिला सशक्तिकरण। विंग्ज ऑफ फायर, झांसी की रानी से सजाई थी। वाहन चालक का एक समान ड्रेस कोड रखा गया। साथ में परिवार का एक-एक नेवीगटेर सहायक स्वरूप रहा, जिसे प्रत्येक पड़ाव क्लू के समय में कुछ न कुछ निर्देशित कार्य भी पूरा करना था यथा ट्रैफिक सिंग्नल बनाना। सुई धागों से कपड़ा सीना। पत्ती-फूल एकत्र करना आदि-आदि। रविवार की छुट्टी इससे अधिक रोचक, यादगार, दिमागी संतुलन के साथ खुशनुमा व आनंददायी रही। विशेषता यह कि नागर समाज की महिला श्रीमती तृप्ति मित्रा तिवारी (जोशी), मनोज तिवारी 36 वर्षीय एवं कु. वंदना पुरुषोत्तम जोशी ने उसके नेवीगेटर के रूप में रैली में जज्बे की जीत की भावना के साथ प्रथम बार हिस्सा लिया और अपनी प्रतिभा का प्रयोग किया। प्रत्येक पड़ाव पर दिये क्ल्यू को समझ आगे बढ़ना व अन्य चालक से प्रतिस्पर्धिता हो उसको विभिन्न प्रकार के रास्तों पर आगे बढ़ चलना व दिमाग को संतुलन रख पार करना साहसिक व मुश्किल भरा स्वप्न ही था जो सामने अवतरित हुआ। इस रैली के सफर को श्रीमती तृप्ती मित्रा ने एक घंटा पच्ची मिनट में पूर्ण किया, 12 मिनट के अंतर से ही सफलता दूर रह गई, लेकिन इस रोचक खेल में प्रत्येक प्रतिस्पर्धी चालक महिलाए ने स्वयं को मुश्किल बाधाएं पार कर विजेता से कम महसूस नहीं किया। श्रीमती तृप्ती मित्रा एवं कु. वंदना का रैली में प्रतिस्पर्धी हो भाग लेना स्तुति योग्य साहिसक कदम नागर समाज के लिए गौरवान्वित, सम्मान योग्य प्रशंसनीय है। प्रतिस्पर्धी को बधाइयां

पी.आर. जोशी
528, उषा नगर एक्सटेंशन, इंदौर

सार समाचार

- बूंदी निवासी श्री विशुद्धानंद अरुणा मेहता की पौत्री (विजय-नीलम की पुत्री) सौ. शिखा-नितिन नागर के यहां 9 मार्च 2010 को पुत्री का जन्म हुआ- बधाई।
- कल्पेश याज्ञिक ने रामनवमी दि. 24-3-2010 को इंदौर में गृह प्रवेश किया। बधाई
- सचिन झा के पुत्र का मुंडन संस्कार दि. 25 मार्च 2010 को इंदौर में सम्पन्न। इसी दिन इनका गृह प्रवेश भी इंदौर में हुआ। बधाई।

रेकी प्रशिक्षण

इंदौर। अप्रैल के प्रथम अथवा द्वितीय सप्ताह में एक दिवसीय रेकी प्रशिक्षण का कार्यक्रम है। निवास स्थान स्कीम नं. 74 पर आयोजित है। कृपया सम्मिलित होने का मन बनाएं तथा एक-दूसरे को सूचित करें। **श्रीमती शारदा मंडलोई, 94250- 85052, 0731- 2556266, श्रीमती दिव्या मंडलोई 0731-4023226, 94250-59101**

प्रारब्ध मंथन के द्वारा समस्याओं से छुटकारा दिलाते हैं श्री नागर

ब्यावरा। श्री शैलेन्द्र नागर (सुपुत्र श्री देवीप्रसाद नागर- माता सौ. पवित्रा नागर ब्यावरा) । श्री शैलेन्द्र नागर क्षेत्र के व अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रिका विश्लेषक हैं। आप पत्रिका देखकर जीवन की उलझनें सुलझाते हैं। आपको स्वप्रेरणा हुई और आप एक ख्याती प्राप्त पंडितजी से दीक्षित होने गये। लेकिन उन्होंने श्री नागर को शिक्षित करना स्वीकार नहीं किया। इसके बाद श्री नागर स्वाध्याय में जुट गये व एक वर्ष के स्वाध्याय के बाद उन्होंने जातकों की पत्रिकाओं का विश्लेषण शुरू किया। आप सन् 1998 से लगातार अपनी सेवाएं इस क्षेत्र में दे रहे हैं। आप सरल, मितभाषी किंतु अपने विषय के विशेषज्ञ हैं। वर्तमान में आप अपनी सेवाएं स्वनिवास पर निरंतर दे रहे हैं। साथ ही आप प्रति रविवार इंदौर में पालिका प्लाजा शास्त्री ब्रिज के पास यजमानों के विशेष आग्रह पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। आप राजगढ़ ब्यावरा, कुंभराज, शाजापुर, भोपाल, रायपुर, अमेरिका, यरुशलम में अपनी विद्वता का लोहा मनवा चुके हैं। मैं स्वयं भी आपके ज्योतिष व पत्रिका के विश्लेषण के कई चमत्कारी उदाहरणों को अनुभूत कर चुकी हूं। आप पं. कंवरलालजी व स्व. श्रीमती कंचनबाई के पौत्र व वैद्यरामनारायणजी नागर व दुर्गादेवी नागर मोड़ीवाले के नाती हैं। आप नागर ब्राह्मण समाज को अपनी निःशुल्क सेवाएं देने हेतु कृत संकल्प हैं।

पत्रिका विश्लेषण-आपसे इंदौर में मिलने के लिए शनिवार को अपायमेंट फोन पर ले लें तो सुविधा होगी।फोन नं. 94251 87590

द्वारा सौ. तारा देवी नागर ब्यावरा

नागर ब्राह्मण समाज का सम्मेलन प्रतिभा सम्मान एवं निर्वाचन सम्पन्न

मन्दसौर। नागर ब्राह्मण समाज के मन्दसौर, नीमच एवं प्रतापगढ़ जिलों के अंचलों मे निवासरत सामाजिक बंधुओ का सपरिवार त्रैवार्षिक सम्मेलन, प्रतिभा सम्मान समारोह, साधारण सभा एवं श्री हाटकेश्वर नागर ब्राह्मण समाज छात्रावास एवं धर्मशाला लोक न्यास मन्दसौर के निर्वाचन कार्यक्रम पंडित मदनलाल जोशी सभागृह मन्दसौर में श्री प्रहलाद बंधवार अध्यक्ष नगर पालिका मन्दसौर के मुख्य आतिथ्य एवं समाजसेवी श्री लीलाशंकर नागर एवं श्री रेवाशंकर मेहता, नागर समाज मन्दसौर के अध्यक्ष श्री बाबूलाल नागर एवं नीमच के अध्यक्ष श्री रमेश नागर की गरिमामयी उपस्थिती में भगवान हाटकेश्वर की पूजा अर्चना, माल्यार्पण एवं द्विप प्रज्वलन से हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ में श्रीमती अलका नागर के नागर रत्न नरसिंह मेहता के भजन प्रस्तुती से हुई। सामाजिक गतिविधियों की जानकारी एवं स्वागत भाषण नागर समाज मन्दसौर एवं न्यास के सचिव सतीश नागर ने दिया। अतिथियों का स्वागत अध्यक्ष श्री बाबूलाल नागर द्वारा किया गया। मुख्य अतिथी श्री बंधवार द्वारा पुरस्कृत होने वाले बच्चो को बधाई देते हुए मन्दसौर नगर में ब्राह्मणों के आराध्यदेव भगवान परशुराम के नाम से निर्मित होने वाले द्वार के निर्माण की जानकारी दी। सम्मेलन के द्वितीय सत्र का शुभारम्भ प्रतिभा सम्मान समारोह की कडी के रूप में हुआ जिसके मुख्य अतिथी मन्दसौर नगर के जागरूक विधायक श्री यशपालसिंह सिसौदिया एवं अध्यक्षता श्री महेश मिश्रा, अध्यक्ष सकल ब्राह्मण समाज मन्दसौर के द्वारा की गई। श्री सिसौदिया एवं श्री मिश्रा द्वारा समाज के कक्षा 5वीं, 8वीं, 10 वीं, 12 वीं एवं स्नातक/स्नातकोत्तर कक्षाओं मे प्राविण्य/प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण बच्चों को स्व. श्री ललिता शंकर मेहता, श्री जमना शंकर नागर एवं श्रीमती अनुसूईया दवे स्मृति पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। स्नातक स्तर की डिग्री मे प्रथम पुरस्कार कुमारी नेहा सतीश नागर बी.ई. (सी.एस) 78 प्रतिशत, कक्षा 12 वीं में कुमारी रूची राजेन्द्र नागर, कक्षा 10 वी में मनीष सत्यनारायण नागर, कक्षा 8 वी भरत पिता कैलाश नागर को सर्वोच्च अंको से उत्तीर्ण होने पर प्रथम पुरस्कार दिया गया। सांत्वना पुरूस्कार मे कक्षा 12 मे ऋषभ सुनिल मेहता, कु. पूर्वा पिता कमलेश नागर, अभिषेक पिता सतीश नागर 10वी सीबीएसई, देवेन्द्र पिता भगवतीलाल नागर 10वीं, नेहा पिता दिलीप नागर 10वीं, प्रतिक पिता अशोक नागर 10वीं एवं राजेन्द्र पिता मोहनलाल नागर 8वी को प्रथम श्रेणी मे आने पर सांत्वना पुरस्कार दिये गये। खेल जगत मे शतरंज खिलाडी मास्टर भीषज पिता एन.के. त्रिवेदी को पुरस्कृत किया गया। महिलाओं के लिये व्यंजन बनाओं एव रंगोली बनाओ प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें व्यंजन बनाओं प्रतियोगिता में श्रीमती मुग्धा गौरव नागर प्रथम, श्रीमती संगीता नागर द्वितीय, रंगोली में कु. भूमिका त्रिवेदी प्रथम, प्रिती नागर द्वितीय रही। जिन्हे निर्णायक मण्डल द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर श्री सिसौदिया जी द्वारा पांच सर्वोच्च अंको से पुरस्कृत बच्चों को विधायक निधी से प्रत्येक को 1000 रूपयें के पुरस्कार देने की घोषणा की गई। श्री सिसोदिया एवं श्री महेश मिश्रा ने बच्चों को बधाई देते हुए बच्चों की निरंतर प्रगति हेतु अभिभावकों को अधिक ध्यान देने को कहा। प्रतिभा सम्मान समारोह को निरंतर जारी रखते हुए इस अवसर पर आर्थिक सहयोग एवं पुरस्कार की घोषणाए की गई। समाज के सचिव सतीश नागर द्वारा अपने माता-पिता की स्मृति में प्रतिवर्ष 500 रू, श्री विकास दवे ने दादीजी श्रीमती पवित्राबाई की स्मृति मे 500 रूपये प्रतिवर्ष, स्व. गिरजाशंकर नागर की स्मृति में 500 रूपयें, भांगवताचार्य श्री मिथलेश मेहता ने 501 रूपये की घोषणा की। इंदौर से प्रकाशित हाटकेश वाणी परिवार द्वारा 2000 रूपये की राशि दी गई। इस अवसर पर आलोट से पधारे भागवताचार्य श्री मिथलेश मेहता द्वारा भी आर्शिवचन दिये गये इनका सम्मान समाजजनों द्वारा श्रीफल से किया गया। इस सम्मेलन में समाज की साधारण सभा आयोजित की गई। साधारण सभा में श्री शिवशंकर नागर, श्री हरिश दवे, श्री कमलेश शुक्ल सहित सामाजिक बंधुओं ने अपने विचार रखे। सचिव सतीश नागर द्वारा साधारण सभा में प्रस्तुत विषयों पर समग्र विचार विमर्श कर इनको सर्वानुमति से पारित किया गया। जिसके तहत न्यास के रिक्त हुए तीन पदों की पूर्ति श्री कमलेश शुक्ल, श्री गोविंद नागर, श्री आशीष व्यास के मनोनयन से की गई। इस अवसर पर श्री जगदीश नागर निर्वाचन अधिकारी के मार्गदर्शन एवं देखरेख में श्री हाटकेश्वर नागर ब्राहम्ण समाज छात्रावास एवं धर्मशाला लोकन्यास मंदसौर के निर्वाचन सम्पन्न करवाये गये। जिसमें अध्यक्ष श्री जयेश नागर, उपाध्यक्ष महेश व्यास, बालमुकुंद नागर, सचिव सतीश नागर, सह सचिव कमलेश शुक्ल, कोषाध्यक्ष आशीष व्यास सर्वानुमति से मनोनित किये गये। कार्यक्रम के अंत में आभार हरिश दवे ने माना। कार्यक्रम का समापन सहभोज के साथ सम्पन्न हुआ।

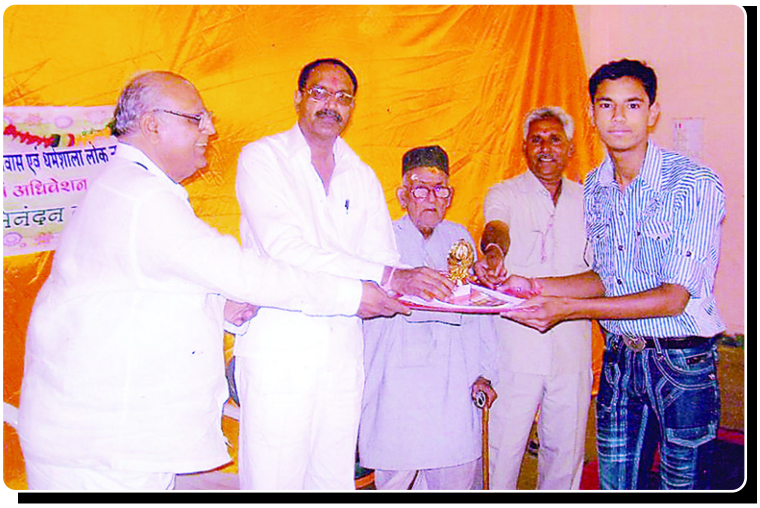

संदर्भ : डॉ. रामरतन शर्मा को डॉ. शंकरदयाल शर्मा सृजन सम्मान

उज्जैन। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में दिनांक एक फरवरी 2010 को डॉ. शंकरदयाल सृजन सम्मान मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी द्वारा वर्ष 2005, 2006 व 2007 प्रत्येक वर्ष के पांच-पांच श्रेष्ठ लेखकों को उक्त सम्मान से विभूषित करने हेतु आयोजन सम्पन्न हुआ।

इस आयोजन में वर्ष 2006 के सम्मानित श्रेष्ठ लेखकं में से एक प्रो. डॉ. रामरतनजी शर्मा उज्जैन से आमंत्रित थे। इस कार्यक्रम में डॉ. शर्मा के सौजन्यसे मुझे भी उनके परिजन की हैसियत से सम्मिलित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। साथही मेरे परम मित्र एवं श्री शर्मा सा. के समधि पीपलरांवा नागर समाजके अध्यक्ष व सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता श्री हरिनारायणजी नागर भी साथ ही थे।

सम्मान में सर्वश्रेष्ठता साबित हुई

सम्मान समारोह भोपाल की प्रसिद्ध झील के किनारे भारत भवन में चल रहा था। डॉ शर्मा सा. अपने अन्य सम्मानीय साथियों के साथ में और श्री नागर सा., मैं और अन्य परिजन एवं आमंत्रित जनसमुदाय दर्शक दीर्घा में बैठे थे। सभी पंद्रह श्रेष्ठ लेखकों को एक समान ही 21 हजार की राशि का चेक, शाल, श्रीफल, पुष्पमाला एवं सम्मान पत्र से क्रमशः सम्मानित किया जा रहा था। श्री नागर सा. के मन में एक प्रश्न आया कि इन पंद्रह सम्मानित लेखकों में समान सम्मान होते हुए भी बड़ा सम्मान किनका माना जावे। प्रश्न बड़ा जटिल था। मुझे अकबर-बीरबल का पुराना किस्सा याद आया।

अकबर ने तीन प्रतिमाएं समान वजन, समान आकृति, समान रंग रूप की बनवाकर दरबार में रखवाकर दरबारियों से पूछा इन प्रतिमाओं में कौन सी श्रेष्ठ है और कौन सामान्य और कौनसी निकृष्ट है। कोई भी दरबारी इसका उत्तर नहीं दे पाए। जब बीरबल की बारी आई तो उसने एक सलाई लेकर क्रमशः तीनों प्रतिमाओं के कान में डाली एक में सलाई पेट में चली गई, दूसरी में दूसरे कान से निकल गई और तीसरी में मुंह से निकली। इस प्रकार तीनों में भिन्नता साबित कर दी। श्रेष्ठता का क्रम कैसे रह यह आप सभी जानते हैं। यह विषय भी भिन्नहै। सम्मान कार्यक्रम जारी था, सभी सम्मानित लेखकों को संक्षिप्त जीवनी पढ़कर सुनाई जा रही है।

इन लेखकों में से अधिकतम शहरों में जन्मे, उच्च शिक्षित परिवार में पले, कोई सम्पन्न परिवार से थे सभी की मूल भूमि में कोई न कोई विशेषता या सुविधाएं थी। मात्र डॉ. रामरतन शर्मा ही एक ऐसे लेखक हैं, जो तराना तहसील के छोटे से ग्राम डेलची में जन्मे। साधारण परिवार में प्रारंभिक शिक्षा ग्राम मेंही प्राप्त की। कठिन परिस्थितियों में स्वयं के बल पर उच्च शिखर पर पहुंचे। श्रेष्ठ लेखन के साथ सबसे अधिक 35 शोधार्थियों को अपने शिक्षकीय जीवन में अर्थशास्त्र के विभिन्न विषयों पर पीएचडी की उपाधि दिलवाई। अतः सभी लेखकों में समान सम्मान मिलते हुए भी डॉ. शर्मा सा. का सम्मान सबसे बड़ा सर्वश्रेष्ठ सम्मान रहा यह तय रहा। पुनः हार्दिक बधाई डॉ. रामरतनजी शर्मा सा. को

डॉ. बालकृष्ण व्यास
एलआईजी 12/12 ऋषि नगर, उज्जैन (म.प्र.)

आणंद (गुजरात) में श्री महागणपति यज्ञ सम्पन्न

आणंद। भगवान श्री महा गणपति की पूजा-अर्चना हवन के बगैर इस युग में किसी भी यज्ञ और दान का फल नहीं मिलता। इसी तारतम्य में आणंद (गुजरात) में सुश्री वीभा (वल्लभ बुच) बुच व उनके पुत्र सौरव बुच, रोहन बुच व पुत्रवधु रोशीता बुच ने अपने स्वयं के निवास 27 उदय पार्क पर दिनांक 3 मार्च को संकट चतुर्थी की बेला में अभिष्ट फल की प्राप्ति की कामना से श्री संतोष कुमार व्यास इंदौर के आचार्यत्व में विद्वान ब्राह्मणों द्वारा श्री महा गणपति यज्ञ सम्पन्न कराया गया। श्री महा गणपति यज्ञ में श्री गणेश महामंडल व अन्य देवी-देवताओं की स्थापना पूजन, अभिषेक,सहस्त्र दुर्वा, सहस्त्र मोदक द्वारा अर्चन किया गया। साथ ही सहस्त्र मोदक व अष्टद्रव्य से हवन किया गया। साथ ही आरती प्रसाद वितरण कर अपने जीवन को कृतार्थ किया।

बाबा का आकर्षक शृंगार

इलाहाबाद। प्रयाग में स्थित श्री हाटकेश्वरनाथ जी मंदिर (120/107 जीरो रोड) में सभी भक्तजनों ने सौल्लास श्री महाशिवरात्रि का आयोजन 12 फरवरी 2010 को किया। प्रातः काल से ही भक्तगण मंदिर परिसर में बाबा की पूजा-अर्चना हेतु पधारे। सायंकाल से अखिल रात्रि तक चारों प्रहर रूद्रपाठ का भव्य आयोजन किया गया। बाबा श्री हाटकेश्वरनाथजी का भव्य शृंगार देखते ही बनता था। सभी नागर जन समारोह में सम्मिलित हुए। श्री हाटकेश्वरनाथजी मंदिर ट्रस्ट की ओर से सभी आयोजन धूमधाम से मनाये गये। अंत में प्रसाद ग्रहण कर सभी भक्तगणों ने पुण्य का लाभ उठाया।

प्रेषक नित्यानंद नागर, इलाहाबाद

जीवन साथी परिचय पसंदगी सम्मेलन राजकोट में

राजकोट । अ.भा. नागर परिषद राजकोट द्वारा मई 2010 के अंतिम सप्ताह में समस्त नागर जाति के लग्नेच्छुक युवक (30 वर्ष या उससे अधिक) तथा युवती (29 वर्ष और उससे अधिक आयु) के लिए जीवन साथी परिचय पसंदगी अभियान का आयोजन किया है। युवक-युवती परित्यक्ता, विधुर, विधवा, विकलांग इस अभियान में हिस्सा लेने के लिए सम्पर्क करें-

श्री जयकांत छाया
09979476560
श्री कुष्मांडराय
09925361070

रतलाम में सर्वानुमति से श्री संजय मेहता अध्यक्ष बने

ओम त्रिवेदी द्वारा

रतलाम। नागर ब्राह्मण समाज की एकता, संगठन शक्ति एवं सर्वानुमति से रतलाम शाखा के अध्यक्ष का चुनाव सम्पन्न हुआ, जिसमें युवा मेडिकल व्यवसायी श्री संजय मेहता अध्यक्ष निर्वाचित हुए। निर्वाचन प्रक्रिया श्री आर.सी. भट्ट एवं श्री सतीश नागर के निर्देशन में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर नागर समाज के महिला एवं पुरुष बड़ीसंख्या में उपस्थित थे।

संजय मेहता
अध्यक्ष

संजय दवे
सचिव

नागर धर्मशाला में म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद की रतलाम शाखा के अध्यक्ष के चुनाव को लेकर समाजजनों में गहमागहमी एवं उत्सुकता का माहौल रहा। इस अवसर पर निवृत्तमान अध्यक्ष श्री हेमकांत दवे ने कहा कि मेरे कार्यकाल में समाजजनों के सहयोग से अनेक परम्परागत आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए वहीं परिषद की रतलाम शाखा आर्थिक रूप से सक्षम बनाई गई। उन्होंने सहयोग के लिए सभी समाजजनों का आभार प्रकट किया। इस आयोजन में सर्वश्री रामेश्वर मेहता, सतीश नागर, रविशंकर दवे, नवनीत मेहता, प्रदीप मेहता आदि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए छुटपुट विरोधकर सरलीकरण किया। अध्यक्ष श्री संजय मेहता ने अपने अधिकार क्षेत्र के तहत कार्यकारिणी का गठन किया, जिसमें उपाध्यक्ष विभाष मेहता, सचिव संजय दवे, सहसचिव द्वय सुशील नागर, गिरीश भट्ट, कोषाध्यक्ष नवनीत मेहता, धर्मशाला प्रभारी कुमुद बेन भट्ट मनोनीत किये गये। कार्यकारिणी में सर्वश्री रमाकांत भट्ट, ओंकारलाल नागर, धर्मेन्द्र नागर, शरद मेहता, हरीश मेहता, ललित मेहता, आनंद मेहता, शैलेन्द्र व्यास, सत्येन्द्र एवं प्रवीण मेहता को लिया गया। अंत में अध्यक्ष ने सभी का आभार मानते हुए नागर समाज को आगे बढ़ाने का विश्वास दिलाया।

सम्पर्क सेतु म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद
शाखा रतलाम

अध्यक्ष श्री संजय मेहता — मो. 94253 29351, टेली 231454 नि. 233834
उपाध्यक्ष श्री विभाष मेहता — मो. 92295 97171

प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य

सचिव श्री संजय दवे — मो. 94256 59926, टेली. 243494
सहसचिव श्री सुशील नागर — मो. 98275 35094
सह सचिव श्री गिरीश भट्ट — मो. 9826296660, टेली 260933 व 233023
कोषाध्यक्ष श्री नवनीत मेहता — मो. 94253 29269, टेली 232769
धर्मशाला प्रभारी श्रीमती कुमुद बेन भट्ट मो. 92291 65702

कार्यकारिणी सदस्य

श्री रमाकांत नागर भट्ट	मो. 9329385324
श्री ओंकारलाल नागर	टेली 264220
श्री धर्मेन्द्र नागर	मो. 9893019681, टेली. 222064
श्री शरद मेहता	मो. 9691908440, टेली 220381
श्री हरीश मेहता	मो. 98276 64281
श्री ललित मेहता	मो. 94253 55771, टेली 240254
श्री आनंद मेहता	मो. 9827003344, टेली 241773
श्री शैलेन्द्र व्यास	मो. 98273 53789, टेली. 242 206
श्री सत्येन्द्र मेहता	मो. 98273 11129
श्री प्रवीण मेहता	मो. 93294 89957
श्री ओम त्रिवेदी	मो. 98261 96660

संरक्षक

श्री रविशंकर दवे	मो. 9039432383, टेली 243494
श्री प्रकाशचंद्र व्यास	मो. 9406887898, टेली 242206
श्री कृष्णकांत व्यास	मो. 9425926059, टेली 239664
श्री रामेश्वर मेहता	मो. 9893116126, टेली 244429
मीडिया प्रभारी श्री विष्णुदत्त नागर	मो. 9893495448, टेली 239094

प्रांतीय सचिव म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद, शाजापुर)
श्री हेमकांत दवे — मो. 94251 95018, टेली 235953, 223274

क्षेत्रीय प्रतिनिधि

सैलाना	पं. जितेन्द्र नागर	मो. 99072 00799, टेली 07413-278390
मड़ावदा	श्री सचिन रावल	मो. 98263 77882, टेली 07366 234264
सुखेड़ा	श्री महादेवप्रसाद नागर	मो. 99812 01409, टेली. 07414- 273309
लुनेरा	श्री भुवनेश दवे	मो. 97556 23446, टेली 07412 320921
नामली	श्री कैलाशचंद्र शर्मा	मो. 93294 17666
पिपलोदी	श्री सुरेशचंद्र जोशी	टेली 07412-293474
जावरा	श्री नागेश्वर नागर	टेली- 07414 220172

सुयश

श्री विनोद नागर दूरदर्शन भोपाल में उप निदेशक (समाचार) नियुक्त

इन्दौर। केन्द्र सरकार ने सूचना और प्रसारण मंत्रालय की भारतीय सूचना सेवा (इंडियन इन्फर्मेशन सर्विस) के वरिष्ठ अधिकारी श्री विनोद नागर को ग्रुप 'ए' सीनियर ग्रेड में पदोन्नत कर दूरदर्शन भोपाल में उपनिदेशक (समाचार) के पद पर नियुक्त किया है। वे अभी तक आकाशवाणी इन्दौर में रीजनल न्यूज हेड के रुप में सहायक निदेशक (समाचार) के पद पर कार्यरत थे। उन्होने भोपाल में अपने नये पद का कार्यभार ग्रहण कर लिया है। सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा आय.आय.एस. अधिकारियों की पदस्थापना आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के समाचार विभाग के अलावा मंत्रालय के अन्य मीडिया कार्यालयों- प्रेस इन्फर्मेशन ब्यूरो (पीआईबी), फील्ड पब्लिसिटी (डीएफपी), विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय (डीएवीपी), रजिस्ट्रार न्यूज पेपर्स आफ इंडिया (आरएनआई), प्रकाशन विभाग (पब्लिकेशन डिवीजन), डीपीआर (डिफेंस) आदि में विभिन्न पदों पर की जाती है। श्री नागर पूर्व में भी दूरदर्शन भोपाल में समाचार संपादक रह चुके हैं। आकाशवाणी इन्दौर के प्रादेशिक समाचार एकांश में करीब दो दशक के सुदीर्घ कार्यकाल के दौरान श्री नागर ने संवाददाता, समाचार संपादक और सहायक निदेशक (समाचार) के रुप में कार्य किया। श्री नागर के कार्यकाल में समूचे पष्चिमी मध्यप्रदेश खासकर मालवा-निमाड़ क्षेत्र की सभी प्रमुख घटनाओं को आकाशवाणी के राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक समाचार बुलेटिनों में प्रमुखता से स्थान मिला। अपनी उत्कृष्ट व सराहनीय सेवाओं के लिये श्री नागर ने अनेक पुरस्कार/सम्मान प्राप्त किए तथा थॉमसन फाऊन्डेशन (यू.के.) द्वारा आकाशवाणी संवाददाताओं के लिए आयोजित विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा लिया। 1 नवंबर 2000 को नये छत्तीसगढ़ राज्य के गठन के समय राजधानी रायपुर के आकाशवाणी केंद्र में रीजनल न्यूज यूनिट की स्थापना, पहले प्रादेशिक समाचार बुलेटिन के प्रसारण व त्वरित समाचार कवरेज के लिए आकाशवाणी के महानिदेशक (समाचार) ने श्री नागर को सम्मानित किया था। सहज, सरल एवं सौम्य व्यक्तित्व के धनी श्री नागर ने काम के प्रति निष्ठा, लगन, ईमानदारी और मिलनसारिता के गुणो से मीडियाकर्मियों में अपनी एक विशेष पहचान बनाए रखी। म.प्र. शासन के जनसंपर्क विभाग द्वारा राज्यस्तरीय अधिमान्य पत्रकार एवं इंदौर प्रेस क्लब के सक्रिय सदस्य श्री नागर विकास पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए गणतंत्र दिवस पर सम्मानित हो चुके हैं। श्री नागर को पदोन्नति पर विभिन्न कार्यालयों संस्थाओं, संगठनो ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। आकाशवाणी इन्दौर, प्रादेशिक समाचार एकांश, पत्र सूचना कार्यालय (पीआईबी), तथा अन्य केन्द्रीय कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। इंदौर प्रेस क्लब के अध्यक्ष प्रवीण खारीवाल, महासचिव अन्ना दुराई तथा कार्यकारिणी सदस्यों ने श्री नागर को भावभीनी विदाई देकर उज्जवल भविष्य की कामना की। संस्था 'हिन्दी परिवार' के अध्यक्ष हरेराम वाजपेयी, 'मीडिया इनिशिएटिव फार वैल्यूज' के अध्यक्ष कमल दीक्षित, 'संपादक संघ' के अध्यक्ष जयकृष्ण गौड, 'जर्नलिस्ट यूनियन' के महेंद्र दुबे, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के विभागाध्यक्ष डॉ. मानसिंह परमार आदि ने भी श्री नागर को बधाई एवं शुभकामनाएं दी है। मध्यप्रदेश नागर ब्राम्हण परिद के अध्यक्ष वीरेंद्र व्यास, अ.भा.नागर परिषद इंदौर शाखा के अध्यक्ष प्रवीण त्रिवेदी व सचिव केदार रावल तथा दैनिक अवंतिका इंदौर के संपादक दीपक शर्मा ने भी श्री नागर को पदोन्नति की बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। 'जय हाटकेशवाणी' परिवार की ओर से भी बहुत-बहुत बधाई...! स्नेहीजन उन्हे नये मोबाइल नं. 9425437902 तथा ई-मेल vinodnagariis@gmail.com पर संपर्क कर बधाई दे सकते हैं।

श्री दवे ने आईआईएम परीक्षा उत्तीर्ण की

श्री सौरभ दवे सुपुत्र अंजली सुमनकांत दवे दिल्ली आईसीआईसीआई लेम्बोर्ड जनरल इंश्योरेंस नोएडा में नार्थ आरएसएम के पद पर कार्यरत हैं। गत दिनों श्री दवे ने अखिल भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम) परीक्षा लखनऊ से उत्तीर्ण की। श्री दवे बहुमुखी प्रतिभा के धनी, सरल सौम्य तथा कुशल प्रबंधक हैं। श्री दवे ने रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर से मार्केटिंग विषय में एम.बी.ए. की शिक्षा प्राप्त की है तथा आपकी ननिहाल नागरों की राजधानी उज्जैन में श्री प्रभुनाथ नागर डाबरीपीठा में है। श्री सौरव दवे नागर समाज रतलाम के समाजसेवी श्रीमती रंजना सुशील नागर के दामाद हैं। नागर समाज की ऐसी प्रतिभा की गौरवपूर्ण उपलब्धि अर्जित करने पर म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभावान समिति उज्जैन एवं समाज की विभिन्न इकाइयों ने बधाई प्रेषित की है।

प्रस्तुति-ओम त्रिवेदी, रतलाम

चि. मयंक का वैभव

श्री श्रवणेश्वर झा, श्रीमती मनोरमा झा के सुपौत्र तथा श्री मनोज झा, श्रीमती सुमन झा के सुपुत्र चि. मयंक झा को कोटा निवासी श्री दिनेशचंद्र दवे एवं श्रीमती सरला दवे के दोहित्र हैं, कि अमेरिका की विख्यात मैनेजमेंट सलाहकार फर्म बोस्टन कन्सलटिंग ग्रुप में जून 2010 से सलाहकार पद पर नियुक्ति हुई है। इससे पहले चि. मयंक ने मुंबई आईआईटी (पवई) से केमिकल इंजीनियरिंग की परीक्षा उत्तीर्ण कर क्रमशः आईटीसी एवं प्रोक्टर एंड गेम्बल कंपनी में दो वर्ष का कार्यानुभव लिया। पश्चात उन्होंने आईआईएम बैंगलोर से मार्च 2010 में एमबीए की परीक्षा उत्तीर्ण की। इस आईआईएम बैंगलोर के अंतर्गत ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण के दौरान दुबई की आर्थर डी लिटिल सलाहकार संस्था में प्रशिक्षण लिया तथा स्टूडेंट एक्सचेंज कार्यक्रम के तहत पेरिस में अध्ययन किया व यूरोप के कई देशों का भ्रमण किया। **बधाई हेतु मो. 9826057174**

कु. रचिता बसंत व्यास पुरस्कृत

खंडवा। विगत दिनों विश्वास परियोजना द्वारा आयोजित एड्स जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, इसमें श्री पूनमचंद गुप्ता व्यावसायिक महाविद्यालय की छात्रा कु. रचिता बसंत व्यास ने प्रथम स्थान प्राप्त कर रु. 1001 एकहजार

एक रुपये की नगद राशि एवं प्रशस्ती पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्राप्त किया। इसी प्रकार जिला एड्स नियंत्रण समिति खंडवा द्वारा आयोजित भाषण। चित्रकला प्रतियोगिता जिसका विषय था 'एचआईवी संक्रमित व्यक्तियों के प्रति समाज का सकारात्मक दृष्टिकोण' विषय पर आयोजित इस प्रतियोगिता में भी कु. रचिता व्यास ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर 501 रुपए की नगद राशि, प्रमाण-पत्रएवं स्मृति चिन्ह प्राप्त किया। समाज की बालिका की उपलब्धि पर नागर समाज अध्यक्ष श्री देवीदास पोत्दार, उपाध्यक्ष श्री विजय नारायण व्यास, श्री राघवेन्द्र राव मंडलोई एवं सचिव श्री प्रेमनारायण व्यास सहित श्री सरोजकुमार जोशी ने शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

डॉ. संजय मेहता होंगे कंट्री मैनेजर

इंदौर। श्री संजय मेहता (सुपुत्र स्व. सुरेन्द्र विद्यावती मेहता) निवासी 205 रौनक आर्च, रेसकोर्स रोड, इंदौर की नियुक्ति ताइसेंग लिमिटेड चायना की कोलंबो (श्रीलंका) ब्रांच में कंट्री मैनेजर के पद पर हुई। ज्ञातहै कि पूर्व में आप जार्डन स्थित गारमेंट्स कंपनी में ब्रांच मैनेजर के पद पर कार्यरत थे। इस अवसर पर पत्नी श्रीमती कुसुम मेहता, सुपुत्री कु. नियोती मेहता व समस्त परिवारजन एवं परिचितों ने उन्हें शुभकामनाएं दीं।

कु. पारूल मेहता (शानू) अमेरिका प्रवास पर रवाना

कु. पारूल मेहता बी.ई. आनर्स (आई.टी.) सुपुत्री श्री प्रमोद कुमार मेहता, (जो वर्तमान मे भोपाल सहकारी दुग्ध संघ भोपाल मे पदस्थ है) एवं श्रीमती सुमन मेहता, की नियुक्ति IBM अमेरिका बेस्ड मल्टीनेशनल कं., बैंगलोर मे सीनीयर साफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर हाल ही मे हुई थी। इन्हें विश्वस्तरीय टैक्नौलॉजी ''एटी एण्ड टी" (Americam Telephone's & Telegraph's) मे खासी योग्यता हासिल हो जाने से कम्पनी के व्यय पर दो माह हेतु अमेरिका के वाशिंगटन स्टेट के शहरSeattle (Redmond) (जहाँ कम्प्यूटर की माइक्रोसॉफ्ट कम्पनी के फाउन्डर श्री बिलगेट्स् का हेड क्वार्टर है।) से IBM, US के बुलावे पर एक प्रोजेक्ट के लिये कम्पनी का टीम लीडर बनाकर दो माह के लिये आमंत्रित किया गया है। उल्लेखनीय है कि कु0 पारूल को जिस टेक्नोलौजी मे विशेषज्ञता हासिल है उसमे सम्पूर्ण विश्व मे केवल 1000 के लगभग ही इंजीनियर है। ज्ञातव्य है कि इतने अल्प समय मे ही इतने उच्च स्थान को प्राप्त कर लिया है । कु0 पारूल IBM कम्पनी की सबसे छोटी उम्र की टीम लीडर है। आप 4 अप्रैल 2010 को वापस भारत आवेंगी। अपने परिवार के साथ-साथ ही नागर समाज के लिये कु0 पारूल को प्राप्त इस उपलब्धी पर गर्व है। नागर समाज की और से उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ, बधाई ।

कु. टीना मेहता, और कु. मीना जुडवां बहनों को सुयश

कु. मीना मेहता सुपुत्री श्री प्रमोद कुमार मेहता (जो वर्तमान मे भोपाल सहकारी दुग्ध संघ भोपाल मे पदस्थ है) माता श्रीमती सुमन मेहता भोपाल ने बी. ई. की आई.टी. ब्रॉच के प्रथम वर्ष 2008-09 मे 78 प्रतिशत अंको के साथ उच्च स्थान प्राप्त किया और सम्पूर्ण ट्रिनिटी कालेज ऑफ इंजीनिरिंग की थर्ड टापर रही। इसी के साथ आपको शतप्रतिशत उपस्थिति का अवार्ड भी कालेज द्वारा ससम्मान प्रदान किया गया है। इन्ही की बडी जुडवॉ बहन कु. टीना मेहता, ने भी वर्ष 2008-09 मे बरकतुल्ला वि. वि. भोपाल की बी. कॉम (कम्प्यूटर) के प्रथम वर्ष मे भोपाल स्कूल ऑफ सोशल साईन्सेस (बी.एस.एस.) भोपाल से 68 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण कर द्वितीय वर्ष के चतुर्थ सेमेस्टर मे प्रवेश प्राप्त कर लिया है। नागर समाज की और से उज्जवल भविष्य की शुभकामना के साथ, बधाई ।

सखी को बधाई

वर्तमान समय आधुनिकता का है... यह समय का ही दोष है कि बच्चों के पास अपने बुजुर्गों के लिए समय नहीं है। जबकि सारी सुख-सुविधा भोगने, अपने समस्त कर्त्तव्य पूर्ण करने के बाद बुजुर्गों की एक ही चाहत होती है कि उनके पास बैठकर उनके अनुभव उनकी बात युवा पीढ़ी सुने। बुजुर्गों की उपेक्षा के इस दौर में जब हाटकेश्वर परिषद कोलकाता की शाखा सखी ने हमारा शाल-श्रीफल भेंटकर के सम्मान किया तो मैं गदगद हो गई। बुजुर्गों का सम्मान करने वाली इस संस्था के प्रति मेरे दिल में प्रशंसा के भाव जाग्रत हुए और मैंने उन्हें बहुत आशीर्वाद एवं बधाई दी। सखी ने धरोहर नमोनमः तथा किलकारी जैसी ज्ञानवर्धक एवं संस्कृति, संस्कार को जारी रखने वाली पुस्तकों का प्रकाशन किया है। उसके लिए भी झा परिवार की ओर से सफलता की बधाई, भविष्य में यह संस्था उन्नति करे इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

▸ मान भाभी, जानकी नगर, इंदौर

राहुल त्रिवेदी द्वारा इंटरनेशनल वेंडर्स मिट में प्रतिनिधित्व

इंदौर। हांगकांग एवं कनाडा में आयोजित इंटरनेशनल वेंडर मिट तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार के सिलसिले में श्री राहुल त्रिवेदी ने हाल ही में इन दो देशों की यात्रा की। बहुराष्ट्रीय कंपनी प्रतिभा सिंटेक्स प्रा.लि. पीथमपुर में इंटरनेशनल मार्केटिंग मर्चेन्डाइजर (फैशन व गारमेंट्स) के पद पर कार्यरत श्री राहुल त्रिवेदी ने इस बैठक में कंपनी का प्रतिनिधित्व कर शहर, प्रदेश व नागर ब्राह्मण समाज का गौरव बढ़ाया है। वे पर्यावरणविद डॉ. राकेश त्रिवेदी के सुपुत्र व नगर निगम के पूर्व जनसम्पर्क अधिकारी स्व. महेन्द्र त्रिवेदी के सुपौत्र हैं

सुयश बधाई

मनीष नागर पुत्री श्रीमती राजेन्द्रकुमार नागर निवासी सारंगपुर ने वर्ष 2010 में बी.एच.एम.एस. बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल से उत्तीर्ण किया।

कु. नेहा त्रिवेदी की नियुक्ति

इंदौर। कु. नेहा त्रिवेदी (सुपुत्री श्री रामप्रकाश त्रिवेदी, सौ निशा त्रिवेदी सारणी) की नियुक्ति स्थानीय विक्रांत इंजीनियरिंग एंड फार्मेसी कॉलेज में लेक्चरार पद पर हुई।

गुड मॉर्निंग

चिंटूजी सोने चले तो मच्छर परेशान करने लगा। हारकर वे चारपाई के नीचे घुसकर सोने लगे। तभी एक जुगनू आ गया। चिंटू जी चिल्लाए : यहां भी चैन नहीं? अब टार्च लेकर आ गया।

● पत्नी- आप बहुत मोटे हो गए हो।
जय- तुम भी तो मोटी हो गई हो।
पत्नी- लेकिन मैं तो माँ बनने वाली हूं इसलिए मोटी हो गई हूं।
जय- तो क्या हुआ, मैं भी तो बाप बनने वाला हूं।

सम्मान

डॉ. प्रतिमा जोशी सम्मानित

उज्जैन। म.प्र. पिछड़ा वर्ग संगठन द्वारा समाजसेवा में सक्रिय डॉ. प्रतिमा प्रकाश जोशी को निःशुल्क दमा रोग चिकित्सा एवं एक्यूप्रेशर चिकित्सा के माध्यम से मरीजों का उपचार करने की उल्लेखनीय सेवा के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्रीमती आशा प्रेमचंद गुड्डू, एएसपी हिमानी खन्ना, जनपद अध्यक्ष घट्टिया, म.प्र. पिछड़ा संगठन अध्यक्ष श्रीमतीसीता सोनी उपस्थित थीं। सम्मानित होनेपर ललित नागर, देवेन्द्र नागर, उज्जवल जोशी, गौरव नागर, गौरव जोशी, प्रदीप पाण्डेय, डॉ. देवेन्द्र शर्मा, मनोज तिवारी, श्रीमती दीपिका मेहता सहित अनेक बंधुओं ने बधाई दी।

इंदौर। 76 वर्षीय योगाचार्य ए.के. रावल के सम्मान समारोह में प्रदेश के गृह मंत्री उमाशंकर गुप्ता एवं न्यायमूर्ति श्री वी.डी. ज्ञानी उपस्थित थे। न्यायमूर्ति वी.डी. ज्ञानी विशेष अतिथि ने योग के क्षेत्र में श्री रावल के कार्यों की सराहना की एवं लोगों को लाभ पहुंचाने के कारण उन्हें बधाई दी एवं उनके शतायू होने की कामना की है। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रमेशचंद्र गुप्ता प्रदेश महामंत्री अ.भा. वैश्य महासम्मेलन ने की।

आपके पत्र

निर्देशिका हेतु संदेश

श्री हाटकेश्वरनाथ नागर ब्राह्मण मंडल दिल्ली एवं दिल्ली राजधानी क्षेत्र में बसे नागर भाइयों के डाक पते एवं टेलीफोन नंबरों की नई नागर दिग्दर्शिका प्रकाशित कर रहा है और चाहता है कि वह 29.03.2010 को यानी हाटकेश्वर जयंती के अवसर पर सभी सदस्यों को मंदिर में वितरित की जाये। अतः आपसे अनुरोध है कि अपने व्यस्ततम समय में से कुछ क्षण निकालकर प्रस्तावित नागर दिग्दर्शिका दिल्ली हेतु अपना आशीर्वाद/संदेश एवं फोटो प्रदान करें समस्त नागर ब्राह्मण समाज दिल्ली अत्यंत अनुग्रहित होगा।

आपका वसंत दवे, सचिव श्री हाटकेश्वर महादेव मंदिर, दिल्ली

संगठन और विकास में जुटे हैं

महोदय,

नागर समाज को मार्ग दर्शन एवं संगठित करने वाली यह पत्रिका जय हाटकेशवाणी जब से हाथ में आयी है लगता है समाज में बहुत से कर्मठ लोग हैं जो अपने समाज को संगठित एवं विकसित करने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। पत्रिका के चर्तुमुखी स्वरूप की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं। पत्रिका का प्रसार क्षेत्र निरंतर बढ़ रहा है यह भी अत्यंत प्रसन्नता का विषय है। आपने पत्रिका में लगभग सभी विषयों को साथ लेने का प्रयास कियाहै जो एक अच्छा प्रयास है। पत्रिका की उत्तरोत्तर उन्नति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। **सुरेशचंद्र दवे एड.**

मो. 09359511402

सखी

कोलकाता हाटकेश्वर परिषद की एक शाखा 'सखी' के वार्षिकोत्सव पर रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सखी सदस्य सपरिवार आमंत्रित थे। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण पुस्तक विमोचन तथा 80 वर्ष से ऊपर की वरिष्ठ महिलाओं को शाल व गुलाब के फूल भेंटकर सम्मानित किया गया, जिसमें कोलकाता व अन्य शहरों की कई महिलाएं शामिल थीं। सखी ने दो पुस्तकें गरबे का संकल्प 'नमो नमः' तथा माँ के गर्भधारण करने से लेकर शिशु की एक वर्ष तक की समस्त जानकारी 'किलकारी' नामक पुस्तक में दी गई है। उन दोनों पुस्तकों का विमोचन समाज की वरिष्ठ महिलाओं द्वारा कराया गया। उक्त पुस्तकें आप श्रीमती नलिनी ठाकोर 98360-33321 से प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिकोत्सव भोपाल में क्यों?

नागर समाज की पत्रिका मासिक जय हाटकेश वाणी का प्रथम वर्ष पूर्ण होने का वार्षिक समारोह इंदौर में पंजाब अरोडवंशीय धर्मशाला में 4 मई 2008 को आयोजित किया गया था, द्वितीय वार्षिकोत्सव पत्रिका की संस्थापक श्रीमती प्रभादेवी शर्मा के आकस्मिक देहावसान से निरस्त कर दिया गया था। तृतीय वार्षिकोत्सव भोपाल में आगामी 9 मई 2010 को आयोजित किया जा रहा है। उपरोक्त आयोजन भोपाल में किए जाने के पीछे उद्देश्य है कि भोपाल में अभी तक नागर समाज का बड़ा कार्यक्रम आयोजित नहीं हुआ है, जबकि वह प्रदेश की राजधानी हैं। वहां आयोजन के माध्यम से हम अपनी बात सरकार तक पहुंचा सकते हैं। साथही शक्ति प्रदर्शन भी कर सकते हैं। इस आयोजन की तैयारी में वरिष्ठ पत्रकार श्री ओमप्रकाशजी मेहता का अविस्मरणीय सहयोग प्रदान हुआ है। अतिथियों से सम्पर्क,स्थान के चयन एवं आरक्षण सहित सभी कार्यों में उनकी सक्रिय भूमिका रही। साथ ही स्थानीय नागर समाज अध्यक्ष श्री बालकृष्णजी व्यास, श्री सुभाषजी व्यास, श्री मदन मोहनजी नागर, श्री अशोक जी व्यास के साथ आयोजन को सफल बनाने के लिए समन्वय हुआ है।

आयोजन में भोपाल की सांस्कृतिक प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना, सहयोगियों का सम्मान एवं नागर समाज के विकास, उत्थान में सरकार से सहयोग प्राप्त करने का प्रयास, म.प्र. नागर परिषद की बैठक हेतु भी अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास से सम्पर्क किया गया है। आयोजन में प्रदेश सहित देश के विभिन्न भागों से समाजजनों के आने की संभावना है।

श्रीमती प्रभा शर्मा आकस्मिक चिकित्सा कोष एवं स्व. विद्याधरजी रावल सौ. सरदारीबाई रावल विद्या सहयोग कोष

मासिक जय हाटकेश वाणी के माध्यम से चिकित्सा एवं शिक्षा के लिए दो कोष कार्यरत हैं। और ये कोष ठीक उसी प्रकार हैं, जिस प्रकार हम परिवार की सुरक्षा के लिए बीमा कराते हैं या दुर्घटना से राहत के लिए मेडीक्लेम कराते हैं। हम कभी नहीं चाहते कि हमारे साथ कोई दुर्घटना हो परंतु ऐहतियात के तौर पर बीमा कराते हैं इसी तरह पत्रिका द्वारा चलाए जा रहे कोष हैं। श्रीमती प्रभा शर्मा आकस्मिक चिकित्सा कोष में जमा राशि से देशभर में इंदौर आकर इलाज कराने वाले नागरजनों हेतु आर्थिक सहायता दी जाती है। कोष का उद्देश्य है कि आकस्मिक चिकित्सा हेतु समाजजनों की मदद हो साथ ही जरूरत से ज्यादा अस्पताल में रुकना पड़े तो कोष से सहयोग प्रदान किया जाता है। कोष की खास विशेषता यह है कि इसमें आर्थिक योगदान करने वाले समाजजनों के नाम तो उजागर किए जाते हैं, परंतु सहयोग प्राप्त करने वालों के नाम प्रकाशित नहीं किए जाते। इसी प्रकार स्व. विद्याधरजी सरदारीबाई रावल विद्या सहयोग कोष भी है। जिन समाजजनों को आवश्यकता हो, वे इस कोष से आर्थिक सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। आपकी जानकारी में सहयोग प्राप्ति के पात्र यदि कोई हो तो निम्नलिखित मोबाइल नंबर पर सूचितकरने का कष्ट करें-

मो. 9826095995, 94250-63129

अभिनव पहल

मार्च माह में बैंगलोर से अपने सुपुत्र को फार्मेसी की परीक्षा दिलाने हेतु 15 दिनों के प्रवास पर इंदौर पधारे श्री जयंतीलालजी नागर जो राजस्थान के मूल निवासी हैं को अवंतिका परिवार ने आतिथ्य प्रदान किया। इस अभिनव पहल से दो परिवारों की घनिष्ठता बढ़ी, तथा यहां से वापसी के पश्चात उनके लगातार फोन आ रहे हैं कि आप बैंगलोर आईए। समाज के परिवारों को यदि आपसे में घनिष्टता बढ़ाना हो तो यह प्रयोग उपयुक्त है। हम किसी भी कार्य केलिए अन्यत्र शहर में जाएं तो वहां समाज के परिवार के साथ ही रुकें। इससे घनिष्टता तो बढ़ेगी ही आपसी आवागमन के द्वार भी खुलेंगे।

झाबुआ में नानीबाई का मायरा ७ से ११अप्रैल तक

झाबुआ। अखिल भारतीय कोटी ब्राह्मण नायक भगवान श्रीकृष्ण भक्त नरसी मेहता की करुणा संगीतमय कथा नानीबाई का मायरा का आयोजन रतलाम के पं. श्री अनिरुद्धजी मुरारी की मधुरवाणी में करवाने हेतु स्थानीय पैलेस गार्डन में द्वितीय बैठक दिनांक 18-3-2010 को श्री राजेश नागर की अध्यक्षता में श्रीकृष्ण भक्तों की बैठक सम्पन्न हुई,जिसमें उपस्थित सदस्यों को कार्यक्रम को किस प्रकार से आयोजित करना है उसके बारे में श्री नागर ने जानकारी दी व अन्य सुझाव भी सदस्यों द्वारा रखे गये, जिसे सर्व सम्मति से स्वीकार किये गये। कथा स्थल आजाद चौक व समय रात्रि 8.30 बजे से रहेगा। कथा के आयोजक श्री राजेश नागर, श्री यशवंत भंडारी, श्री नीरज राठौर, श्री राकेश त्रिवेदी, श्री रमण नायक, श्री रणछोड़भाई राठौड़, श्री संतोषसिंह गेहलोत, श्री कीर्तिजी एवं श्री राजेश भावसार, श्री शांतिलाल पालिवाल, रवीन्द्रजी कटलाना, बाबूभाई अग्रवाल रहेंगे। आय़ोजकों ने समस्त नागर बंधुओं एवं श्री कृष्ण भक्तों को सपरिवार कथा का लाभ लेने हेतु आमंत्रित किया है।

राजेश नागर, अध्यक्ष अखिल भारतीय नागर परिषद शाखा, झाबुआ

होलिका मिलन समारोह सम्पन्न

खंडवा। स्थानीय दीपक जोशी के निवास स्थान 17 मधुसूदन टावर पर दिनांक 28 फरवरी 2010 को होलिका मिलन समारोह संगीत निशा के रूप में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में विनय शुक्ला, आलोक जोशी, दीपक जोशी, हंसकुमार गुप्ता, श्रीमती छाया नागर, श्रीमती निशिा खान, संदीप जोशी, शंकर मित्रा, मनोज जोशी, डॉ. अशोक शर्मा, श्री संजय खेड़ा सुशील सकरगाये एवं अन्य कलाकारों ने फाग गीत, सुगम संगीत, गीत गजल, फिल्मी गीतों से देररात्रि तक समां बांधा। इस अवसर पर श्री नारायण नागर, श्री राजू जैन, अजय जैन, प्रेमचंद जैन सहित नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

ॐ श्री महाशिवरात्रि पर्व सम्पन्न

खंडवा। नागर समाज खंडवा के शिवालयों, श्री तिलभाण्डेश्वर महादेव मंदिर एवं श्री हाटकेश्वर महादेव मंदिर में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी महाशिवरात्रि का पर्व पूर्णतः श्रद्धा एवं उल्लास केसाथ मनाया गया। प्रातः 5 बजे शिवजी की पालकी ब्राह्मणपुरी स्थित श्री पं. शिवशंकर भट्ट के निवास स्थान से तिल भाण्डेश्वर मंदिर पहुंची। पश्चात आरती-पूजा के बाद प्रसाद वितरण किया गया। हाटकेश्वर नागर धर्मशाला के मंदिर में श्री देवीदास पोत्दार अध्यक्ष के मार्गदर्शन में पं. अरविंद व्यास, पं. विनीत द्वारा महादेवजी का श्रृंगार किया गया एवं शाम को महाआरती एवं प्रसाद वितरण किया गया।

बधाई...

चि. रितेश नागर
के 11 अप्रैल को
जन्मदिवस पर
कोटि-कोटि बधाई
नंदकिशोर नागर
(सामगी) दादाजी एवं समस्त परिवार खजराना, पीपलरावां, शामगढ़

चि. दक्ष वोरा
(मुंबई)
14 अप्रैल
शुभाकांक्षी- नाना-नानी, दादा-दादी, मम्मी-पापा की ओरसे नताशा वोरा

अपर्णा मेहता
(हैदराबाद)
12 अप्रैल
सास-श्वसुर, मम्मी पापा, मेहता परिवार, हैदराबाद

नानाजी, मम्मी, मौसी, मामा, दिव्या पंखील, कमल अग्रराता
की ओर से जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं
मो. 94250 33145

कु. अंजलि जोशी
(सुपुत्री अरुण-सौ लीना जोशी)
दिनांक 13अप्रैल
ओंकारेश्वर मो. 9755865325

कु. पलक मेहता
सुपुत्री
(श्री विश्वास सौ. योगिता मेहता)
दिनांक 11 अप्रैल
शाजापुर मो. 9713375606

बेबी प्रशस्ति नागर
(सुपुत्री प्रदीप-शीतल नागर)

दिनांक 25 मार्च 2010
शुभाकांक्षी
समस्त नागर परिवार उज्जैन

समस्त मेहता परिवार रतलाम

चि नैशली
सुपुत्री निधी निमेष झा
बेंगलौर
दिनांक 10 अप्रैल 2008
शुभाकांक्षी झा परिवार, जयपुर-आगरा

तनय नागर
10 अप्रैल
मेघनगर

विवाह वर्षगांठ की बधाई

चरित्र अर्पणा मेहता
दिनांक 14 अप्रैल
शुभाकांक्षी
गायत्री नरेन्द्र मेहता

शैशव से जीवन वृत के 60वें जन्मदिवस की बधाइयां
5 अप्रैल 2010
श्रीमती अंजना गणेशराम
पुराणिक
आशीष बधाई के साथ
पी.आर. जोशी परिवार
528 उषा नगर एक्सटेंशन, इंदौर

My Parents
GOLDEN JUBLEE
of marriage is on
16.04.2010.
VINAYACK RAM DAVEY and ASHA DAVEY
Residence of -B-187,PRASHANT VIHAR,ROHINI DELH-85.
With Regards
Tarun Davey [son]

वैवाहिक

युवती

कु. जूही अनिल मेढ़
उम्र 23 वर्ष
शिक्षा बी. कॉम, सीएस (दिल्ली) कार्यरत दिल्ली में
सम्पर्क कु. वीणा मेढ़
2/2, पीडब्ल्यूडी फ्लैट हैवलक रोड, कॉलोनी लखनऊ
मो. 9839215830
9839412119
9454147883

युवक

अक्षय राजेन्द्रकुमार जोशी

जन्म दि.
21-05-1982
प्रातः 6-11 मुंबई
शिक्षा बी.ई. (इलेक्ट्रानिक्स व टेलीकॉम) पीजी डीबीसीएम (अध्ययनरत पुणे)
कार्यरत - ट्रेनिंग इंजीनियर
सम्पर्क 022-28903065,
09819809887

हिमांशु सोहनलाल मिश्रा

(तलाक शुदा)
जन्म दि. 13 अक्टूबर 1971
प्रातः 5.30 जयपुर (राज.)
शिक्षा - बीएससी, पीजीडीसीए, एमबीए
कार्यरत असिस्टेंट मैनेजर
सम्पर्क – बी 226 विवेकानंद कॉलोनी उज्जैन
फोन 0734-2551990

निमिष नंदकिशोर नागर

जन्म दि.
28-01-1081
1.55 ए.एम.
कोटा
शिक्षा एमसीए
कार्यरत स्टेट बैंक में
सम्पर्क 452, बसंत विहार
कोटा (राजस्थान)

मो. 94134 40721,
9462836735

गौरांग पी.जी. रावल

जन्म दि.
28-12-1984
12.30 पी.एम.
भोपाल
शिक्षा
बी. फार्मेसी, एम.बी.ए
कार्यरत लेक्चरार-फार्मेसी कॉलेज राजकोट
सम्पर्क -16 गोपाल अपार्टमेंट घाटलोढिया मध्यवृंद सोसायटी के पीछे, अहमदाबाद (गुज.)
फोन -079-27488828,
09016773527

नितिन श्रीकांत झा
जन्म दि. 2-03-1982
5.47 पीएम. मिर्जापुर
शिक्षा - एम.बी.ए.
कार्यरत -गुडगांव में बैंक में
सम्पर्क - 28/206 गोकुलपुरा आगरा
फोन 0562-2854834
मो. 9412262549

Piyush Nagar
S/o :Mr. Manohar Nagar, **Birth Date:** 8th Feb 1985,Birth Time:3:05PM,Birth **Place:**Gwalior,
Details of Education: Engineering (Electronics with Telecommunication)
Occupation: Service,
Annual Income: 300000-400000,
Height:5'10,
Weight:65,
Contact No: 09229433558 / 09300822567,

वाद-विवाद प्रतियोगिता-8

क्या पढ़ाई-कैरियर के चक्कर में विवाह में विलंब उचित है?

उपरोक्त विषयक प्रश्न आज ज्वलंत मुद्दे की तरह हमारे समक्ष विद्यमान हैं। वाद-विवाद का यह अनूठा विषय है - तथा मेरे तर्कों के अंत तक जाते-जाते आप भी किस हद तक इस विषय पर सहमत होंगे- पहले की बातऔर थी जब ग्रेज्युएशन एवं पोस्ट ग्रेज्युएशन तक पढ़ाई की सीमा थी तथा इस पड़ाव पर पहुंचते या उसके पहले ही अच्छी नौकरी की व्यवस्था हो जाती थी। अब नए-नए कोर्सेस हैं तथा उनमें अधिक वर्ष लगते हैं। पढ़ाई के दौरान जब अच्छे रिश्ते आते हैं तो अभिभावक उन्हें यह कहकर टाल देते हैं कि अभी तो बच्चा पढ़ रहा है। किंतु पढ़ाई एवं नौकरी तक पहुंचते-पहुंचते कई युवक-युवतियों की उम्र बढ़ जाती है तथा उन्हें तब मनपसंद रिश्ते नहीं मिल पाते हैं। दूसरी बात यह है कि कैरियर के नाम पर जो युवतियां खूब पढ़ाई करती हैं उसका उपयोग होना चाहिए, यह बात सच है कि आज के जमाने में अन्य मानवीय गुणों के बजाय युवक-युवती को अच्छी पढ़ाई या नौकरी के तराजू में तौला जाता है। मैंने कई लड़कियां देखी हैं, जिन्होंने खूब पढ़ाई की, उस पढ़ाई की बदौलत उनके रिश्ते तो अच्छे हो गए, परंतु शादी के बाद वे गृहस्थी में रम गई तथा उनकी उच्च शिक्षा किसी काम नहीं आई। आमतौर पर लड़के-पढ़ाई के मामले में फिसड्डी रहते हैं तथा अधिक पढ़ाई न कर पाने के कारण उन्हें छोटी नौकरी या स्वयं के व्यवसाय से संतोष करना पड़ता है। दूसरी तरफ लड़कियां अच्छी पढ़ाई कर अच्छा जॉब हासिल करने में सफल हो जाती हैं। अब सवाल यह है कि कम पढ़े व्यवसाय में लगे लड़कों के विवाह हेतु लड़कियां कहां से आएंगी? ग्रामीण क्षेत्र के हालात भी कमोबेश यही हैं, लड़के या तो खेती कर रहे हैं या पंडिताई। उनको पढ़ी-लिखी लड़की कौन देगा? ये सब असमानताएं समाज में बढ़ रही हैं। लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाना बहुत अच्छी बात है, परंतु उस कीमत पर विवाह में विलंब उचित नहीं। मैंने देखा है कि येन-केन प्रकारेण किसी समाजबंधु ने योग आने पर विवाह को टाल दिया और बाद में विवाह संबंध के लिए वे बहुत परेशान हुए। वर्तमान आवश्यकता है कि पति-पत्नी दोनों रोजगार करें, परंतु कई बार उच्च शिक्षा के बावजूद लड़कियों को गृहस्थी में ही संतोष करना पड़ता है । तो ऐसे समय वह पढ़ाई बेकार हो जाती है। इसी प्रकार यदि जमा-जमाया व्यवसाय लड़का करता है तथा वह कम पढ़ा-लिखा है तब भी विवाह संबंध करते समय उसकी पढ़ाई को महत्व नहीं दिया जाना चाहिए, कई बार अधिक पढ़ी लड़की और कम पढ़े लड़के के बारे में हीन भावना का प्रश्न उठाया जा सकता है, किंतु इसके कई अपवाद भी देखे जाते हैं। जहां तक लड़के की पढ़ाई, नौकरी या व्यवसाय का प्रश्न है तो समझौता करना उचित नहीं है, क्योंकि धनार्जन कर घर चलाना उसका कर्त्तव्य है, किंतु लड़कियों के मामले में सोच को बदलना होगा ऐसा नहीं है कि लड़कियों को कम पढ़ाने या उन्हें आत्मनिर्भर बनने की मैं विरोधी हूं, किंतु लड़की के पढ़ते-पढ़ते कोई अच्छा रिश्ता आ जाए तो वह कर लेना चाहिए। उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का जिद में विवाह की वास्तविक आयु निकाल देना उचित नहीं है। साथ ही अच्छे संबंध के लिए पढ़ाई को ही मापदंड बनाना भी उचित नहीं है। विवाह संबंध बनाते समय अच्छे गुणों को भी महत्व दिया जाना चाहिए, साथ ही अच्छे व्यवसाय में रत युवक को पढ़ी-लिखी युवती के रिश्ते भी अनुचित नहीं।

संपादक

बगैर दबाव के कैरियर बना सकते हैं

उचित है। उचित है। उचित है। यदि आप का मन मस्तिष्क पढ़ाई के माध्यम से कैरियर बनाने में लगता है तो आप बिना किसी दबाव के पढ़ाई के माध्यम से अपने कैरियर को ही बनाएं इसके कारण यदि विवाह में विलंब भी होता है तो होने दीजिए। यहां यह स्पष्ट करना चाहूंगी कि ऐसे होशियार लोगों को पढ़ाई के माध्यम से कैरियर बनाने का अवसर विवाह के बाद संभव नहीं हो पाएगा। ऐसे ही मौकों पर विवाह उपरांत शिक्षण जारी रख पाने का अवसर विरले परिवारों में ही संभव है। अतः विवाह पूर्व शिक्षण के माध्यम से कैरियर बना लेना उचित है। यदि आपका कैरियर बन गया है तो विवाह तो निश्चित किसी न किसी प्रतिभावान परिवार में हो पाना संभव हो जाएगा।

फूल है। आदत है। रिश्तों का बंधन है।
आप सभी को प्यारी सी अवनी दीवान
का हार्दिक अभिनंदन है।

सधन्यवाद (सनमस्ते)
अवनी दीवान
248, हाटकेश्वर वार्ड खंडवा (म.प्र.)
कक्षी 9वीं
फोन नं. (0733) 2223067

वाद-विवाद प्रतियोगिता-8

मानवीय गुणों के बजाय डिग्री को महत्व

पुराने जमाने में विवाह संबंध अच्छा घर, परिवार एवं संस्कारित बच्चों को देखकर किए जाते थे। तब उम्र, शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय, कमाई पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता था। बड़ों के लिए गए निर्णय को सर्वोपरि मान कर किसी भी तरह का अभाव, पारिवारिक जवाबदारियां व अन्य परेशानियों के साथ भी जीवन व्यतीत हो जाता था।

लेकिन अब परिस्थितियां बदल गई हैं तथा शिक्षा के मायने भी बदल गए हैं। पहले संस्कारित होना, मिलनसार होना तथा अन्य मानवीय गुण होना शिक्षा में शामिल थे। लेकिन अब शिक्षा को डिग्री से तौला जाता है। लड़का या लड़की देखने के पूर्व उसकी डिग्री या शैक्षणिक योग्यता सबसे पहले देखी जाती है। उसके बाद अन्य गुण देखेजाते हैं। अतः स्वाभाविक है कि लड़के, लड़कियां डिग्री को ही प्राथमिकता देंगे। बदले परिवेश, काम्पिटिशन एवं इस भौतिक युग में अपने आपको स्थापित करने के लिए समय के अनुसार चलना भी जरूरी है।

विषय के अनुसार शिक्षा और कैरियर दो अलग-अलग बिंदु हैं। इन्हें एक साथ नहीं रखा जा सकता। शिक्षा को हम अनिवार्यता की श्रेणी में रख सकते हैं, जबकि कैरियर को एच्छिक रखा जा सकता है। शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य होने के कई कारण हैं-

1. समय के अनुसार सबसे कंधा मिलाकर चल पाना।
2. बच्चों को आत्मनिर्भर बनाना।
3. उम्र तथा ज्ञान में परिपक्व होना।
4. शारीरिक, मानसिक व आर्थिक रूप से सक्षम होना।
5. किसी भी विपरीत परिस्थिति में अपने पैरों पर खड़े हो सकना।
6. अपनी योग्यता का विस्तार करना।
7. परिवार, समाज व देश का गौरव बढ़ाना।
8. भावी पीढ़ी को प्रशिक्षित कर पाना।

जब लड़के व लड़कियों को समानता का दर्जा दिया जाता है । उनके रहन-सहन एवं शिक्षा में कोई भेदभाव नहीं किया जाता है। 10वीं कक्षा में आने तक बच्चे अपनी क्षमता के अनुसार अपना लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं कि उन्हें किस क्षेत्र में जाना है? तथा क्या बनना है?

सभी बड़े एवं माता-पिता बच्चों को उच्च लक्ष्य निर्धारण की सलाह देते हैं, उन्हें प्रोत्साहित करते हैं व उनका मार्ग प्रशस्त करते हैं। बच्चे भी पूर्ण लगन व मेहनत से लक्ष्य तक पहुंचने के लिए जुट जाते हैं। तब उनसे विवाह की बात करके उन्हें विचलित करना ठीक नहीं है।

अतः शिक्षा पूर्ण होने के बाद ही विवाह की बात की जाना चाहिए।

जहां तक कैरियर का प्रश्न है। कैरियर का अर्थ है अपनी इच्छानुसार जॉब या व्यवसाय में तय लक्ष्य तक पहुंचना।

आज के समय में हर व्यक्ति अपने कैरियर को ऊंचाई पर पहुंचाने में लगा हुआहै। लड़कियां भी अपने कैरियर के प्रति सजगहैं। कई बार वे अपने कैरियर को ही सर्वोपरि मानने लगती हैं। परंतु भारतीय संस्कृति के अनुसार परिवार के लिए महिला व पुरुष दोनों वर्ग की जिम्मेदारियां अलग-अलग होती हैं।

यदि लड़कियां भी कैरियर को ही प्राथमिकता देंगी तो उनके लिए लड़का ढूंढने में अधिक शर्तें होंगी। उचित वर नहीं मिलने पर विवाह में विलम्ब तो होगा ही अन्य कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ेगा।

लड़की अपने कैरियर को परिवार से अधिक महत्व देने लगी तो पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वाह ठीक से नहीं हो पाएगा। कई बार घर व कैरियर में सामंजस्य न होने के कारण घर बिखर जाता है। जबकि घर-परिवार को सही तरीके से चलाने के लिए कैरियर की आवश्यकता है। लेकिन लड़कों के लिए परिस्थिति बदल जाती हैं।

अतः लड़कियों के लिए कैरियर के चक्कर में रुककर विवाह में देरी उचित नहीं।

अल्पना दवे
259 सी राजेन्द्र नगर, इंदौर 2321470

आगामी वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय है ।

क्या अपने अन्य उपनाम के साथ (नागर) लगाया जाए।

वाद-विवाद प्रतियोगिता 7 के विजेता
उत्सव विभाष मेहता, रतलाम

आकाशवाणी

हे अपने मन के स्वामी मनुष्यों जागों ओर अपने दैनिक जीवन के कर्मों पर सतत निगाहें रखो कि आप द्वारा किस प्रकार से कर्म हो रहे हैं। जो लोग आपको देखकर आपके पीछे चल रहे हैं, उनकी सतत दृष्टि आपके प्रत्येक कदम (कर्म) परलगी हुई होती है। और वे भी वैसे ही चलने का प्रयास करते रहते हैं।

क्या आप अपने पीछे आने वालों के लिए सत्य का मार्ग, ईमानदारी, सद्विचार, सद् व्यवहार सतकर्म आदि अपनाकर अपना दैनिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं? यदि नहीं तो आप भटक रहे हैं तथा प्रतिफल के लिए भी तैयार रहना ही पड़ेगा। क्योंकि प्रकृति का कठोर नियम है कि जैसा यहां बीज बोया जाएगा, वही फसल यहां प्राप्त की जा सकेगी, चाहे फिर वह कर्म रूपों का बीज हो या जमीन से फल प्राप्त करने वाला बीज। प्रकृति के नियमानुसार ही फल प्राप्त किया जा सकेगा। क्योंकि मूल तत्व को कोई बदल नहीं सकता, यही सत्य है।

यदि सत्य को जीवन में नहीं अपनाया गया तो निश्चित ही विनाश को खुला आमंत्रण स्वयं ही देंगे। सब जानते हैं, ईश्वर की लाठी में आवाज नहींहोती। जैसा आप संसार में आये हैं वैसे ही अन्य भी आ रहे हैं, कोई जा रहे हैं। जब आप संसार में आये हैं तो आपकी यह नैतिक जवाबदारी बनती है कि आप आने वाले लोगों के लिए अच्छे सुखदायी मार्ग का निर्माण करें। नये वर्ष का प्रारंभ भी ग्रहण से हुआ है, जो व्यक्ति को जगाने की प्रकृति का संकेत है।

सत्य से जुड़ना, सद् मार्ग अपनाना, सद् विचार अपनाना आदि अति आवश्यक है, धीरे-धीरे अपने में समाई बुराई को त्याग कर सतमार्ग, सद् विचार अपनाएं एवं आने वाली पीढ़ी के लिए सदमार्ग का निर्माण करने में जी जान से जुट जाएं।

प्रेरणा ईश्वर ज्योति है, जो सात्विक प्रकृति के महापुरुषों को अपना जीवन कार्य करने का आदेश एवं उत्साह देती है। (जय हा. वाणी से)

नव वर्ष सबके लिए मंगलमय हो।
जय भगवान श्री हाटकेश
जय भारत

सुरेन्द्र शर्मा
106, अलकापुरी, देवास (म.प्र.)
मो. नं. 9303228767

व्यंजन विधि प्रतियोगिता-7

हमारे प्रतीक चिन्ह में कलम, कड़छी और बरछी के निशान हैं। अतः हमें व्यंजन बनाने में माहिर होना चाहिए। जय हाटकेश वाणी द्वारा आयोजित व्यंजन विधि प्रतियोगिता में देशभर से प्रविष्टियां प्राप्त हो रही हैं। व्यंजन विधि प्रतियोगिता ६ की विजेता रही हैं श्रीमती साधना अशोक नागर जयपुर। आगामी प्रतियोगिता का विषय है आम। तो तैयार हो जाइए और २५ अप्रैल से पहले विधि लिख भेजिए।

शकरकंद के मीठे पराठे

सामग्री- 250ग्राम शकरगंद उबले हुए, 1 कप राजगिरे का आटा, आधा कप सिंघाड़े का आटा, 4-5 पिसी इलायची, आधा कप नारियल किसा हुआ, आधा कप पिसी शक्कर, घी आवश्यकतानुसार।

विधि- शकरकंद छीलकर मैश कर लें, राजगिरे के आटे में सिंघाड़े का आटा, किसा नारियल, शकरकंद, पिसी इलायजी, शकर एवं दो बड़ेचम्मच घी डालकर आटे की तरह गूंध लें अब इस गूंधे आटे को पराठे की तरह बेलकर दोनों तरफ घी लगाकर सेंक लेंएवं रमा-गरम सर्व करें।

सोनाली पंडित
43-सी पार्श्वनाथ नगर, इंदौर
मो. 99772-35009

फलाहारी पेटिस

सामग्री- 250 ग्राम साबूदाने, 500ग्राम आलू, 2 हरी मिर्च पिसी हुई, 1 नीबू, 100 ग्राम मूंगफली के दाने क्रश किए हुए, 10ग्राम दालचिनी, लोंग का पावडर, 50 ग्राम राजगिरे/सिंघाड़े का आटा, नमक स्वादानुसार, चीनी स्वादानुसार

विधी- साबूदानों को 2-3 घंटे भिगोकर रखें। आलू को उबालकर छीलकर मेश कर लें, उसमें सभी मसाले दालचीनी, लोंग का पावडर व मूंगफली के दाने डालें एवं साबूदाने डालकर अच्छी तरह मिला लें।इसमें राजगिरे या सिंघाड़े का आटा डालकर छोटे-छोटे पेटिस बना लें एवं तेल में हल्के गुलाबी रंग का तलकर गर्म-मर्ग धनिये या पुदीने की चटनी के साथ सर्व करें।

सीमा पंडित
43-सी पार्श्वनाथ नगर, इंदौर
मो. 98264 35009

आलू चाप

सामग्री- आलू 250 ग्राम, सिंघाड़ा आठा 100 ग्राम, तेल तलने के लिए, सेंधा नमक, लाल मिर्च पावडर 1 चम्मच, जीरा 1 चम्मच, हरा धनिया बारीक कटा हुआ, हरी मिर्च 3-4, नींबू 1।

विधि- आलू को उबालकर, छीलकर मेश कर लें। उसमें नमक, मिर्च, हरा धनिया, जीरा, हरी मिर्च (बारीक काटकर) तथा नींबू का रस डालकर मिलाएं। मिश्रण की छोटी-छोटी गोलियां पेड़े के आकार में बना लें।

सिंघाड़े के आटे में नमक (स्वादानुसार) व पानी डालकर घोल बना लें। कढ़ाई में तेल गर्म करें। आलू की तैयार टिकिया को घोल में डुबोकर कढ़ाई में छोड़ दें। सुनहरा होने तक तलें। स्वादिष्ट कुरकुरी, गर्म-गर्म आलू चाप को हरी चटनी के साथ सर्व करें।

अंकिता दवे
259 सी राजेन्द्र नगर, इंदौर
फोन 2321470

लौकी के मुठिए

सामग्री- लौकी 250 ग्राम, सिंघाड़ा आटा 100 ग्राम, राजगिरा आटा 100 ग्राम, मोर्धन का आटा 200 ग्राम, सेंधा नमक, लाल मिर्च पावडर 2 चम्मच, जीरा 1 चम्मच, हरी मिर्च 3-4 (बारीक कटी हुई), हरा धनिया बारीक कटा हुआ। नींबू 1, मुंगफली दाने का चुरा 50 ग्राम, घी 2 चम्मच

विधि- लौकी को धोकर किस लें व उसे हाथ से दबाकर उसका रस निकाल दें। क्योंकि ज्यादा रस होने पर मुठिये नरम बनते हैं। अब गुदे में सभी आटे व मसाला मिला लें। इसके मुठिये बना लें। कढ़ाई में घी गर्म करें व उसमें मुठिये डालकर धीमा आंच पर ढंककर 20-25 मिनट तक पकाएं। बीच में हिलाते रहें। अब ढक्कन खोलकर पांच मिनट तक कुरकुरा कर लें। गर्म-गर्म मुठिए हरी चटनी व दही के साथ सर्व करें।

अल्पना दवे
259, सी राजेन्द्र नगर, इंदौर

साबुदाने के बड़े

सामग्री- 100 ग्राम साबुदाने, 500 ग्राम आलू, 50 ग्राम कुट्टू का आटा, 50 ग्राम मूंगफली के दाने, हरा धनिया थोड़ा, 3-4 हरी मिर्च, काली मिर्च पिसी हुई, सेंधा नमक स्वाद के अनुसार 250 ग्राम तेल

विधि- पहले साबुदाने 2 घंटे भिगो लें। आलू उबालें व उसे छीलकर मैश कर लें। साबुदाने का पानी निथार लें, मूंगफली के दाने सेंककर दरदरा सा पीस लें। अब आलू साबुदाने, मूंगफली पिसी हुई व कुट्टू का आटा मिलाकर उसमें हरी मिर्ज,सेंधा नमक पिसी हुई काली मिर्च स्वाद के अनुसार डालें। इन सबको मिक्स करके छोटी-छोटी टिकियाएं बनाएं, फिर इसे कढ़ाई में तेल डालकर तल लें। लीजिए साबुदाने के बड़े तैयार हैं।

श्रीमती साधना नागर

फ्रूट कस्टर्ड

सामग्री -2 किलो दूध, 100 ग्राम कस्टर्ड पाउडर, 1 एप्पल, 4 चीकू, 250 ग्राम अंगूर, 1 अनार, 1 किलो केले, 1 छोटा पपीता 250 ग्राम शक्कर

विधि- एक कप दूध में कस्टर्ड पावडर फेंट लें फिर इसे शक्कर वाले दूध में मिला दें, इसे गरम करने के लिए चढ़ा दें और चलाते रहें, गर्म होने पर गैस बंदकर दें। ठंडा होने पर इसे फ्रीज में रखें। ठंडा होने पर इसमें सभी फलों के छोटे-छोटे पीस करके डाल दें, लीजिए ठंडा फ्रूट कस्टर्ड फलाहारी तैयार है।

श्रीमती व्योमा नागर

आलू का हलवा

सामग्री- आलू, शक्कर, घी, दूध, इलायची आवश्यकतानुसार।

विधि-आलू आधा किलो उबालकर मेश कर लें 1 टेबल स्पून घी कढ़ाई में डालकर मेश किए आलू को अच्छी तरह सेक लें। थोड़ा ब्राउन होने पर एक पाव शक्कर डालें तथा सेकें। उसमें थोड़ा दूध का छींटा देकर इलायजी पावडर डालकर फिर से थोड़ा सेक लें, फिर सर्व करें।

गायत्री मेहता,इंदौर
मो. 9407138599

नमकीन फरियाली मगरा

सामग्री- सिंघाड़े का आटा, मूंगफली का भूरा, नमक, शक्कर, घी, हरी मिर्च, जीरा, हरा धनिया पानी

विधि- पहले कढ़ाई में एक चम्मच घी डालें। गरम होने पर जीरा, हरी मिर्च, कटी हुई डालें।

पश्चात उसमें सिंघाड़े का आटा डालकर थोड़ा सेक लें। फिर हिलाएं उसमें थोड़ी शक्कर, नमक, नींबू का रस डालें, फिर अच्छी तरह से खोंचा चलाएं। फिर उसमें हरा धनिया, ऊपर से डालें और हल्का पानी का छींटा देकर सर्व करें।

निशा झा (कोलकाता)

सिंघाड़े के शकरपारे

सामग्री- 500 ग्राम सिंघाड़े का आटा, 100 ग्राम मूंगफली का तेल मोयन के लिए, 100 ग्राम सफेद तिल भुनेहुए, स्वाद के अनुसार सेंधा नमक, स्वाद के अनुसार लाल मिर्च पावडर, तलने के लिए मूंगफली का तेल

विधि- भुने तिल को कूट लें। सिंघाड़े के आटे में कुटे तिल, मोयन का तेल, नमक, लाल मिर्च पावडर डालकर पानी से आटा बांध लें। मसलकर सार कर लें।आटे की बड़ी लोई लेकर चकले पर सिंघाड़े के आटे का पलोथन लगाकर बेल लें। थोड़ा मोटा रखें ताकि शकर पारे पतले न बनें, बड़ीरोटी बेल कर चाकू से शकर पारे के आकार में काट लें। कढ़ाई में तेल गर्म करके मध्यम आंच पर तलें। कढ़ाई में थोड़े-थोड़े शकर पारे तले एक साथ ज्यादा डालने पर टूटने का डर रहता है। गुलाबी होने पर निकाल लें। अगर तलने में फटने व टूटने लगे तो आटे में थोड़ा और सूखा सिंघाड़े का आटा मिलाकर मल लें। आप इसकी गोल मठरी भी बना सकती हैं।

दर्शना दवे
अलीगढ़

लघु कथा

जिंदगी

असावरी और रवि छुट्टियों में पहाड़ पर घूमने गये थे। घूमते-घूमते वे पहाड़ के शिखर पर पहुंच गये। रवि ने आदतन शरारती लतीफा सुनाया, तो असावरी के मुंह से बेसाख्ता हँसी निकल गयी, ओ होहो हो हाहा...। अगले ही क्षण उसके आश्चर्य का ठिकाना न था जब उसे पहाड़ से कहीं ठीक वैसी ही हंसी की आवाज आते हुए सुनाई दी। जैसे कोई उसकी हँसी के प्रत्युत्तर में खिलखिला रहा हो।

जिज्ञासा से भरकर वह खूब तेज आवाज में पूरी ताकत से चिल्लाई, तुम कौन हो?

तभी आवाज आई, तुम कौन हो?

वह फिर तेज आवाज में बोली, मैं आज बहुत खुश हूं।

उधर से भी आवाज आई- मैं आज बहुत खुश हूं।

अपने शब्दों की नकल होते देख असावरी नाराजी से तेज आवाज में बोली, तुम बड़े बदतमीजहो।

तत्काल उत्तर मिला- तुम बड़े बदतमीज हो।

असावरी ने रवि की ओर देखा और बोली - है न ये प्रकृति का अद्‌भुत चमत्कार।

अब रवि ने जोर से कहा- तुम लाजवाब हो, बहुत सुंदर और लाजवाब।

उधर से भी आवाज आई- तुम लाजवाब हो...।

असावरी लोग इसे 'इको' कहते हैं, पर वास्तव में यह जिंदगी है। जो भी हम कहते या करतेहैं, वही यह हमें वापस लौटा देती है। कहते हुए रवि ने असावरी का हाथ थाम लिया। अभिभूत से दोनों बहुत देर तक प्रकृति के सौंदर्य में खो गए।

आशा नागर
सी -12/9, ऋषि नगर, उज्जैन
फोन - 2521157

जीवन में प्रत्येक परिस्थिति में शांत धैर्यवान रहें

1. भाग्य तथा कर्म का संयोग होने से मनुष्य के जीवन में उन्नति तथा इच्छित फल की प्राप्ति होती है।
2. जीवन में पारिवारिक सुख-शांति अनुकूलता से ही मिलती है, यह जीवन के रेगिस्तान में अमृत कुंड के समान है।
3. दूसरों को दिये गये वचन के प्रति कटिबद्ध रहें। संकल्प लेने के बाद उसे पूर्ण करने पर ही जीवन की सफलता है।
4. संकटों से मुक्ति तभी संभव है, जब आपकी इच्छाशक्ति प्रबल हो।
5. धर्म का अर्थ है खुद को जानना, स्वयं के स्वभाव से अवगत होना, अपने असली स्वभाव में जीना। जब तक अपने स्वयं को नहीं जानेंगे तब तक धर्म रूपी नंदीगण को नहीं जान सकते।
6. शंकराचार्यजी ने कहा है - ज्ञान युक्त मनुष्य ही भगवान रूप है। अज्ञान रूपी मनुष्य राक्षस है।
7. एक ही सौंदर्य शाश्वत है करुणामय मुक्त हृदय
8. जीवन में हर स्थिति में शांत रहो, तनाव से जीवन की सार्थकता नष्ट होती है।
9. इच्छाओं पर नियंत्रण रखने वाला सदा आनंद से जीता है।

पंचदश जीवन सूत्र

10. परिस्थितियों का आकलन करें, विपरीत परिस्थितियों में विचलित न हों, परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करें।
11. विद्वान व्यक्तियों के अवगुण नहीं देखें, उनके सतगुणों को आत्मसात करें।
12. चित्त को सदा शुद्ध रखें, मन में भरी मलीनता लिए ईश्वर आराधना से कोई लाभ नहीं मिल सकता।
13. तृष्णा, आसक्ति तथा उत्तेजना से सदा दूर करें।
14. तटस्थता तथा सहिष्णुता से मन को अपार शांति मिलती है।
15. दूसरों की सम्पन्नता देखकर अपने विचार कलुषित न करें। दूसरों के दुःख दर्द में सहभागी बनकर अपना विश्वास स्थित रखते हुए अपने महत्व की शाखाओं में पल्लवित पत्र व पुष्प का आनंद लेवें।

प्रस्तुत कर्ता
डॉ. नवीनचंद्र रावल
155, तुलसी नगर,इंदौर

नर्स– आपको जुड़वां बच्चे हुए हैं, बधाई।

जय - ये तो होना ही था। क्योंकि मेरी बीवी प्रोग्राम ही ऐसे देखती थी, केबीसी पार्ट-2। इंडियन आइडल 2, धूम 2।

नर्स - अच्छा हुआ उसने दिल्ली 6 नहीं देखी।

अधिक मास में कुछ खास

वैशाख मास अधिमास हो,
निर्णय गणित विकास।
सुख, सुभिक्ष सुख सम्पदा,
शाशी नव उल्लास

इस वर्ष 31-3-2010 से वैशाख माह प्रारंभ होकर 14-5-2010 तक रहेगा। अधिक मास का प्रारंभ 15-4-2010 को अश्विनी नक्षत्र में गुरुवार को होगा। अश्विनी नक्षत्र के स्वामी केतु हैं। विशाखा नक्षत्र में चंद्रमा स्थित होने से वैशाख मास कहलाता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी गुरु है। अतः इस अधिक मास में गुरु माता-पिता की सेवा करना चाहिए।

पुरुषोत्तम मास बड़ा ही पावन व दिव्य मास है। इसे अधिक मास, मलमास भी कहते हैं। भगवान पुरुषोत्तम ने इसको अपना नाम देकर इसके स्वामी बन गए हैं। इस पुरुषोत्तम मास में पुरुषोत्तम भगवान की निष्ठा एवं विधिपूर्वक पूजन करने से भगवान अत्यंत प्रसन्न होते हैं।

'ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का नियमित रूप से जप करना चाहिए।इस मास में श्री विष्णु सहस्त्रनाम, पुरुष सुक्त, श्री शुक्त, हरिवंश पुराण, एकादशी महात्य, भागवत पुराण, गीता के 15वें अध्याय का अर्थ सहित नित्य पाठ करें एवं श्रवण करें। सभी मनोरथ पूर्ण होंगे।

घट स्थापना करना चाहिए। श्री शालीग्राम भगवान की मूर्ति स्थापित कर पूजा स्वयं करें या योग्य ब्राह्मण से करावें। सवा लाख तुलसीदल पर चंदन से ऊँ लिखकर भगवान शालीग्राम को अर्पण करना चाहिए। इसकी महिमा अपरंपार है। नित्य प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व उठकर स्नानदि से निवृत्त होकर

गोवर्धनधरं वंदे गोपालम गोप रुपिणम्।
गोकुलोत्सवमीशानं गोविन्दम् गोपिका प्रियम्।

मत्र का जाप कर पूजन करें। पूजा करते समय नीलवसना परम द्युतिमती भगवती श्रीराधाजी के सहित नव-नील-नीरद, श्याम धन पीत वस्त्रधारी द्विभुज मुरलीधर -पुरुषोत्तम भगवान का ध्यान करना चाहिए। पुरुषोत्तम महात्मय में श्री कौण्डिल्य ऋषि कहते हैं-

ध्यायेन्नवधन श्यामं द्विभुजम् मुरलीधरम्।
लसत्पीतपरं रम्यं सराधं पुरुषोत्तम॥

गोओं को घास दान करना चाहिए। ब्राह्मणों को भोजन, वैष्णव को यथा शक्ति वसु-सोना, चांदी, गाय, घी, वस्त्र, पात्र, छाता, गीता, भागवत का दान करना चाहिए। कांसे के बर्तन में तीस मालपुए रखकर ब्राह्मण वैष्ण को दान करने वाला अक्षय पुण्य का भागी होता है।

अधिक मास में एक छोटासा उपाय यदि प्रति दिन करें तो आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। इसके लिए प्रतिदिन किसी श्री हनुमान मंदिर में एक पान के पत्ते पर पांच इलायची, पांच लोंग, पांच काली मिर्च रखकर एक दीपक जलाएं। फिर हाथ जोड़कर ग्यार बर ऊँ नमः शिवाय का जाप करें। यदि स्त्री साधक है तो केवल नमः शिवाय मंत्र बोलें।

अधिक मास की दोनों शिवरात्रि प्रथम 12 अप्रैल 2010, दूसरी 12 मई 2010 को शाम को सूर्यास्त के पश्चात किसी भी शिवालय (श्री हाटकेश्वर मंदिर) में 24 देशी घी के दीपक पान के पत्ते पर रखकर जलावें। साथ ही मंत्र ऊँ नमः शिवाय का जाप करें। अधिक मास में मंगलवार को शिवलिंग पर शहर अर्पित करने तथा शहद का दान करने से मंगल दोष शांत होकर मंगल होने लगता है।

अंत में पुरुषोत्तम मास में पुरुषोत्तम को जानने की श्रद्धा रखते हुए जो प्रयत्नपूर्ण व्रत करता है वास्तव में वही सच्चा भजनन, भाव भक्ति और मुमुक्षुता है। अतः पुरुषोत्तम तत्व को समझना और उसका भजन करना चाहिए। श्रद्धा-भक्तिपूर्ण भगवान का नाम जप, कीर्तन, सत्यंग, यज्ञ, हवन, दान पुण्य, दीनसेवा, तीर्थ यात्रा, आर्त सेवा, गोरक्षा, कथा श्रवण, पूजा-पाठ आदि नियमों का आचरण पालन करना चाहिए।

इस कालावधि में विवाह, मुंडन, गृहारंभ, गृह प्रवेश, यज्ञोपवित, नवीन आभूषण बनवाना, नया वाहन खरीदना आदि वर्जित है।

आचार्य पं. संतोषकुमार व्यास
10, बीमा नगर, इंदौर

महायोगी और महाभोगी

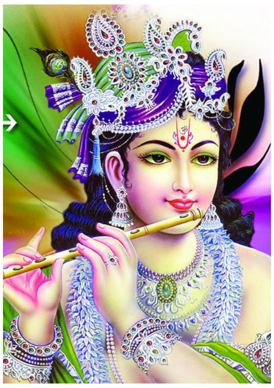

श्रीकृष्ण की कथा में शुकदेवजी जैसे महायोगी और राजा परीक्षित जैसे महाभोगी को एक साथ आनंद मिलता था। इसका कारण यह है कि श्रीकृष्ण महायोगी भी थे और महाभोगी भी थे।

सामान्यतया योग और भोग साथ-साथ चल नहीं सकते। योगी यदि भोगने जायेगा तो रोगी हो जायेगा, परंतु श्री कृष्ण चरित्र में योग और भोग का बड़ा भारी समन्वय था।

सोलह हजार एक सौ आठ रानियों के बीच में बैठने वाले श्रीकृष्ण महाभोगी थे और बड़े योगियों के बीच में बैठने वाले श्रीकृष्ण महायोगी थे। सोलह हजार एक सौ आठ स्त्रियों के स्वामी होते हुए भी उनके चित्त में काम का स्पर्श नहीं था, ब्रह्मचारी भी थे। इसलिए श्रीकृष्ण संसारियों को भी अच्छे लगते थे और सन्यासियों को भी प्यार करते थे।

जय श्री कृष्ण
संतोषकुमार व्यास
भागवत प्रसादी

विरह व्यथा

विरह सहयो नहीं जाय,
दयालु माँ से विरह सहयो नहीं जाय
प्रीत जोड़ मोसे मुंह मत मोड़ो।
जनम-जनम की प्रीत न तोड़ो।
जीवड़ो यो आस लगाय,
दयालु मो से विरह सहयो नहीं जाय।
मोत देने पर पीठ न देना
दरसन को मेरे तरसे नैना
तुम बिना रहयो न जाय
दयालु मो से विरह सहयो नहीं जाय
पीपल फड़के, जूं जीवड़ो तड़फे
काली घटा जूं बिजली कड़के।
तड़फ-तड़फ कर मर जाय
दयालु मोसे विरह सहयो न जाय
मन की पीड़ा मन ही जाने
सांच कहूं तो भी जग नहीं माने
नयना नीर बहाय
दयालु मो से विरह सहयो नहीं जाये।

रमेश रावल
डेलची (माकड़ोन)

जो नियाग्रा फाल देखने नहीं जा सकते
वे केदारनाथ चले जाएं...

मानदण्ड भू के अखण्ड हे,
पुण्य धरा के स्वर्गारोहण (हिमाद्री-पंत)

उपरोक्त पंक्तियां ' सुमित्रानंदन पंतजी' ने हिमालय के विषय में लिखी हैं। उन्होंने हिमालय की सुरम्य और वैभवशाली प्रकृति की गोद में जन्म लिया अतः हिमालय का सौंदर्य वर्णन बहुत ही सहज और सुंदर ढंग से किया है। बचपन में मैंने भी हिमालय के विषय में बहुत कुछ सुना और पढ़ा है, उसकी कल्पना मात्र से ही रोमांच हो आया करता था कि खिड़कियों के रास्ते बादल कैसे घरों में घुस आया करते होंगे या बर्फ के पहाड़ कैसे लगते होंगे। यही सोचा करता था कि जिंदगी में कभी यह सब देखने को मिलेगा की नहीं। अतः पिछले महीने 2 अक्टूबर को जब बद्री-केदारनाथ की यात्रा का सौभाग्य मिला और प्रकृति के इस अप्रतिम सौंदर्य को देखा तो पहले प्रभु का धन्यवाद किया फिर बरबस मुंह से निकला कि अगर स्वर्ग कहीं है तो यही हैं। पंतजी की पंक्तियां याद आईं-

शुभ्र शांति में समाधिस्थ हे
शाश्वत सुंदरता के भूभृत
तुम्हें देख सौंदर्य-साधना
महाश्चर्य से मेरी विस्मित
(हिमाद्री)

शहर की रोजमर्रा की जिंदगी आपसी द्वेषभाव, जिविकोपार्जन की आपाधापी से दूर बद्री-केदारनाथ में जाकर मुझे जो मानसिक शांति मिली उसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता, अनुभव ही किया जा सकता है। रामायण, महाभारतऔर अनेक पौराणिक ग्रंथों में कथाएं आती हैं कि बुढ़ापे में राजा अपने राजपाट छोड़कर शांति की तलाश में हिमालय की कंदराओं में तपस्या करने चले जाया करते थे, साधु-संतों के भी तपस्या करने की कथाएं आती हैं- यह सब अपवाद नहीं है। अवश्य शांति मिलती होगी।

बद्रीनाथ से करीब 15 किलोमीटर की दूरी पर 'माना' नामक एक गांव है, जो हिंदुस्तान की सीमा का अंतिम गांव है और जो चीन की सीमा से जाकर मिलता है। वहां एक व्यास गुफा नाम की जगह है- उस गुफा के अंदर अजीब सी शांति व्याप्त है, मंत्रों की ध्वनी ही कानों में पड़ती है जो अति कर्णप्रिय लगती है और वहां बैठे रहने की ही इच्छा होती रहती है। उससे थोड़ी दूर उस सरस्वती नदी का विशाल रूप देखा जो हमेशा लुप्त रहती है, साल में एक बार भाईदूज के दिन इलाहाबाद के संगम पर एक पतली धारा के रूप में दिखती है। उसकी पतली धारा का इतना विशाल रूप उसका भीषण उछाल, उसकी गूंज सब कुछ कल्पना से परे था। कहते हैं उसका जल मानसरोवर से आ रहा है। सरस्वती नदी पर एक पुल सा बना हुआ था, मान्यता थी कि इस पुल पर चढ़कर कभी भीम ने इस नदीको पार किया था इसलिए इसे भीमपुल कहा जाता है।

बद्रीनाथ-केदारनाथ की यात्रा पहले कठिन यात्राओं में गिनी जाती थी। महीनों लग जाया करते थे और जो वहां से सही सलामत आ जाता था उसे बहुत मान-सम्मान दिया जाता था, भाग्यशाली समझा जाता था, ब्राह्मण भोज भी होता था, लेकिन आज बद्रीनाथ तक तो बस ही चली जाती है, केदारनाथ घोड़ों द्वारा 4 घंटे में पहुंचा जा सकता है। हेलीकाप्टर द्वारा तो 9 मिनट ही लगते हैं। यात्रा अति सहज और सुविधाजनक हो गयी है। रास्ते में हिमालय की उन्नत शृंखला आज भी सजग प्रहरी सी लगती है। हिमालय शिखरों पर जब सुबह की सूर्य किरणें पड़ती हैं तब ऐसा प्रतीत होता है जैसे शिखरों ने स्वर्ण मुकुट पहन रखा हो- पंतजी ने लिखा है-

सोया स्वर्ग शीश धर जिस पर
तुम भारत के शाश्वत गौरव
प्रहरी से जागरित निरन्तर।

बद्रीनाथ-केदारनाथ की यात्रा पर पहले अनेक लोगों द्वारा बहुत कुछ लिखा जा चुका है- वहां के मंदिर और मूर्ति के विषय में सभी को जानकारी होगी पर मेरा जो निजी अनुभव है कि बद्रीनाथजी की मूर्ति का चुम्बकीय आकर्षण, वहां के वातावरण की शांति और सौंदर्य है वह अद्भुत और स्वर्गिक है। वहां कपूर आरती, रजत आरती और स्वर्ण आरती होती है। मुझे रजत आरती देखने का सौभाग्य मिला। इतनी शालीनता और धैर्य के साथ आरती का वातावरण पहले कभी नहीं देखा। घंटों की आवाज भी बहुत ही मधुर और कर्णप्रिय थी। ऐसा लग रहा था जैसे साक्षात भगवान मेरे सामने प्रकट हो गये हों। उस क्षण को जैसे मैं अपनी आंखों में कैद कर लेना चाहती थी। उस दिन बरसात हो रही थी, पर उस बारिश में भी अपूर्व आनंद आ रहा था। आसपास क्या हो रहा था मैं तो बिल्कुल बेखबर हो चली थी। आरती की लौ में बद्रीनाथजी के मस्तक के हीरे की आभा से पूरा वातावरण ही देदिप्यमान हो रहा था। जब दर्शन और आरती लेने का समय आया तब भी कोई भागमभाग या जल्दबाजी नहीं। आराम से दर्शन करिए। यही हाल केदारनाथ या तुंगनाथ महादेव में भी था। तुंगनाथ महादेव पंचकेदार में से एक हैं जो केदार से भी ऊंचा करीब 12 हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित हैं। यहां भी जिस श्रद्धा और मंत्रोच्चारण के साथ पूजा करवाई गई कि मन में यही इच्छा हो आई कि काश वक्त थोड़ा यहीं ठहर जाए यह सुभवसर फिर कभी मिले कि न मिले।

बद्रीनाथ से आती अलकनंदा में अनेक छोटी-छोटी नदियां आकर एक-दूसरे से मिलती हैं। इन नदियों के संगम स्थल को प्रयाग कहते हैं। विष्णु, प्रयाग, कर्ण प्रयाग आदि इसी तरह के प्रयाग हैं। कहीं अलकनंदा में कोई नदी आकर मिलती है तो कहीं अलकनंदा स्वयं मंदाकिनी से मिली है तो रूद्रप्रयाग बन गया। कहीं पर इन दोनों का जल एक साथ भागरथी में जा मिला तो देव प्रयाग। तब जाकर बनी

गंगा नदी जिसकी महिमा और महात्म्य का गुणगान प्राचीन मनीषियों ने किया है। इन नदियों के आपस में मिलते समय का फेनिल उच्छवास उनकी हुंकार ध्वनी हम जैसे सांसारिक जीवों को मस्त करने के लिए काफी थी।

झरनों की शान देखने लोग नियाग्रा फाल जाते हैं। कुछ लोगों की धारणा है कि इसकी सुंदता यूएसए की तरफ से ज्यादा अच्छी लगती है, कुछ का कहना है कनाडा की तरफ से अच्छी लगतीहै। लेकिन केदारनाथ के रास्ते में जगह-जगह झरनों का सौंदर्य और प्रकृति का अद्‌भुत रूप देखकर आत्मा तृप्त हो जाती है। मनमोहन ठाकुर ने अपनी किताब (एक नास्तिक की तीर्थ यात्रा) में लिखा है - जिन्हें नियाग्रा फाल जाने की सुविधा नहीं है उन्हें केदारनाथ जाने की पुरजोर सिफारिश करता हूं, निराश नहीं होंगे।

बद्री-केदारनाथ के बर्फ से लदे पहाड़ों का सौंदर्य तो अवर्णनीय है पर हरीतिमा से लदे पहाड़ों का सौंदर्य भी कम नहीं। बद्रीनाथ के तप्तकुण्ड की भीषण उष्णता और बाहर की सर्दी-प्रकृति की अजीब लीला थी। रास्ते में चोपटा नाम की भी जगह आई जहां के हिमाच्छादित पर्वतों को देखना भी एक रोमांचकारी अनुभव था। एक छोर से दूसरे छोर तक बर्फ के ढंके पहाड़ों की शृंखला का अनुभव भी निराला था। हम सब इतने खुश और रोमांचित हो रहे थे जैसे कोई बच्चा अपने मनपसंद खिलौने को देखकर खुश होता है। कई लोगों ने इसे मिनी स्वीट्जरलैंड की संज्ञा तक दे डाली। गलत नहीं कह रहे थे। मुझे तो पिक्चर का गाना याद आ रहा था-

हरी-हरी वसुंधरा पे नीला-नीला ये गगन
ये किसने फूल-फूल पर किया शृंगार है
यह कौन चित्रकार है यह कौन चित्रकार है।

चोपटा की हरियाली ऐसी ही थी।

अंत में मैं यही कहना चाहती हूं कि अगर किसी के पास सुविधा, साधन और समय है तो हिमालय के इन स्थानों की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। तीर्थाटन का सौभाग्य और लाभ तो मिलेगा ही अनेक रोमांचकारी उपलब्धियां भी होंगी। पंतजी ने लिखा है -

स्वर्ण खंड तुम इस वसुधा पर
पूर्ण तीर्थ, हे देव प्रतिष्ठित

बद्री-केदारनाथ यात्रा
एक निजी अनुभव
सविता (नीलू) दवे
29, शांति विहार, दिल्ली

धारावाहिक भाग-६ दाम्पत्य जीवन के स्वर्ण सूत्र

आपस में खूब बने, तो इसका प्रचार मत करो

गतांक से आगे

एक-दूसरे का सम्मान करो। जन्म दिवस अथवा ऐसे ही महत्वपूर्ण अवसर उपहार के साथ याद रखो। उचित और नैतिक मांगों की पूर्ति यथासंभव शीघ्र ही कर दो। इसमें अलस्य नहीं करना चाहिए। ऐसे मित्रों का साथ छोड़ दो, जिनके कारण घर की शांति भंग हो। इस विषय में श्री श्रीप्रकाश राज्यपाल (मुंबई) लिखते हैं-

इस संबंध में मैं सबको सचेत कर देना चाहता हूं कि कौटुम्बिक सुख-शांति और प्रेम के सामने बाह्य जगत की प्रशंसा और तथाकथित लोकप्रियता हेय है। इसे हमें नहीं भूलना चाहिए।

यदि आपमें और आपकी पत्नी में खूब बनती है तो उसका आनंद मन ही मन लीजिए। ढिंढोरा मत पीटते फिरिए और न ही दूसरों के सामने प्रशंसा के पुल बांधिए।स्मरण रखिए कि दूसरों के उत्कर्ष को सहन करने वाले व्यक्तियों की संख्या संसार में बहुत कम है। फल यह होता है कि पति-पत्नी में विरोध पैदा करने का लोग प्रयत्न करने लगें और आश्चर्य नहीं कि वह सफल भी हो जाएं और आपके जीवन कंटकाकीर्ण हो जाए।

गृहस्थ जीवन की आधारशिला ही प्रेम है। जिसमें दो में एकत्व स्थापित होकर जीवन अपने लक्ष्य की ओर अग्रगामी हो जाता है। अतः दाम्पत्य (वैवाहिक) जीवन के स्वर्गीय सुख भोगने के लिए यह आवश्यक है कि पति-पत्नी इन उपरोक्त स्वर्णसूत्रों को हृदयंगम पर आजन्म प्रेमी और प्रेमिका, नायक और नायिका बने रहें। केवल वासनाओं की तृप्ति के लिए नहीं, जीवन के अन्य क्षेत्रों और कर्त्तव्यों में संगठित होकर अग्रगामी बनने के लिए।

सुखी जीवन का राज मैं एक छोटे से सूत्र में बताये देता हूं-
जहां समर्पण है, वहां स्वर्ग है,
जहां तर्क है वहां नर्क है।।

जीवन का आनंद लेना है तो समर्पण में जीना, मन अहंकार मांगेगा, लेकिन उसकी सुनना मत। मन अकड़ने को कहेगा, लेकिन उसकी सुनना मत। झुककर जीना ताकि सारा संसार तुम्हारे चरणों में झुक जाये। छोटा बनकर जीना ताकि तुम बड़े बन सको। जब तक समर्पण होता है, तब तक दाम्पत्य जीवन में रस होता है, आनंद होता है, प्रेम होता है। समर्पण गया कि जीवन सूत्र नर्क बनना प्रारंभ हो जाता है।

पत्नी-त्रिमुखी का अद्‌भुत संगम।
पहिले चंद्रमुखी, फिर सूर्यमुखी।
और अंत में ज्वालामुखी।
कारण- पहिले समर्पण, फिर तर्क, अंत में अहंकार।
अब कौन झुके? दोनों अकड़ में जी रहे हैं।

सुखी गृहस्थी के लिए वर-वधु को शादी के समय सिर्फ एक संकल्प लेना चाहिए कि कभी मैं आग बनूं तो तू पानी बन जाना और कभी तू अंगारा बने तो मैं जलधारा बन जाऊं। स्त्री और पुरुष का दर्जा समान है, पर वे एक नहीं हैं। वे ऐसी अनुपम जोड़ी हैं, जिसमें प्रत्येक दूसरे का पूरक है। एक-दूसरे के लिए आश्रम रूप हैं- यहां तक कि एक के बिना दूसरे की हस्ती की कल्पना ही नहीं की जा सकती। इन तथ्यों से यह जरूरी निष्कर्ष निकलता है कि जिस बातसे दोनों मेंसे एक का भी दर्जा घटेगा, उससे दोनों की एक सी बर्बादी होगी।

समापन
संकलन– सूर्यकांत पौराणिक
भौंरासा

पुत्र के साथ पुत्री को भी मिले....

प्रेम, समर्पण, सम्मान बराबरी का अधिकार

पुत्र यानी बेटा, यह एक अति छोटा सा शब्द है। पर यह एक शब्द दुनियाभर की समस्त सम्पदाओं से अधिक है। पुत्र मोह एक ऐसा मायाजाल है, जिसकी कोई सीमा नहीं। इसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। आखिर इसमें ऐसा कौन सा राज छिपा है कि जिसकी व्याख्या कोई विद्वान या तत्ववेत्ता नहीं कर सका। बड़े-बड़े बादशाह, राजा-महाराजा और सेठ साहूकार अपनी विशाल संपदा को केवल अपने पुत्र के लिए अनायास ही छोड़ जाते हैं। सिर्फ पुत्र का ही चिंतन करते रहते हैं।

पुत्र मोह की बीमारी युगों-युगो से चली आ रही है। इस दुनिया में मनुष्य सबसे अधिक स्वार्थी है, परंतु वह केवल पुत्र के लिए ही सर्वाधिक त्याग करता है। पुत्र चाहे होनहार हो या नालायक। इतिहास गवाह है नालायक से नालायक व कपूत को भी पिता का संपूर्ण स्नेह मिला है।

संतान का पैदा होना माता के लिए कम कष्टकर नहीं पर पुत्र जन्म के हर्ष में वह अपने सारे दुःख, कष्ट भुला देती है। पुत्र बड़ा होता जाता है। चौबीसों घंटे उनके प्राण पुत्र में ही लगे रहते हैं। समाज के हर क्षेत्र में पुत्र मोह का भूत सर चढ़कर बोल रहा है। बेटा कैसा भी हो पिताश्री तो बस फूले नहीं समाते। उसकीहर जरूरी-गैर जरूरी मांगों को पूरा किया जाता है। उनको इतना अधिक प्रश्रय दियाजाता है कि अकसर सपूत गलत राह पर चल निकलतेहैं और आगे चलकर उन्हीं पिताश्री के लिए सिरदर्द बन जाते हैं। आधुनिकता की कथित हवा में अपनी खुदगर्जी को दिखाते हुए आज का पुत्र पिता मोह से दूर होता जा रहा है, किंतु दुर्भाग्यवश पुत्र मोह के जाल से पिताश्री छुटकारा नहीं पा रहे हैं।

आज समाज में दर्जनों उदाहरण हैं, जहां पुत्र को अपनी मर्जी का काम नहीं करने दिया जाता व पिता अपने पुत्र मोह के कारण जबरन अपनी इच्छा उश पर लाद देते हैं, इसका नतीजा होता है लायक पुत्र भी कुंठा से ग्रसित हो जाता है। युवा पुत्र का जब विवाह होता है तब माता सर्वाधिकार पुत्र वधु को और पिता अपना सर्वस्व पुत्र को दे देता है। वह दोनों घर द्वार, कारोबार और संपत्ति के अनायास ही स्वामी बन बैठते हैं। अंत में वे अपनी समस्त उपार्जित धन संपदा, पुत्र को देकर स्वयं संतोष से जीवन लीला संवरण करते हैं। क्या पुत्र के अलावा कहीं और भी मनुष्य ने इतना त्याग किया है? इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि उसने कभी भी पुत्र को छोड़कर और किसी के लिए ऐसा स्वार्थ त्याग नहीं किया, और न करने की आशा है।

यह अमीरों की ही बात नहीं। घोर दरिद्रावस्था में भी जिनका जीवन कट रहा है वे भी अपने प्यारे पुत्र के सरल सुंदर हास्य को देख अपना जीवन धन्य समझते हैं।

इतना सब होते हुए भी निपूतों की संख्या बढ़ती जा रही है। संतानें विशेषकर पुत्र आत्मकेंद्रित हो गए हैं। जिनके पुत्र होते हैं और जो कष्ट वो अपने माता-पिता को पहुंचाते हैं वैसे पुत्रों से तो निःसंतान होना ही अच्छा है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि संतान परमेश्वर की एक उत्तम धरोहर है। उसमें कन्या सर्वश्रेष्ठ है। कन्या यानी बेटी मानवीय जीवन का कोमल व अति पवित्र अवतार है। जिस घर में कन्या जन्म लेती है वह घर धन्य होता है।

परंतु इसका इक्कीसवीं सदी में भी जहां व्यक्ति अपने को आधुनिक व उन्नत विचारों वाला कहलाते नहीं थकते वहां भी कन्या का जन्म होते ही लोग मुंह लटका लेते हैं। प्रायः हिंदू घरों में कन्या पराई चीज समझी जाती है और विवाह तक वे उपेक्षित रहती हैं। लड़के और लड़की का भेद साफ दिखाई देता है।

पुत्र को तो ऊंची से ऊंची शिक्षा दी जाती है, पर लड़कियों के लिए शिक्षा को अनावश्यक बताते हुए कहा जाता है कि लड़कियां तो पढ़ लिखकर पराए घर चली जाती हैं, फिर पढ़ाने से क्या लाभ? यह नितांत संकीर्ण और ओछा दृष्टिकोण है। कहना चाहिए कि अनुत्तरदायी स्वार्थी माता-पिता का तर्क है। लड़के की शादी के बाद अधिकांश लड़कों का दृष्टिकोण बदलते देखा गया है और वह अपनी पत्नी व बच्चों की परवरिश को प्रदानता तथा माता-पिता के प्रति दायित्वों, कर्त्तव्यों को गौण समझने लगते हैं। लड़के ही आजकल धन कमाकर कौन से माँ-बाप की सेवा कर रहे हैं, जिस कारण लड़कियों को न पढ़ाया जाए? इसके विपरीत बेटियां आज भी विपत्ति में सुख-दुःख में माता-पिता के निकट पाई जाती हैं।

व्यवहारिक जीवन में हम नित्य देखते हैं कि लड़कों को उत्कृष्ट भोजन, वस्त्र दिया जाता है। वे भाइयों की तुलना में उपेक्षित व्यवहार पाती हैं। फिर भी वे मधुर, सहनशील और त्याग भाव से ओतप्रोत रहती हैं। दिन-ब-दिन उनका शील और सहनशीलता बढ़ती जाती है। वे पूरे कष्ट पाकर भी अपने माता-पिता के प्रति कभी कठोर नहीं बनती। जबकि पुत्रगण बहुओं के गुलाम होकर अपने माता-पिता को अनेकानेक कष्ट देते हैं।

परंतु सदैव से ही भारत में कन्या इतनी हीन न थी। प्राचीन काल में वे ब्रह्मविदों की अधिष्ठात्री, महापंडित हुआ करती थीं। वे सहस्त्रों विद्वानों की सभाओं में शास्त्रार्थ करके पंडितों के दांत खट्टे करती थीं, वे युद्ध क्षेत्र में पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लोहा लेती थीं। सामाजिक जीवन में वे पुरुषों के समान ही अधिकार रखती हीं, खेद है कि हमारे इस तथाकथित आधुनिक समाज ने आज भी स्वार्थ और वासना में फंसकर स्त्रियों को विलास की चीज बना दिया।

परंतु गत कुछ वर्षों में कन्याओं में जो क्रांतिकारी परिवर्तन आया है वे घर की चार दीवारी से बाहर निकली हैं तथा उच्च शिक्षा पाकर सरस्वती की उपासना कर रही हैं। आज लाखों कन्याओं में साहस व तेज आ गया है अब वे घूंघट में नहीं रहना चाहती। वे अब पुरुषों के समान ही समान अधिकार पाना चाहती हैं। पर इतना ही काफी नहीं है। आज भी नारी शोषण धड़ल्ले से हो रहा है। ऐसा प्रतीत होता है मानो स्त्री एक उपभोग की ही वस्तु रह गई है और आज के विज्ञापनों ने तो यह लगभग सिद्ध ही कर दिया है। पुत्र हो पुत्र दोनों को समाज में स्थान मान्यता मिलनी ही चाहिए, यही समाज का तकाजा है।

प्रस्तुति सोहन नागर
19/6, मनोरमागंज, इंदौर

जीवन निर्वाह की श्रेष्ठतम शैली

एक दृष्टांत

जीवन कैसे जियाजाये, इस विषय में लोक और समाज में यही कहा जाता है कि जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिए। वस्तुतः यह यथार्थ बात है और यही आदर्श भी है। एक किस्सा है, बहुत पुराना। किस्सा यह है कि प्राचीन समय में एक सेठ-सेठानी थे, सुखी सम्पन्न थे, पर अकेले ही थे। एक गाय पाल रखी थी, उसकी देखभाल करना, चारा खिलानाऔर पानी पिलाना इन सबका दायित्व निर्वाह उनका रामू नामक एक सेवक सच्चे मन और निष्ठा से किया करता था। समय पर गाय की सभी सेवाएं होतीं और उसका दूध निकाला जाता। सुबह-शाम दोनों समय उस गाय का दूध निकालक वह कर्मिष्ठ सेवक रामू अपने सेठजी के घर दे जाता। एक बार सेठजी को तीर्थ यात्रा करने की इच्छा हुई। सेठ-सेठानी ने अपने सेवक रामू को समझाया भाया! हमारे पीछे से गाय का अच्छी तरह से ध्यान रखना, चारा का, पूरा प्रबंध है ही, दूध निकालकर अपने घर ले जाना,हमें यात्रा से वापसी में एक महीना लग ही सकता है, चिंता नहीं करना, खर्चे और अपनी मजदूरी मेहनताना के बतौर ये कुछ रुपये रख लो और पीछे से घर का भी ध्यान रखना।

सेठ-सेठानी तीर्थ यात्रा पर चले गये। सेठजी के कहे अनुसार उनका वह सेवक रामू उनके घरऔर गाय की अच्छी तरह से देखभाल करता और गाय का दूध निकालकर अपने घर ले जाता, लेकिन दूध को अपने घर के आंगन में फैला देता और गली-मुहल्ले के कुत्ते-पिल्ले वहां आकर दूध को चाट-चाटकर पीते। रामू की भोली-भाली पत्नी ने अपने पति के दूध फैलाने पर उसी दिन उन्हें टोका दूध को फैलाने से क्या लाभ? हमारे इन दोनों छोटे-छोटे बच्चों को दूध पीने को मिल जाये, इससे अच्छी बात क्या हो सकती है? आपको सेठजी कहकर गये हैं कि दूध घर ले जाना। रामू ने पूरा उत्तर नहीं दिया- नहीं नहीं इन बच्चों को दूध पिलाकर... पत्नी ने पति की अधूरी बात पूरी की - आदत खराब नहीं करनी। उसे अपने पति की बात समझ में नहीं आयी। उसने कोई तर्क-वितर्क नहीं किया। अपना-अपना प्रारब्ध है, समझकर चुप रही। गृह शांति बनी रही। रामू का दूध निकालकर सेठजी के कहने से दूध को घर लाना और अपनी समझ से दूध को घर के आंगन में डाल देना उसकी दैनिक क्रिया बन गयी। गली-मुहल्ले के कुत्ते, पिल्ले उस दूध को चट कर जाते।

लगभग एक महीना बीता। सेठ-सेठानी तीर्थ यात्रासे वापस आये। रामू ने गायका दूध निकाला और सेठजी के घर पर दूधरख दिया। रामू अपने घर आया, आज तो दूध ही नहीं था, आंगन में क्या फैलता? लेकिन गली-मोहल्ले के कुत्ते-पिल्ले रोजाना की तरह समय पर उसके घर आंगन में इकट्ठे हुए, दूध न पाकर भौं-भों कर भौंकने लगे, रोने लगे। रामू की पत्नी ने भौंकने-रोने का दारुण दृश्य देखा और पूछने की मुद्रा में पति के मुख की ओर देखनी लगी। पति ने कहा -देवि! तुमने इन्हें देख लिया, अपने बच्चों को वह दूध इसलिए नहीं पीने दिया, नहीं तो आज ये अपने बच्चे इसी तरह रोते, बिलखते. बात आज रामू की पत्नी की समझ मेंआयी- अपने हक-मेहनत का खायें, पीयें, स्वाभिमान से जीयें और अपने सामर्थ्य तथा मर्यादा में रहें।

यह निःस्पृहता है। तर्क-वितर्क किये जा सकते हैं, कोई अंत नहीं है जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि राहिए। जीवन निर्वाहकी यही श्रेष्ठतम शैली है।

संकलन नवीन झा, इंदौर

जहां बोलना जरूरी हो, वहां चुप रहना भी गलत ही है

ईश्वर ने हमें दो कान और एक मुंह दिया है, जिससे हम बोले कम और सुने ज्यादा। पर अकसर देखा गया है कि हम ज्यादा बोलते हैं और कम सुनते हैं। किसी भी विषय पर व्यर्थ बोलते रहने से चुप रहना फायदेमंद होता है। अगर किसी विषय पर बातचीत हो रही है और हमारे पास बोलने के लिए कोई ठोस बात न हो तो उस समय मौन रहना बेहतर है।

जैसे तीर कमान से छूटकर वापस नहीं आता वैसे ही शब्द एक बार मुंह से निकल के बाद वापस नहीं आ सकते। ऐसा कहते हैं कि ईश्वर हमेशा तथास्तु कहते रहते हैं, इसलिए बोलते समय हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम सकारात्मक ही बोलें, क्योंकि अगर कुछ नकारात्मक कह दिया तो ईश्वर का तथास्तु हमारे जीवन में नकारात्मक अनुभव लाएगा।

दिनभर में एक क्षण ऐसा आता है जब हमारी जबान पर सरस्वती का वास होता है उस समय हम जो भी बोलें वह सच हो जाता है इसलिए हम अकसर कहते हैं। शुभ शुभ बोलो।

जो लोग जप, ध्यान, साधना आदि करते हैं उनकी वाणी काफी प्रभावशाली होती है ऐसे लोगों के आशीर्वाद भी फलीभूत होते हैं।

ओशोगीत में कहा है - जिसके बोलने से किसी का भला हो बोलने से आपस में तनाव या उद्वेग पैदा न हो, वाणी यथार्थ एवं मधुर हो तो वह वाणी का तप है अन्यथा वह वाणी हिंसा होगी।

कटु वाणी से कई बार संबंधों में कड़वाहट आती है और कटु वचन बोलने वाला स्वयं भी अपराध बोध में चला जाता है, जिससे उसकी मानसिक शांति भंग हो जाती है। इसीलिए संत कबीर ने कहा है-

ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोए
औरन को शीतल करे आप ही शीतल होए।

वाणी एक शक्ति है। उसका सदुपयोग जीवन में सुख शांति लाता है। बहुत ज्यादा बोलना भी अनुचित है। बहुत ज्यादा चुप रहना भी कई बार नुकसान देह साबित होता है। वाणी ऐसी हो जो अपने आसपास वालों के लिए उपयोगी हो किसी के मन को ठंडक पहुंचाए। कभी-कभी कुछ समय तक मौन रखने से आंतरिक शक्ति का विकास होता है।

बहुत ज्यादा बोलने से हमारा स्वरयंत्र प्रभावित होता है। आवाज में भारीपन आता है और थकान महसूस होती है। जहां बोलना जरूरी है वहां पर चुप रहने से कई बार समस्या खड़ी हो सकती है, गलतफहमियां पैदा होती हैं। जहां पर कुछ गलत हो रहा है, वहां बोलना जरूरी है, क्योंकि गलती करने वाला तो दोषी होता ही है, पर उसको चुपचाप देखने वाला भी उतना ही दोषी है।

अंत में अती का भला न बरसना, अतीकी भली ना धूप
अती का भला न बोलना, अतीकी भली ना चुप।

उषा ठाकोर, मुंबई

रंग-रंग के फूल

त्याग से ही शांति प्राप्त होती है

❒ प्रसन्न मनुष्य सबको प्रसन्नता का दान करता है।

❒ देना वही सात्विक है, जिसको कोई जाने ही नहीं। लेने वाला भी न जाने तो और भी श्रेष्ठ।

❒ मनुष्य जितनी अधिक आवश्यकता पैदा करता है उतना ही वह पराधीन हो जाता है।

❒ यह संसार मेहंदी के पत्तों की तरह ऊपर से हरा दिखता है, पर इसके भीतर परमात्मा रूपी लाली परिपूर्ण है।

❒ अपने राग, अपने कष्ट अपनी विपत्ति तथा अपने गुण अपनी सफलता की चर्चा अकारण ही दूसरों से मत करो।

❒ भीतर की समता ही सच्ची समता है, क्योंकिउसके प्राप्त होने पर राग-द्वेष का, अपने- पराये का सर्वथा अभाव हो जाता है। फिर सभी में समभाव से सेवा का आचरण होता है।

❒ कामनावाला मनुष्य निरंतर अभाव की आग में जलता रहता है और कामनापूर्ति में लोभ तथा कामना की अपूर्ति में क्रोध-क्षोभ के वश में होकर दुःखी और विवेक शून्य हुआ रहता है।

❒ सुख की खोज में जाने वाले व्यक्ति के घर पर दुःख बिना बुलाये आता है और दूसरों को सुख पहुंचाने के लिए स्वयं को दुःख में होम देने वाला व्यक्ति को जीवन का सच्चा सुख अनायास ही प्राप्त हो जाता है।

❒ वह मुस्कराहट जिसके पीछे निष्कपटता और सत्यता झांक रही हो, एक ऐसी देन है जो पाने वआले की स्थिति में महान परिवर्तन ला देती है।

❒ तत्वदर्शी महापुरुषों ने एक अत्यंत मार्मिक बात कही है कि रुपयों से वस्तु श्रेष्ठ है, वस्तु से व्यक्ति श्रेष्ठ है, व्यक्ति से विवेक श्रेष्ठ है और विवेक से परमात्मत्व (सत्य) श्रेष्ठ है। वैसे रुपया अपनी जगह बहुत काम का है, पर उसे अत्यधिक महत्व देने से मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। जीवन में सदाचार, सद्व्यवहार एवं संयम को विशेष महत्व प्रदान करो। त्याग से ही शांति प्राप्त होती है।

❒ जिससे राग हो जाता हे, उसमें दोष नहीं दिखता और जिसमें द्वेष हो जाता है, उसमें गुण नहीं दिखते। राग द्वेह से रहित होने पर ही वस्तु अपने वास्तविक रूप में दिखती है।

❒ महान लोग नये विचारों पर, औसत लोग घटनाओं पर और संकीर्ण दिमाग वाले व्यक्तियों पर चर्चा करते हैं।

आज मानव के जीवन की गाड़ी में संयम का ब्रेक नहीं है और ज्ञान की लाइट नहीं है। ज्ञान गुरु से मिलता है और ब्रेक संयम से आता है।

❒ ट्रेन में चढ़ने या उतरने में सभी को कष्ट होता है, पर जिनके पास सामान ज्यादा होता है, उन्हें ज्यादा कष्ट होता है। जीवन भी एक यात्रा है। माया-मोह ही सामान हैं। माया-मोह नहीं हो तो जीवन यात्रा आसान हो जाती है।

❒ जिस प्रकार पुष्प में गंध, तिल में तेल, लकड़ी में अग्नि, दूध में घी और ईख में गुड़ होता है, उसी प्रकार शरीर में आत्मा होती है। इसे विवेक-विचार द्वारा ही जाना जा सकता है।

गोवर्धनलाल व्यास, उज्जैन

गजल

ये कैसी प्यास है?

आओ करीब आओ, ये दिल उदास है
मिलती नहीं है रोशनी जो तेरे ही पास है
लगती रही है दिल पर जमाने की ठोकरें
सहारे सभी तो टूटे हैं, मंजिल की आस पै,
वो कौन बुलाता है तुझको, कर करके इशारे
थक गया हूं बोझ उठा-उठा के जिंदगी का
किस आलम में जी रहा है, घुट-घुट के भारती
अब बुझी सी लगती है, ये कैसी प्यास है?

सुभाष नागर 'भारती'
सचिव अ.भा.सा. परिषद
अकलेरा- 326033

पुरुष

दुनिया नीरस थी उसे सरस बनाने के लिए स्त्री पैदा की गई। स्त्री में आकर्षण था उसे सौंदर्य प्रदान किया गया। सौंदर्य नग्न था अतः स्त्री को लज्जा दी गई लज्जा शुष्क थी अतः स्त्री में अदा भरी गईऔर उस अदा को सहन करने वाला उसका भार उठाने वाला कोई न था इस कारण पुरुष की सृष्टि हुई।

स. अशोक पंडित
43-सी पार्श्वनाथ नगर, इंदौर
99268 24892

खाली हाथ आए, खाली हाथ जाना है

जिसने जन्म लिया, उसको मरना ही होता है। फिर मौत से कैसा डर? ईश्वर ने सात दिन निश्चित किए हैं। किसी भी दिन बुलावा आ सकता है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि जिस प्रकार पुराने वस्त्र बदलते हैं उसी प्रकार से आत्मा भी पुरानी देह त्याग कर नई देह में प्रवेश करती है। आथ्मा अमर है वह कभी नहीं मरती। इस जीवन की कब शाम हो जाए...कोई नहीं जानता... खाली हाथ आये थे... खाली हाथ जाना है। मरने वाले कभी भी अपने साथ कुछ नहीं ले जाते। हमारे साथ यदि जाते हैं तो अपने सत्कर्म, सदव्यवहार और मीठे बोल... यह सत्य है जब सिकंदर का अंत निकट आया तो उसने अपने सेनापति को बुलाकर आदेश दिया कि जब मैं मर जाऊं और मेरा जनाजा ले जाओ तो मेरे दोनों हाथ बाहर रखना ताकि सारी दुनिया देख सके कि मैं खाली हाथ जा रहा हूं। उसने दुनिया को सीख दी कि राजा हो या भिखारी जो आया है उसे अवश्य जाना है और वह भी खाली हाथ अतः सत्य और अहिंसा का मार्ग अपनाएं और अच्छे कर्म करें, क्योंकि हमारे साथ यदि कुछ जाता है तो वह है हमारे अच्छे कर्म यही जीवन का सबसे बड़ा सत्य है।

सौ. चारु मित्रा नागर
इंदौर 9826667059

रतलाम एवं आसपास के क्षेत्रों में हाटकेशवाणी की सदस्यता लेने, समाचार एवं सूचनाओं के प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें-

ओम त्रिवेदी
दैनिक अवंतिका कार्यालय
89 टीआईटी रोड, रतलाम
फोन 98261 96660
फोन 230222

पुण्य स्मरण

ममतामयी सास

१ मई १९८४ की बात है शादी के बाद मायके से विदा होते मैं बहुत रो रही थी तभी दो हाथों ने मुझे पकड़कर अपने सीने से लगा लिया और उनकी आँखों से भी आँसू बहने लगे, वो हाथ मेरी सास के थे। तभी मैंने सोचा था इतनी ममतामयी सास का मन कभी नहीं दुखाऊंगी और मुझे खुशी है कि मैं इसमें पूर्णतया तो नहीं मगर काफी हद तक सफल भी रही। शुरूआत में रोज ही मेरी नींद चिड़ियों की चहचहाहट के साथ उनके मीठे भजनों की आवाज से ही खुलती। उनके भजनों की आवाज से घर का वातावरण पवित्रता से भर जाता था। उन दिनों घर में हम तीन ही प्राणी थे। तीनों ही एक दूसरे के सुख के बारे में ही सोचते, जिस गृहस्थी की शुरूआत ही इतने अच्छे माहौल में हो वहां भला छल-कपट, क्रोध-लोभ, कलह कैसे रह सकते हैं। नई-नई गृहस्थी में सैकड़ों अभाव रहते हैं मगर उनके अपनेपन व स्नैह के कारण कभी किसी चीज की कमी महसूस ही नहीं हुई। वो मेरा बहुत ध्यान रखती थी। जब भी मेरे मायके से चिट्ठी आती, लाख छुपाने पर भी वो मेरी आँसू भरी आँखें देख ही लेती। शाम को मेरे पति जब ऑफिस से आते तब कहती ''इसे थोड़ा बाहर घुमा ला, ये आज बहुत उदास है''। हम जहाँ भी ट्रांसफर हो जाते, शुरू में सभी ये समझते कि वो मेरी माँ है। बताने पर कहते कि आप दोनों तो सास-बहू लगती ही नहीं, इनका चेहरा तो नागर साहब से ज्यादा आपसे मिलता है। सच वो मुझे कभी सास जैसी लगी ही नहीं। वो बहुत ही प्यार करने वाली दादी व नानी थी। बच्चों के साथ उनकी दोस्त बन जाती, कभी उनके साथ ताश खेलती, कभी लूडो तो कभी साँप-सीढ़ी। रात को कहानी सुनाती इसलिए सब बच्चे उनके पास सोना पसंद करते थे। उनकी छोटी पोती रोली तो गलती से भी अगर अपने मम्मी-पापा के पास सो जाती तो आधी रात में भी उठकर दादी के पास आ जाती थी। उन्हें अपना पोता बहुत ही प्यारा था इसलिए नहीं कि वो लड़का था, बल्कि इसलिए कि उसमें उन्हें शायद अपने उस बेटे का बचपन नजर आता था जिसे अपनी बीमारी के कारण वो अपने साथ नहीं रख सकी थी। अपने १० साल के बच्चे को पढ़ाई के लिए इंदौर छोड़ते वक्त मुझे मृत्यु तुल्य मानसिक पीड़ा से गुजरता पड़ा। तब उन्होंने कहा ''तू चिंता मतकर मैं इसका वैसे ही ध्यान रखूंगी जैसा तू रखती है'' और वास्तव में उन्होंने मुझसे ज्यादा अच्छी तरह से उसकी देखभाल की। ज्ञान डिग्री का मोहताज नहीं होता, वो इसकी मिसाल थी। कम पढ़ी-लिखी होने के बावजूद भी हर विषय का ज्ञान रखती थी। वो बहुत ही उदार व समझदार सास थी। उनका हर काम बहुत सलीकेदार होता है चाहे वो खाना बनाना हो, घर की सफाई हो या फिर पहनना-ओढ़ना। खाने में जितना संयम उनका था, उतना बहुत कम लोगों का होता है। घर में लाख पकवान बने हों मगर वो अपनी बिना मिर्च-मसाले की दाल व प्राय: लौकी की सब्जी ही खाती थी। हर त्यौहार बहुत उत्साह से मनाती थी। देव उठनी ग्यारस विशेष उत्साह से मनाती थी। क्योंकि उस दिन उनके बड़े बेटे का जन्म दिवस है। उस दिन बहुत बड़ा व सुंदर सा मांडना मांडती। मांडना इतना समानुपातिक रहता, लगता स्केल से नापकर बनाया हो। जब भी वो हमारे पास रहती, सुबह की चाय से लेकर रात के खाने तक हम साथ ही रहते। वो मेरी सुख-दुख की साथी थी। मेरे हर व्रत में पूजा की थाली वो ही तैयार करती थी। उनके बिना तो मेरे सारे त्यौहार सूने हो गए हैं। मेरा और उनका २५ सालों का साथ रहा, मगर इन २५ सालों में हम दोनों के बीच झगड़ा तो दूर की बात है कभी मनमुटाव भी नहीं हुआ और ये किसी भी सास और बहू दोनों के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। हमें नहीं लगता था कि वो इतनी जल्दी हमें छोड़कर चली जाएगी। मृत्यु से घन्टे भर पहले जब उनका ब्लडप्रेशर व पल्स सामान्य होने लगे तो मुझे लगा शायद वो ठीक हो जाएगी। मगर वो तो दिया बुझने से पहले की चमक थी, कुछ ही पलों में वो इस संसार को छोड़कर जा चुकी थी। बिना किसी को तकलीफ दिए, बिना किसी से सेवा करवाये। मैं उनसे बहुत कुछ कहना चाहती थी मगर कह न सकी। मैं उनसे कहना चाहती थी बहुत-बहुत शुक्रिया बाई उस स्नैह व अपनेपन के लिए जो आपने मुझे दिया व रोशो की माँ की तरह देखभाल के लिए। बहुत-बहुत आभारी हूँ कि आपने अपना इतना लायक संस्कारी व संवेदनशील बेटा मुझे पति रूप में दिया जो परायों का दुख भी नहीं देख सकता।

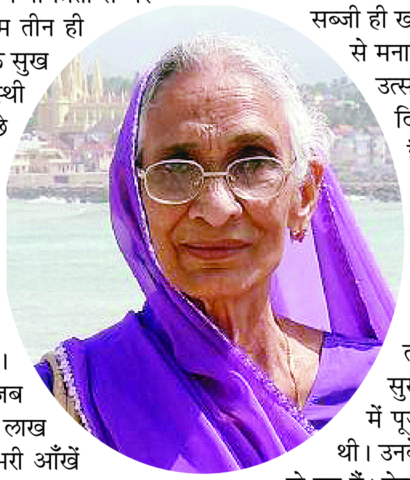

वास्तव में यदि पुर्नजन्म होता है तो मैं चाहूंगी कि हर जन्म में सास के रूप आप ही मुझे मिलें।

श्रीमती आशा नागर, मंडला

गोलोक गमन

अलीगढ़। अत्यंत दुःख सहित सूचित करना पड़ रहा है कि अलीगढ़ अ.प. नागर समाज की एक कर्मठ एवं वृद्ध कार्यकर्ता स्व. सुभति नागर पति स्व. राजेन्द्रलालजी नागर निवासी मामू भांजा अलीगढ़ का आकस्मिक निधन दिनांक 10जनवरी 2010 को प्रातः काल 5 बजे हो गया। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

प्रेषक दर्शना दवे
अलीगढ़ प्रतिनिधि

श्रद्धांजलि श्रीमती यशोदाबाई नागर

ब्यावरा श्रीमती यशोदाबाई नागर का परलोकगमन दिनांक 14.03.2010 को हो गया। आपका उत्तर कार्य पगड़ी 26-03-2010 को ब्यावरा में सम्पन्न हुई। शोकाकुल परिवार को संबल देने के लिए सर्वश्री रमेशचंद्र, राजेन्द्र प्रसाद, दिनेशचंद्र, ओमप्रकाश नागर ने समाज बंधुओं का आभार व्यक्त किया है।

श्रद्धांजलि -श्रीमती चद्रकांता मेहता

उज्जैन। श्रीमती चंद्रकांता बाई मेहता पत्नी स्व. श्री किशोरीलालजी मेहता एवं गोपाल, बृजेन्द्र मेहता की माताजी का निधन 23-03-10 को हो गया।

श्रद्धांजलि श्रीमती कृष्णकांता नागर

श्रीमती कृष्णकांता नागर पत्नी बाबूलालजी नागर रिटायर्ड स्टेनो शिक्षा विभाग एवं विश्वजीत, देवेन्द्र, विनोद की माताजी का निधन 21-3-10 को हो गया।

पुण्य स्मरण

आज भी याद आते है अंगूरवाले ''दासाब''

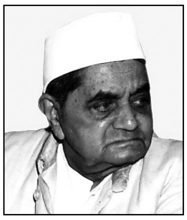

रतलाम। सन् 1990-91 की बात है। म.प्र. की धार्मिक राजधानी उज्जैन में श्री हरसिद्धी की पाल पर नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर धर्मशाला का निर्माण कार्य 1992 में आयोजित होने वाले सिंहस्थ महापर्व को दृष्टिगत रखते हुए वृहद्ध स्तर पर चल रहा था, उस समय मेरी उम्र मात्र छः-सात वर्ष की रही होगी। धर्मशाला का निर्माण कार्य नागर रत्न एवं ''दैनिक अवन्तिका'' के पितृपुरूष स्व.श्री गोवर्धनलालजी मेहता जिन्हें हम सभी परिजन 'दासाब' के नाम से जानते थे उन्हीं की देखरेख एवं मार्गदर्शन में चल रहा था। हम परिवार सहित इसी धर्मशाला में किराये से रहते थे चूंकि दासाब निर्माण कार्य की रेखरेख हेतु सुबह शाम दोनों समय धर्मशाला में आते थे तथा करीब एक-एक, दो-दो घण्टा वहां रूकते थे। मैं छोटी थी, वही खेलती रहती थी, दासाब कभी-कभी फुर्सत के क्षणों में मुझसे भी हंसी मजाक कर लिया करते थे। मेरी बाल्यकाल की तुतलाती बोली उन्हें कॉफी अच्छी लगती थी। धीरे-धीरे मेरे प्रति उनका दुलार और प्यार बढ़ता गया। अब वे धर्मशाला में आते तो गुदरी चौराहे से मेरे लिए दो रूपये के अंगूर जरूर लाते। दिन में चाहे दो बार आते तो दोनों ही बार अंगूर लाते। कभी खाली हाथ नहीं आते। एक तरह से दासाब ने मेरे लिए अंगूर की बंदी ही बांध दी थी, मैं भी उन्हें धर्मशाला में आते हुए देखकर दौड़कर उनके पांव से लिपट जाती और वे बड़े प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए मुझे अंगूर की पुड़िया थमा देते थे। एक दिन तो ऐसा भी हुआ कि किसी कारण से दासाब अंगूर लाना भूल गए किन्तु मुझे अचानक सामने देखकर ठगे से रह गये। धर्मशाला में कोई था नहीं रमेश भैया ठेकेदार श्री हाटकेश्वर भगवान के मंदिर के शिखर पर प्लास्टर कर रहे थे। दासाब ने उनसे काम बंद करवाकर मचान से नीचे उतारा और उन्हें अंगूर लेने भेजा तब तक काम बंद रहा। यह घटना काफी पुरानी हो गई, किन्तु आज भी जब कभी मैं अंगूर खाती हूँ तो दासाब के इस अपनत्व भरे प्यार की बरबस ही याद आ जाती है। मैं ऐसा समझती हूँ कि आज दासाब भले ही सशरीर हमारे बीच नहीं है लेकिन उनके साथ बिताये स्नेह के पल हमारे जहन में आज भी उनके जीवन्त होने का आभास कराते हैं। इन्हीं पावन स्मृति के साथ पूज्य दासाब के श्री चरणों में शत् शत् नमन्।

श्वेता नागर 'नानी''
रतलाम, मोबाईल -9179243054

विश्व का प्राण माँ का अस्तित्व

वात्सल्य
सहनशीलता
सौम्यता
करुणा
प्यार
गंभीर

स्व. इंदिरा पंडित

ममता
विशालता
क्षमा
मिठास
मधुरता
सरसता

गहराई में जिसका अंत नहीं, उसे सागर कहते हैं
प्यार में जिसका अंत नहीं उसे माँ कहते हैं।

सागर से अधिक गंभीर, हिमालय से भी ऊंची, आसमानसे अधिक असीम, नदियों की तरह कल-कल प्यार की धारा हर पल बहाती हुई चली जाती है, वह कौन है? विश्व के सभी ग्रंथों, काव्य रचनाओं और गीत जिसके लिए रचे हैं, वह कौन है? भगवान ने भी हमेशा जिसकी स्तुति एवं चरण स्पर्श किये हैं वह कौन हैं ? दिव्यता और पूज्यता की प्रथम अधिकारी कौन है?

जिसकी कोई उपमा नहीं, जिसकी कोई सीमा नहीं, पतझड़ भी जिसके प्यार को स्पर्श न सके वह कौन है?

वह है माँ

माँ का शब्दशः वर्णन अक्षरों में करना, संभव है ही नहीं। वाद-विवाद के कारण जीवन अपने और माँ के एकत्व के अनादि सत्य को नहीं जान पाता। माँ ही घर की केंद्र बिंदु है और यहीं से जीव की आत्म केंद्र यात्रा शुरू होती है। जगत में सबका निषेध करने के बाद जो शुद्ध चैतन्य बचा रह जाता है वह माँ है।

बचपन में पहले आंसू आते थे।
फिर तू याद आती थी।
पर अब पहले तू याद आती है,
और फिर आंसू आते हैं।
माँ, मेरी पूजा, माँ मन्नत है मेरी
माँ के कदमों में ही जन्नत है मेरी

माँ मेरी देवालय, माँ के आंखों की मस्ती है मेरी महालय की अमीरी क्या, माँ के दिल की अमीरी है मेरी माँ मेरी सच्ची विरासत, माँ प्रामाणिकता और पवित्रता है मेरी। हिमालय की शीतलता क्या माँ के गोद की शीतलता है मेरी।

ममतामयी, मृदुभाषी हमारी माँ जिन्हें सभी इन्दुजीजी के नाम से जानते हैं। खंडवा के नागर पिवार 'श्रीमती काशीबाई एवं मुंशी लक्ष्मीनारायणजी दीक्षित' की द्वितीय बेटी के रूप में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 14 वर्ष की आयु में उनका विवाह खंडवा की श्रीमती जमनादेवी पंडित एवं आनंदीलाल पंडित के मझले बेटे के साथ हुआ। इस परिवार में इन्होंने अपनी गरिमामय जगह बनाई। बड़ोंसे लेकर बच्चों तक की स्नेही हो गई। धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रमों में उनकी बहुत रुचि थी। इसी वजह से समाज-गांव सभी जगह मान-प्रतिष्ठा की पात्र बनती गई।

अपने पति डॉ. बलिराम पंडित के साथ निमाड़ जिले के एक छोटे से ग्राम कालमुखी की वे स्थाई लोकप्रिय महिला बन गई। उन्हें अपने जीवन में चार बेटों और दो बेटियों की माँ बनने का गौरव प्राप्त हुआ। सास-ससुर, जेठ, देवर, बहुओं, बच्चों से भरा पूरा हमारा परिवार था, जो हँसी-खुशी व्यतीत हो रहा था। लेकिन विधि के विधान को कोई नहीं बदल सकता है, 46 वर्ष की अल्पायु में वे हम सबको छोड़कर चली गई। बस अब उनकी यादें ही रह गई हैं।

उन्हीं के आशीर्वाद से आज हमारा पूरा परिवार एक साथ है- शायद यही उनका सबसे बड़ा वरदान है।

मैं स्वयं उनकी सबसे छोटी बेटी हूं, जो विगत 18 वर्षों से कलकत्ता में अपने परिवार के साथ रह रही हूं। हमारी माँ का स्नेहात्मक आशीर्वाद सदैव हमें मिलता रहे और हम सभी एक साथ ऐसे ही एक परिवार में रहें, यही हमारी कामना है- और यही सच्ची श्रद्धांजलि है। पूरे परिवार की तरफ से अपनी माँ को।

श्रीमती अणिमा दीप याज्ञनिक
अनमोल याज्ञनिक
दिव्यांश याज्ञनिक
एवं पंडित परिवार

पुण्य स्मरण

सूर्य की आशा की अनछुई यादें

मृत्यु ऐसा अमर अपार्थिव पावन पूजन है, जहां निर्जीव पड़ा है मानव।
यही इस नश्वर जीवन का अनश्वर संदेश है।

क्या भुलूँ, क्या याद करूँ, आज मैं बाँट सकूँ अपनी बेन के जीवन के स्वर्णिम पावन कणों को,
जो नव आदर्शों का दर्पणहै,
जो समग्रशील सद्कर्मों की एक शृंखला है।
बेन के जीवन का नवल प्रभात
ननिहाल शाजापुर में हुआ, जहां की आप लाली ब्रज रही हैं।
प्रयाग के लुकरगंज की हवेली में शान शौकत से गुजारा
हमारी बेन ने अपने जीवन का शैशव।
हम भाई-बहनों में आप को ही नसीब हुई
दादा-दादी की स्नेहिल छाया।
जहां बाऊजी की सी सरसता सौम्यता थी हमारी बेन में,
वहीं मम्मी के तेजस्वी रूप की झलक भी थी हमारी बेन में।
पचास के दशक में शामे अवध की लाड़ली का पदार्पण हुआ।
अहिल्या की नगरी के पुराणिक परिवार में।
बनकर जीवन किरण अपने सूर्य की
अलोकित कर दिया अपना गृहस्थ जीवन।
सदा स्नेह बरसाती रही उस गेह पर।
मम्मी बाऊजी के संस्कारों से संस्कारित बेन ने महका दिया
दासाहब-भाभी के चमन को।
अपने जीवन के मध्यान्ह में सूर्य की तरह दैदीप्यमान थी
कि अचानक आपके सूर्य के जीवन का सूर्यास्त हो गया।
तब वीरान सा बन गया आपका जीवन उपवन।
वे दुःख के दिन काटे आपने गिन-गिनकर।
आँसू की लड़ के मोती के हार पिरोये आपने।
हम साक्षी बने अपनी बेन के अश्रु बोझिल करुण-क्रन्दन के।
अदम्य साहस का परिचय देते हुए
आपने अपने जीवन की डगमगाती नैया को पार लगाया।
बागवान बन आपने अपनी फुलवारी को
कुछ इस तरह से सींचा कि ममता,
संगीता, हिमांशु रूपी पुष्पों ने पल्लवित होकर एक बार फिर महका दिया आपकी जीवन बगिया को।
दिलीपजी-अरुणजी जैसे जमाता पाकर आप

स्व. श्रीमती आशा पुराणिक
निधन - 18 अप्रैल 2007

गौरवान्वित हुईं।
और आंजू? अंजू की कर्त्तव्यपरायणता एवं सेवा सुश्रुषा भावना से आप धन्य हुई।
मेरी छुट्टियों का लेखा-जोखा होता था आपके पास सदा
आपकी दिली इच्छा होती थी कि
मेरी छुट्टियाँ आपके सान्निध्य में बीतें।
ताकि आप अपना दुलार लुटा सकें अपनी इस बबली पर।
आज हमें यह एहसास हो रहा है कि
हमने एक बार फिर अपनी माँ को खोया है।
आपने जो स्नेहोपहार हमें दिया है जिसके लिए हम आपके ऋणी हैं।
याद आपकी भूला न पाएंगे हम जीवन भर
किंतु हमें यह स्वीकारना होगा अब आपने वर लिया है
अमर शाश्वत विराम,
और आज आप हमारे बीच नहीं हैं।
आपकी शुभ आशीषों की बौछारें ही हमारी अमूल्य धरोहर हैं।
ईश्वर से हम यही प्रार्थना करते हैं कि हमारी बेन जहां भी रहे सदा शांति का सागर पाती रहे।
शत् शत् नमन के साथ

आपकी बहन
बबली (विभा अनिल नागर)
फोन 0734-2510240

अक्षुण्ण स्मृतियां

मातृत्व में प्रभु अंश विराजत है
पारिवारिक असामान्य परिस्थिति के मध्य बच्चों का पालनपोषण
ऐसी माँ का पुण्य स्मरण
18 अप्रैल 2010

श्रीमती लक्ष्मीबाई (जीजी)
राधाकृष्ण जोशी

स्नेह पूर्ण वात्सल्य वर्षा एवं आध्यात्मिक प्रवृत्ति धारी
माँ का स्मरण कर सजल नेत्र से श्रद्धापूर्ण
इन्हीं की सेवा हमारी प्रभु सेवा रहीं
आत्मीयों के प्रति समर्पण-स्नेही जीवन की सदैव प्रतिमूर्ति रहीं
इन्हीं का श्रद्धापूर्ण स्मरण के साथ करबद्ध सादर सविनय नमन
एवं आत्म शांतिहेतु प्रार्थनारत

आत्मीय जोशी परिवार
पी.आर. जोशी
528, उषा नगर एक्सटेंशन इंदौर

हमारे काकाजी

श्री एल.ओ. जोशी
के 16 अप्रैल जन्मदिवस पर
सप्रेम सादर नमन।
आपका वदहस्त ही हमारा संबल है।
संयम,संतोष शांति, विश्वास परिश्रम ही आत्मबल है। हम सदा याद रखेंगे।
समस्त परिवार

पुण्य स्मरण

दिनांक 13-04-2010
मंगलवार
स्व. माँ दुर्गादेवी नागर

माँ तुझे प्रणाम
उज्जयिनी के गौरव दिवंगत कवि स्व.श्री ओम व्यास ओम द्वारा लिखी गई चार लाइनों में आपको अश्रुपूरित श्रद्धांजलि
माँ पृथ्वी है, जगत है, और धूरी है,
माँ बिना सृष्टि की कल्पना अधूरी है,
माँ का महत्व दुनिया में कम हो नहीं सकता,
माँ जैसा दुनिया में कुछ और हो नहीं सकता।
बाबूजी सदैव आपकी स्मृति में रहते हैं।

पुण्य स्मरण

मेरी प्रेरणा मेरी काकी माँ

शाजापुर। बेरसिया निवासी पं. चंदरलालजी व काशीदेवी के घर जन्मी व पं. रघुनाथ प्रसादजी के छोटे बेटे वैद्य रामनारायण जी नागर मोडी वाले से ब्याही व सौभाग्य से वे मेरी काकी बनी। नाम है दुर्गादेवी यथा नाम तथा गुण। जबसे मैंने होश संभाला तब से ही अपनी काकी की कार्यशाली ने मुझे आकर्षित किया। उनकी शैली को अपनाया। अपने परिवार व अपने तीन बच्चों तक ही मेरी काकी सीमित नहीं रही। उन्होंने पूरे मोड़ी परिवार को अपने स्नेह से सिंचित किया। शादी ब्याह जैसे भीड़ भरे वातावरण में भी प्रत्येक मेहमान चाहे वे छोटा बच्चा ही क्यों न हो, भोजन, चाय व अन्य सुविधाओं के बारे में साग्रह पूछतीं। वे एक अच्छी प्रबंधक थीं। उन्होंने अपने परिवार को एक सूत्र में पिरोकर रखा। आपके दिखाये मार्ग पर काकी चल रही हूं। कोशिश करूंगी कि आगे भी चलती रहूं। आपकी बड़ी बेटी ब्यावरा में श्री देवीप्रसादजी नागर से ब्याही। जो स्वयं एक कर्त्तव्य परायण व सादगी की प्रतिमूर्ति है। श्री गिरीश नागर आपके जेष्ठ पुत्र शाजापुर में जिला आयुर्वेद चिकित्साधिकारी हैं। व छोटे श्री नरेन्द्र नागर उज्जैन में अभिभाषक हैं। आप अपने पीछे आपके मार्गदर्शन में चलने वाले नाती-पोते व भरा-पूरा परिवार छोड़ गईं। आपके पति वैद्य रामनारायणजी नागर सुसनेर क्षेत्र के जाने-माने वैद्य हैं। व वर्तमान में आप भागवत गीता का स्वाध्याय करते हैं। आप अपने जेठ व मेरे पिताजी श्री पूनमचंद्रजी नागर की आजीवन लाड़ली बहू बनी रही। घर, बाहर, समाज, गरीब, बेसहारा आदि की सहायता के लिए आजीवन तत्पर रहीं और यही कारण रहा कि वे सबको लाड़ करती रहीं व सबकी लाड़ली बनी रहीं। मैं व मेरा परिवार उनके चरमों में भावांजलि इन शब्दों में प्रस्तुत करता हैमेरी ख्वाहिश है कि मैं फिर से फरिश्था हो जाऊं माँ से इस तरह लिपट जाऊँ कि बच्चा हो जाऊं।

सौ. ममता सुधीर नागर
94250-34716

समाजसेवक श्री राजेन्द्र त्रिवेदी नहीं रहे

बड़नगरा नागर समाज बांसवाड़ा के पूर्व अध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी त्रिवेदी 14 फरवरी 2010 को मुंबई के नायर अस्पताल में अपनी तीनों पुत्रियों, नातियों और रिश्तेदारों और समाज के लोगों को अलविदा कह गए। देहदान की उनकी मंशा को समय के अभाव में पुरा नहीं हो पाया, परंतु नेत्रदान की दो नेत्र विहिन की ज्योति बनकर अभी भी समाज को निहार रहे हैं।

देहदान के बजाय नेत्रदान से संतोष करना पड़ा

श्री त्रिवेदी का जन्म 24 जून 1939 में बांसवाड़ा में श्रीमती श्यामा और डॉ. सेवकरामजी त्रिवेदी के परिवार में हुआ। 1963 में बीएससी एग्रीकल्चर की शिक्षा के साथ पंचायत समिति सागवाड़ा से अपना कैरियर आरंभ कर ब्लाक डेवलपमेंट अधिकारी की जिम्मेदारी निभाई। इसके पश्चात सेंट्रल बैंक आफ इंडिया से एग्रीकल्चर फाइनेंस अधिकारी के रूप में होशंगाबाद में नया कार्यभार संभाला और होशंगाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक के अध्यक्ष के उच्चतम पद को निभाया। पुनः सेंट्रल बैंक की रतलाम, इंदौर, भोपाल शाखाओं में कार्य करते हुए कुकडेश्वर शाखा से 1997 में प्रबंधक के रूप में सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के पश्चात बांसवाड़ा में स्थाई निवास हेतु आयेऔर समाजसेवा में जुट गये। श्री सुखमोहनजी दवे की अध्यक्षता में हाटकेश्वर मंदिर हाल के नव शृंगार का कार्य सम्पन्न करवाया, अगले चुनाव में स्वयं अध्यक्ष निर्वाचित हुए और समाज सुधार का कार्य हाथ में लिया। हाटकेश्वर बचत एवं ऋण समिति में सचिव के रूप में कार्य किया। इसी बीच 30 जून 2001 में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती हीन्दमणि का देहावसान हो गया और अकेले हो गये। उनकी तीनों पुत्रियों मुदीता (बंबई), जया (कोलकाता) और वंदना (इंदौर) उनके लिए चिंतित हो गईं और हमेशा के लिए बांसवाड़ा से अपने पास बुला लिया और पुत्रवत उनकी सेवा की। जय हाटकेश वाणी के संवाददाता की जिम्मेदारी भी स्वयं उठाई, परंतु बांसवाड़ा में नहीं रह पाने के कारण श्रीमती मंजु प्रमोद राय झा को इस कार्य के लिए प्रेरित किया। जय हाटकेशवाणी परिवार बांसवाड़ा बडनगरा नागर मंडल के साथ ही अपनी अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता है। योग और प्राणायाम के लिए समर्पित श्री त्रिवेदी को श्री-श्री रविशंकरजी की आर्ट आफ लिविंग राजस्थान यूनिट ने श्रद्धांजलि के भजन उनके निवास पर उन्हें समर्पित किये। ऊँ शांति शांति शांति...।

चतुर्थ पुण्यतिथि

नीतिशा मेहता

नसीबों के खेल अजीब ही होते हैं और चाहने वालों को आंसू नसीब होते हैं। कौन चाहता है अपनों से दूर होना पर अकसर बिछड़ जाते हैं, जो सबसे करीब होते हैं..

हमारे दिलों में याद बनकर बसने वाली हमारी लाड़ली नीतिशा को हम सब याद करते हैं- पापा ओ.पी. नागर, मम्मी सरला नागर, समस्त नागर परिवार खिलचीपुर, मामा-मामी, बहन श्वेता नागर और नवीता मेहता, छोटी सी बेटी प्रियांशी मेहता

श्रद्धांजलि श्रीमती इंद्रा मिश्रा

भोपाल। डॉ. मोहनलालजी मिश्रा की धर्मपत्नी एवं श्री जयंत मिश्रा, हेमंत मिश्रा की माताजी श्रीमती इंद्रा मिश्रा (80) का देहावसान विगत दिनांक 31 मार्च 2010 को हो गया। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनके देहावसान पर समाजबंधुओं तथा गणमान्य नागरिकों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्रद्धांजलि विपिन मंडलोई

खंडवा। वन विभाग में कार्यरत 50 वर्षीय श्री विपिन विनायक राव मंडलोई का देहावसान 1 अप्रैल को हो गया। 2 तारीख को उनकी अंत्येष्ठि में समाजजनों तथा गणमान्य नागरिकों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

पुण्य स्मरण

स्व. जानकीलाल नागर

पुण्य स्मृति १४ अप्रैल पर सत्य प्रसंग

आस्था और विश्वास हो तो भगवान चमत्कार भी करते हैं

अगर ईश्वर में आस्था और विश्वास हो तो फिर भगवान अपने भक्तों को कभी निराश नहीं करते हैं एवं ऐसा चमत्कार करते हैं कि सारी पीड़ा हर लेते हैं। मेरे पिता श्री स्व. जानकीलालजी नागर के जीवन में भी भगवान ने एक ऐसा ही चमत्कार किया, जिसने हमारे जीवन में उमंग और खुशियों के रंग भर दिए। उन दिनों मेरे पापा अहमदाबाद के रेलवे पोस्ट आफिस में सर्विस करते थे। जब वे नाश्ते के लिए अपने आफिस से बाहर निकले तो वहां पर एक साधु मिले, तो पापा ने उन्हें प्रणाम किया व कहा कि महाराज चलो चाय पीते हैं। महाराज ने भी पापा का आग्रह मान लिया। साधु महाराज काफी पहुंचे हुए लग रहे थे, उन्होंने पापा के माथे पर चिंता की लकीरों को स्पष्ट देख लिया और पूछा बैठे बेटा काफी चिंतित लगते हो। उनका यह पूछना मेरे पापा को सुकून भरा लगा व उन्होंने अपनी चिंता को अपने समक्ष रखते हुए कहा बाबासाब मेरा एक चार साल का लड़का है, मगर वह बोलता नहीं है। उसकी आवाज सुनने के लिए मेरे और परिवार के कान तरस रहे हैं। महाराज ने विनम्रता पूर्वक कहा -सब अच्छा होगा घबराओ मत। अपनी आंखें बंद कर चारों तरफ ध्यान से देखो । पापा ने साधु महाराज से कहा बहुत अद्भुत नजारा दिखाई दिया। वे बोले मैं एक उपाय बताता हूं, जिससे तुम्हारा बेटा बोलने लगेगा। यह सुनकर पापा को ऐसा लगा मानो किसी ने उनकी सारी चिंताएं हर ली हों। वे साधु महाराज से उपाय सुनने के लिए बेचेन हो गए। साधु ने उन्हें उपाय बताते हुए कहा कि सवा महीने तक सुबह-शाम पानी के मटके में एक दीपक लगाना... सब अच्छा होगा। इतना कहकर साधु महाराज वहां से चले गए या कहें कि अदृश्य हो गए। पापा ने उनका उपाय नियमपूर्वक करना शुरू कर यिा। सवा माह भी नहीं बीता था कि मेरा भाई राजेन्द्र बोलने लगा। यह ईश्वर का चमत्कार ही है कि उसने अपने भक्त की पीड़ा दूर की। आज मेरे पापा भले ही इस संसार में नहीं है, मगर उनके साथ हुआ ईश्वरीय चमत्कार हमें आज भी भगवान के प्रति आस्था को प्रगाढ़ करता है। 14 अप्रैल को मेरे पापा का प्रथम पुण्य स्मरण दिवस है। इस दिन को मैं कभी नहीं फूल सकती।

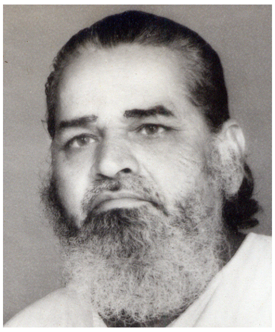

सीमा मनीष शर्मा

मानव का सच्चा जीवन साथी विद्या है

- स्त्री देह चंदन के समान घिसती है। तिल-तिल जलती है तथा परिवार को प्रकाशित करती है। कन्या, कामिनी एवं माँ की विभिन्न भूमिकाएं निभाती है। परिवार का सुख उसी पर निर्भर है। पुरुष का भआग्य भी उसी पर आधारित है।
- जैसा तुम सह नहीं सकते, वैसा किसी के साथ करो मत।
- मानव का सच्चा जीवन साथी विद्या है, जिसके कारण वह विद्वान कहलाता है।
- जिसके पास सत्य है वह अकेला होते हुए भी बहुमत में है।
- मस्तिष्क और पेराशूट में एक महत्वपूर्ण समानता है, वह यह कि दोनों ही खुलने पर काम करते हैं।
- झूठ, पाप कर्ज का बोझ कंधों पर न ले जाएं अन्यथा परलोक में यातनाएं सहनी पड़ती हैं।

मन की सुनें या आत्मा की

प्रेम कोई प्रायोजित कार्यक्रम नहीं जो चाहने से हो जाए, और न चाहने से रुक जाए। यह तो बस होता है, तो हो जाता है और नहीं होता है तो नहीं होता।

प्रेम का इतिहास भी इसबात का गवाह है। बरसाने की छोरी ने नंदके लाल को देखा, नंदके लाल ने बरसाने की छोरी को देखा और प्यार हो गया, ऐतिहासिक प्यार। राधा की जगह तो रुक्मणि भी न ले सकी। हीर-रांझा, लैला-मजनु, शीरी-फरहाद ने चौघड़िया देखकर शुभ मुहुर्त में प्रेम प्रसंग का शुभारंभ नहीं किया था। प्रेम प्रसंग का घटित होना किसी भवन के लिए भूमिपूजन या व्यावसायिक प्रतिष्ठान का शुभारंभ नहीं है। प्रेम का संबंध अगर दिल से हो, तो वह दुनिया के सारे प्रतिबंधों, सारी वर्जनाओं को ध्वस्त कर देता है। प्रेम ही वह तूफान है, जिसमें देश, धर्म, जाति, नस्ल, भाषा परम्परा और संस्कृति के किनारे टूट जाते हैं। प्रेम में सिर्फ प्रेम ही प्रेम होता है। प्रेम करने वाले सिर्फ मन देखते हैं, मन की भाषा समझते हैं, मन की भाषा बोलते हैं। प्रेम में केवल मन को देखने की भावना की अभिव्यक्ति कितने सुंदर ढंग से की गई है, न उम्र की सीमा हो न जन्म का बंधन, जब प्यार करें कोई तो देखे केवल मन। जब प्यार होता है तो वह केवल मन देखते हैं। इतना सब होने के बावजूद चूंकि केवल मन से काम नहीं चलता, जीवन के लिए रोटी-कपड़ा, मकान की अनिवार्यता है। माता-पिता चूंकि संतान का हित एवं सुख चाहते हैं अतः वे मनमानी की इजाजत नहीं देते। प्रेम विवाह असफल होने का बड़ा कारण यह है कि प्रेम के ज्यादातर रिश्ते वास्तविकता के धरातल पर नहीं होते। जबकि माता-पिता जो रिश्ते तय करतेहैं उसमें वे सभी चीजों को महत्व देते हैं। वर्तमान समय में जब पल-पल पर अर्थात पढ़ाई में, कामकाज में लड़के-लड़कियों को साथ रहना पड़ता है ऐसे में आकर्षण भी संभावित है, परंतु मेरे मत में यही उचित है कि ऐसे समय अध्यात्म का सहारा लेना चाहिए जो यह कहता है कि इस संसार में रहो जरूर परंतु माया-मोह में मत पड़ो। केवल अपने तक सोचने के बजाय वृहद सोच रखते हुए अपने माता-पिता, परिवार, समाज सबके बारे में सोचना चाहिए। यह मनुष्य तन बड़ी मुश्किल से हमें प्राप्त होता है तथा इसका सबसे बड़ा सदुपयोग या तो परमात्मा भक्ति है या परोपकार... बाकि सब चीजें हैं बेकार।

संकलन श्रद्धा शर्मा

चंद्रराशि पर आधारित

संतोष व्यास 'देवज्ञ'

माह अप्रैल २०१० का भविष्यफल

मेश राशि- इस माह में सामाजिक कार्यों में अभिरुचि बढ़ सकती है। व्यापार की स्थिति में सुधार होगा। नौकरी में पदोन्नतिके अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। स्त्री, संतान के लिए समय बहुत अच्छा है। स्वजनों से मतभेद बढ़ता रहे, मित्र वर्गों का पूर्ण सहयोग रहेगा।

वृषभ राशि- इस माह में आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। आय-व्यय बराबर रहेगा। पारिवारिक कलह से मन अशांत रहेगा। बुद्धि दोष के कारण कुछ त्रुटियां हो सकती हैं। ससुराल पक्ष से धन प्राप्ति के योग हैं। अभिष्ट फल की प्राप्ति होगी। सूर्य की आराधना, दर्शन अर्घ्य देवें।

मिथुन राशि- आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। राजकीय कठिन प्रयासों से सफलता मिलेगी। किसी नवीन कार्य का श्री गणेश होगा। मास के उत्तरार्द्ध में घरेलू कार्यों में विशेष व्यय की संभावना,स्त्री पीड़ा से आका चित डांवाडोल रहेगा।

कर्क राशि- इस माह में शारीरिक, मानसिक स्थितिठीक रहेगी, परंतु आर्थिक स्थिति डांवाडोल हो सकती है। प्रभाव प्रताप में वृद्धि होगी, सम्मान यथावत बना रहेगा। शत्रुत्व का वर्चस्व बना रहेगा।

सिंह राशि- इस माह में प्रत्यक्ष और गुप्त शत्रुओं से विशेष सावधानी एवं मित्रों का परामर्श विशेष हितकारी होगा। किसी नवीन कार्य करने का आप विचार न करें। बंधुजनों से मनमुटाव हो सकता है। स्त्री के कष्ट निवारण से आपको प्रसन्नता होगी। संतान सुख रहेगा।

कन्या राशि- इस माह में आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। प्रचुर द्रव्य की प्राप्ति से हर्ष होगा। यश-पराक्रम में वृद्धि होगी। मासांत में साधारण चोट-चपेट से भीषण कष्ट उत्पन्न हो सकता है। स्वजनों से विरोध भी संभव है। भगवान शिवजी की आराधना, पूजन, अभिषेक से आपकी रुकी इच्छायें पूर्ण होंगी।

तुला राशि- इस माह में आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा, परंतु गृह कलह के कारण मानसिक संतुलन एक दम बिगड़ सकता है। दुष्ट शत्रु के कुचक्र से बचें। धार्मिक विचारों से आत्मबल बढ़ेगा। विरोधियों को विखण्डवाद से परास्त करने में सफल होंगे।

वृश्चिक- इस माह में हित चिंतक व मित्रों से पूर्ण सहयोग से अपने सभी कार्यों में सफल होंगे। सामाजिक मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। लंबी यात्रा के योग हैं। शारीरिक स्वस्थ्य ठीक रहेगा। आर्थिक स्थिति के सुदृढ़ होने के योग हैं। हनुमानजी की आराधना करें।

धनु राशि- इस मास में मानसिक तनाव के कारण सही निर्णय लेने में असमर्थता होगी। बंधुजनों से अच्छा सहयोग प्राप्त होगा। व्यापारिक लेन-देन से उचित लाभ नहीं मिलेगा। व्यय की अधिकता के कारण चिंताग्रस्त बने रह सकते हैं। पुराना मित्र आपका सहयोग कर सकता है।

मकर राशि- सामाजिक प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि होगी। आत्मबल, प्रबल होगा। संतान के द्वारा सहयोग अच्छा रहेगा। धार्मिक व मांगलिक कार्यक्रमों में भाग लेने का सुअवसर प्राप्त होगा। साझेदारी के कामों में सावधानी बरतना परम आवश्यक है। लेनदेन के मामले में भी सतर्क रहें।

कुंभ राशि-इस मास में मनोरथ सिद्धि की प्राप्ति होगी। सामाजिक, राजनीतिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पदोन्नति में रुकावट आ सकती है। धन हानि व दुर्घटना योग है, सतर्क रहें। मनोरंजन का सुखद समाचार प्राप्त होगा। मौसम परिवर्तन के कारण स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा।

मीन राशि- इस मास में स्थानांतरण से आपकी परेशानी बढ़ सकती है। अच्छे लाभ के योग बनेंगे। अधिक श्रम और समय भी लग सकता है। उच्चाधिकारियों से तालमेल बनाये रखें। क्योंकि यह मास अधिक उलझन पूर्ण है। राजनीतिक परिचर्चा में आप कम भाग लेवें। विरोधी ईर्ष्या कर सकते हैं।

पुराण और कल्कि अवतार एक परिचय

पुराण का अर्थ है - प्राचीन आख्यान। किंतु पुराणों में पुराने राज-वंशों का इतिहास, या विशेष व्यक्तियों का उल्लेख भर नहीं है। उनमें पंच महाभूतों की सृष्टि, चराचर का निर्माण, विभिन्न मन्वन्तरों की चर्चा भी है। कुछ गेय हैं। कुछ में गद्य-पद्य का मिश्रण है। शतपथ ब्राह्मण में पुराण को वेद की संज्ञा दी गई है। पुराणं वेदं। पुराणों में उनकी परिभाषा देते हुए कहा गया है कि जिन ग्रंथों में सर्ग या सृष्टि का विज्ञान, प्रतिसर्ग या संसार के विस्तार तथा प्रलय, वंशावली, विभिन्न मनुओं का समय, राज वंशों के अतिरिक्त मुख्य घटनाओं का उल्लेख हो, उन्हें पुराण कहा गया है। भगवत में पुराण के 10 लक्षणों में रक्षा या विभिन्न अवतार तथा विसर्ग या जीव सृष्टि को भी सम्मिलित किया गया है। (भागवत 12-7-9) । पुराणों के प्रभाव से संस्कार की रचनाएं अछूती नहीं है। उनमें राजनीति, कूटनीति ही नहीं, संगीत, वास्तु, वृक्ष विज्ञान तथा नाना कलाओं का भी वर्णन है। उनमें पथ और भवन निर्माण का भी विवरण है। उनमें सहानुभूति, करुणा परोपकार के भाव हैं। वृक्ष पूजा, सरोवर, सरिता आदिके उल्लेख से देश के प्रति लगाव उत्पन्न कर राष्ट्रीय भाव उपजाया है।

महाभारत में अठारह पुराणों के उल्लेख से स्पष्ट है, पुराण उनके पूर्व भी अस्तित्व में रहे होंगे। देवी भागवत में लिखा है- समय-समय पर व्यासजी ने उनका सम्पादन किया। 18 पुराणों में 3,95,1-00 श्लोक हैं।

अतीतास्तु तथा व्यासाः सप्तविंशतिरेव च।
पुराणसंहितास्ते तु कथितास्तु युगे युगे।। 1-3-34

28 बार इन महापुराणों के सम्पादन के बाद जो बचे वे उपपुराण कहाये। 18 पुराण हैं- ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव या वायु, श्री मदभागवत, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वराह, स्कन्द, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरूढ़, ब्रह्मांड,

उपपुराण भी 18 हैं- भागवत, माहेश्वर, ब्रह्माण्ड, आदित्य, पाराशर,सौर, नन्दकेश्वर, साम्बा, कालिका, वरुण, उपनस, मानव, कापिल, दुर्वासस, शिवधर्म, ब्रहन्नारदीय, नारसिंह, सनत्कुमार। इनमें अनेक अप्राप्त या अपूर्ण हैं। महाभारत का अखिल पर्व हरिवंश पुराण कहा गया है।

कल्कि अवतार-कल्कि के साथ कलि जुड़ा है। माघी पूर्णिमा शुक्रवार 3101 ईसा पूर्व कलि का जन्म हुआ। रूपकात्मक परिवार कथा है। क्रोध पिता, हिंसा माँ है। कल्किः का विवरण कल्कि पुराण या अनु भागवत में है। चैत्र शुक्ल द्वादशी को उड़ीसा के सम्भलपुर में विष्णुयश ब्राह्मण के घर सुमति के गर्भ से कल्कि का जन्म होगा। चार भाई होंगे। सिंहल-वासी बृहद्रथ के यहां उत्पन्न पद्मा पत्नी होगी। परशुराम शिक्षा देंगे। शिव देवत्त अश्व, सर्वज्ञ शउक और देवदत्त असि देंगे। फिर चारों भाई शांतनु और रघुवंशी मरु मिला, अश्वमेध तथा दुष्ट हनन करेंगे। प्रलय होगा और सतयुग का आरंभ

प्रो. ऋषिकुमार शर्मा,
खंडवा (म.प्र.)

गणगौर पूजन : फूल पाति महोत्सव

संकलन सत्येश नागर

हमारे देश भारत के लोग जीवटता के साथ विविधता में एकता लिए हुए हर्षोल्लासपूर्ण त्योहारों को मनाते हुए आनंदपूर्वक जीवन जीने के आदी हैं, तभी तो साल के 365 दिनों में पूरे देश में सैकड़ों व्रत-त्योहारों, मेलों-उत्सवों, जात्राओं-यात्राओं आदि का उल्लासमय आयोजन होता ही रहता है। इसी प्रकार के एक व्रत को हमारे मध्य भारत, राजस्थान व गुजरात के कुछ क्षेत्रों में त्योहार के रूप में मनाया जाता है, जिसमें अविवाहित बालाएं-युवतियां व महिलाएं प्रसन्नतापूर्वक भाग लेती है, व्रत रखती हैं व भगवान गौरीशंकर का पूजन-अर्चन कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। यह है गणगौर-पूजन, जिसे लगभग 16-17 दिनों तक फूल-पाति महोत्सव के रूप में मनाया जाता है।

प्रतिवर्ष यह त्योहार चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल तृतीया तक मनाया जाता है। इसमें अविवाहित बालाएं-युवतियां व जिनका विवाह हुए एक वर्ष न हुआ हो ऐसी महिलाएं भाग लेती हैं। वे सभी अपने-अपने समाज (जाति) के लिए निर्धारित स्थान पर प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर, पूजन-सामग्री के साथ वहां जाती हैं व गणगौर (भगवान गौरी-शंकर) का पूजन-अर्चन करती हैं। अविवाहित बालाएं-युवतियां उनसे अपने लिए सुयोग्य वर की व विवाहित अखंड सौभाग्य की याचनाएं करती हैं। 8 दिन एक समय भजन करती हैं। उन्हें विश्वास होता है कि गणगौर उनकी प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करेंगे। अपरान्ह में उसी निर्धारित स्थान से पूजनोपरांत बैंड-बाजों, ढोल-ढमाकों के साथ फूल–पाति की शोभायात्रा सह विवाहित युवती व समाज की पंचायत कीओर से निकाली जाती है। इसमें अविवाहित बालाएं व युवतियां सिर पर कलश रखकर जिसमें जल-पत्तियां, फूल-अबीर गुलाल-हल्दी, कुंकू आदि होते हैं, लेकर चलती हैं। छोटी-छोटी बच्चियों को वर-वधू के रूप में सजाया जाता है, जो शोभायात्रा का आकर्षण होता है। इसमें युवतियां व महिलाएं गणगौर से संबंधित विभिन्न गीत गाते हुए चलती हैं-

माथा ने पेमंद लाओ, रखड़ी रतन जड़ाओ जी
भंवर म्हारे खेलन दो गणगौर।
खेलन दो गणगौर, भंवर म्हारे पूजन दो गणगौर।
म्हारी ऊबी सहेलियां बाट जोवे, म्हने पूजन दो गणगौर।

भंवर म्हारे, खेलन दो गणगौर आदि आदि।

यहां अधिकांश व्रत, त्योहार के पीछे कोई कथा होती है। गणगौर से भी संबंधित कथा प्रौढ़-वृद्ध महिलाएं इस प्रकार कहती हैं- भगवान शिव एवं गौरी एक बार पृथ्वी लोक में भ्रमण करने आये वे चलते-चलते एक सरोवर के तट पर पहुंचे, जहां बहुत सारी स्त्रियां 'गणगौर का पूजन कर रही थी। उन्होंने अकस्मात जब गौरी-शंकर को देखा तो वे गदगद हो गई व उन्होंने अपने व्रत को सफल माना व वहीं सरोवर के तटपर साक्षात भगवान शंकर व पार्वती (गणगौर) की पूजा-अर्चना की व अपने लिए सौभाग्य की याचना की। भगवन गौरी-शंकर ने कहा कि अब समय अधिक हो गया है, आप लोग अपने-अपने घरों को जाइए व कल प्रातः पुनः यहां आना तुम्हें तुम्हारी इच्छित वरदान प्राप्त होगा।

प्रातः जैसे नगर में यह बात फैली कि भगवान गौरीशंकर स्वयं सौभाग्य देने वाले हैं, किसान-मजदूर, गरीब व निम्न वर्ग की स्त्रियां सरोवर की ओर दौड़ पड़ीं। भगवान शिव ने कुम्हार के यहां से एक बड़ा सा मिट्टी का पात्र मांगकर उसमें सरोवर का जल भरा व फूल-पत्ते, हल्दी-कुंकू आदि सुआसित वस्तुएं उसमें डाली। साथ ही स्वर्ग से अमृत मंगाकर उसमें डाला। माता पार्वती ने वह जल सभी युवतियां-महिलाओं पर छिड़ककर उन्हें मनचाहा सौभाग्य प्रदान किया। अमीर, सम्पन्न व उच्चवर्ग की बालाएं, युवतियां व स्त्रियां नित्यकर्म स्नानादि से निवृत्त होकर कई प्रकार के पकवान बनाकर सज-संवरकर सोने-चांदी के थाल में पूजन-सामग्री व गणगौर को भोग लगाने हेतु भोजन सामग्री लेकर सरोवर तट पर पहुंची, तब तक बड़ी देर हो चुकी थी। भगवान शिव ने जब दूर से ढोल-ढमाके व स्त्रियों के गाने की आवाज सुनी तो वे समझ गये व पार्वतीजी से कहा कि अमृतमय सौभाग्य तो तुमने सभी बांट दिया, अब जो सौभाग्य कांक्षणियां आ रही हैं, उन्हें क्या दोगी? भागवती पार्वती ने कहा कि मैंने इन्हें तो द्रव्यों से निर्मित सुहाग दिया है। किंतु अब जो श्रद्धा भाव से आ रही हैं, उन्हें मैं अपने रक्त से सिंचित सुहाग दूंगी। उन्होंने वही किया, अपने दाहिने हाथ की कनिष्ठिका में चीरा लगाकर उन्हें प्रवाहित परम सौभाग्यशाली रक्त की छींटे उन सौभाग्य कांक्षिणियों पर डाले व उन्हें इच्छित सौभाग्य प्रदान किया।

पश्चात गौरीशंकर ने आगे प्रस्थान किया। मार्ग में उन्हें एक प्रसवपीड़ा से पीड़ित घोड़ी मिली व उसके आगे चलने पर उन्हें प्रसव पीड़ित गाय मिली। माता पार्वती उन दोनों को देखकर द्रवित व चिंतित हो गईं हो उठीं। फिर वे एक राजा की नगरी में पहुंचे, जहां उन्होंने देखा कि पूरे नगर के लोग उदास व चिंतित हैं, हर कोई अपनी रानी का जीवन बचाने की ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है। पार्वतीजी ने भगवान शंकर से इसका कारण जानना चाहा तब शिवशंकर ने कहा कि यहां के लोकप्रिय राजा की पत्नी को प्रसव हो रहा है, किंतु उनकी स्थिति ठीक नहीं है। कई दायियां व वैद्यों को बुलवाया गया है, फिर भी रानी के प्राण संकट में हैं। यह सुनते ही माता पार्वती घबरा गई व भगवान शंकर से बोलीं कि मैं कभी माता बनना नहीं चाहती, आप मुझे ऐसी गांठ लगा दीजिए, जिससे मुझे कभी बच्चा न हो। भगवान शंकर ने उन्हें शांत किया सांत्वना दी व कहा कि आप शांति से विचार कर लें, अपने कैलाश पहुंचकर जैसा आप कहोगी वैसा ही करेंगे। बाद में भगवान शिव पुनः उन्हें उसी रास्ते पर लाये, जिससे होकर आये थे। उस रास्ते में पार्वतीजी ने पुनः देखा कि पूर्व में प्रसव पीड़ा से तड़पती घोडी व गाय अब अच्छी हैं, अपने बछड़ों को स्नेह व प्यार से चाट रही हैं। बछड़े भी मां का दुलार पाकर आनंदित हैं। आगे पुनः उक्त राजा की नगरी में पहुंचे, उन्होंने देखा कि पूरा नगर आनंद से झूम रहा है। चारों ओर बाजों-गाजों, ढोल-नगाड़ों का कोलाहल है। लोग , स्त्रि-पुरुष नाच गा रहे हैं। पूरे नगर को दुल्हन की तरह सजाया गया है। स्थान-स्थान पर मिठाइयां बांटी जा रही हैं। चारों ओर हर्ष व उल्हास का वातावरण बना हुआ है। पार्वतीजी ने नगर के एक, दो लोगों से कारण पूछा तो ज्ञात हुआ कि यहां की रानी को पुत्र रत्न पैदा हुआ है। इससे पार्वतीजी को भी प्रसन्नता हुई। पृथ्वी का भ्रमण कर गौरीशंकर पुनः कैलाश पधारे। एक, दो दिन आराम करने के पश्चत भोलेनाथ ने माता पार्वती से कहा कि तुम बच्चा न हो इसके लिए गांठ लगाने का कह रही थी, उस विषय में क्या विचार किया? तब पार्वतीजी ने कहा कि अब तो मैं मातृ सुख की अभिलाषी हूं। भगवान शिव ने उन्हें भी गणगौर व्रत करने के लिए कहा। उन्होंने विधि-विधान से उक्त व्रत किया व कालान्तर में उनके श्री गणेश व श्री कार्तिकेय नामक दो मातृ-पितृ भक्त, आज्ञाकारी, सर्वगुण सम्पन्न पुत्र0 हुए, जिनकी कथा सर्वविदित है।

सौजन्य-शांति देवी पलोड़